श्रीमद् राजचन्द्र
प्रणीत

तत्त्वज्ञान

भाषी

प्रकाशक
मनुभाई भ. मोदी, अध्यक्ष
श्रीमद् राजचन्द्र आश्रम,
स्टेशन अगास, वाया आणंद
पोस्ट बोरिया–३८८१३ (गुजरात)

चौथी आवृत्ति
प्रत ३२००
विक्रम सवत् २०४२
ईस्वी सन् १९८६

मुद्रक
वर्द्धमान मुद्रणालय
वाराणसी–२२१००१

ॐ

अहो सत्पुरुषना वचनामृत, मुद्रा अने सत्समागम !
सुषुप्त चेतनने जागृत करनार,
पडती वृत्तिने स्थिर राखनार,
दर्शनमात्रथी पण निर्दोष,
अपूर्व स्वभावने प्रेरक,
स्वरूप प्रतीति, अप्रमत्त सयम अने
पूर्ण वीतराग निर्विकल्प स्वभावना कारणभूत,–
छेल्ले अयोगी स्वभाव प्रगट करी
अनत अव्याबाध स्वरूपमा
स्थिति करावनार !
त्रिकाळ जयवत वर्तो !
ॐ शाति शाति शाति

—श्रीमद् राजचद्र

अनुक्रमणिका

गद्य विभाग —

पद्य विभाग —

श्रीमद् राजचंद्र प्रणीत

तत्वज्ञान

भाषी



(१)

ॐ

पुष्पमाळा

रात्रि व्यतिक्रमी गई प्रभात थयु, निद्राथी मुक्त थया भावनिद्रा टळवानो प्रयत्न करजो

व्यतीत रात्रि अने गई जिंदगी पर दृष्टि फेरवी जाओ सफळ थयेला वखतने माटे आनंद मानो, अने आजनो दिवस पण सफळ करो निष्फळ थयेला दिवसने माटे पश्चात्ताप करी निष्फळता विस्मृत करो

४ क्षण क्षण जतां अनतकाळ व्यतीत थयो, छ्ता सिद्धि थई नही.

५ सफळजन्य एक्के वनाव तारायी जो न वन्यो होय तो फरी फरीने शरमा

६ अघटित कृत्यो थया होय तो शरमाईने मन, वचन, कायाना योगथी ते न करवानी प्रतिज्ञा ले

७ जो तुं स्वतत्र होय तो संसारसमागमे तारा आजना दिवमना नीचे प्रमाणे भाग पाड :—

(१) १ प्रहर—भक्तिकर्त्तव्य

(२) १ प्रहर—धर्मकर्तव्य.

(३) १ प्रहर—आहारप्रयोजन

(४) १ प्रहर—विद्याप्रयोजन

(५) २ प्रहर—निद्रा.

(६) २ प्रहर—ससारप्रयोजन.

८ प्रहर

८ जो तुं त्यागी होय तो त्वचा वगरनी वनितानु स्वरूप विचारीने ससार भणी दृष्टि करजे.

९ जो तने धर्मनुं अस्तित्व अनुकूळ न आवतुं होय तो नीचे कहु छु ते विचारी जजे :—

(१) तु जे स्थिति भोगवे छे ते शा प्रमाणथी ?

(२) आवती काल्ना वात शा माटे जाणी शकतो नथी ?

(३) तु जे इच्छे छे ते शा माटे मळतु नथी ?

(४) चित्रविचित्रतानु प्रयोजन शु छे ?

१० जो तने अस्तित्व प्रमाणभूत लागतु होय अने तेना मूळतत्त्वनी आशका होय तो नीचे कहु छु —

११ सव प्राणीमा समदृष्टि —

१२ किंवा कोई प्राणीने जीवितरहित करवा नही, गजा उपरात तेनाथी काम लेवु नही

१३ किंवा सत्पुरुषो जे रस्ते चाल्या ते

१४ मूळतत्त्वमा क्याय भेद नथी, मात्र दृष्टिमा भेद छे एम गणी आशय समजी पवित्र धर्ममा प्रवर्तन करजे

१५ तु गमे ते धर्म मानतो होय तेनो मने पक्षपात नथी, मात्र कहेवानु तात्पर्य के जे राहथी ससारमळ नाश थाय ते भक्ति, ते धर्म अने ते सदाचारने तु सेवजे

१६ गमे तेटला परतत्र हो तोपण मनथी पवित्रताने विस्मरण कर्या वगर आजनो दिवस रमणीय करजे

१७ आजे जो तु दुष्टतमा दोरातो हो तो मरणने स्मर
१८ तारा दुःखमुखना बनावोमां नोध आजे कोईने दुःख आपवा तत्पर थाय तो स्भारी जा.
१९ राजा हो के रंक हो—गमे ते हो, परन्तु आ विचार विचारी सदाचार भणी आवजो के आ कायाना पुद्गल थोडा वखतने माटे मात्र साडा त्रण हाथ भूमि मागनार छे.
२० तु राजा हो तो फिकर नही, पण प्रमाद न कर, कारण नीचमा नीच, अधममा अधम, व्यभिचारनो, गर्भपातनो, निर्वंशनो, चण्डालनो, कसाईनो अने वेश्यानो, एवो कण तु खाय छे तो पछी ?
२१ प्रजाना दुःख, अन्याय, कर एने तपासी जई आजे ओछा कर तु पण हे राजा ! काळने घेर आवेलो परूणो छे
२२ वकील हो तो एथी अर्धा विचारने मनन करी जजे
२३ श्रीमंत हो तो पैसाना उपयोगने विचारजे रळवानु कारण आजे शोधीने कहेजे
२४ धान्यादिकमा व्यापारथी थती असख्य हिंसा संभारी न्यायसंपन्न व्यापारमां आजे तारु चित्त खेंच.

२५ जो तु कसाइ होय तो तारा जीवना सुखनो विचार करी आजना दिवसमा प्रवेश कर

२६ जो तु समजणो बाळक होय तो विद्या भणी अने आज्ञा भणी दृष्टि कर

२७ जो तु युवान होय तो उद्यम अने ब्रह्मचर्य भणी दृष्टि कर

२८ जो तु वृद्ध होय तो मोत भणी दृष्टि करी आजना दिवसमा प्रवेश कर

२९ जो तु स्त्री होय तो तारा पति प्रत्येनी धर्मकरणीने संभार,—दोष थया होय तेनी क्षमा याच अने कुटुंब भणी दृष्टि कर

३० जो तु कवि होय तो असंभवित प्रशंसाने संभारी जई आजना दिवसमा प्रवेश कर

३१ जो तु कृपण होय तो,—

३२ जो तु अमलमस्त होय तो नेपोलियन बोनापार्टने बन्ने स्थितिथी स्मरण कर

३३ गई काले कोई कृत्य अपूर्ण रह्यु होय तो पूर्ण करवानो सुविचार करी आजना दिवसमा प्रवेश कर

३४ आजे कोई कृत्यनो आरंभ करवा धारतो हो तो विवेकथी समय, शक्ति अने परिणामने विचारी आजना दिवसमा प्रवेश कर

३५ पण मूर्खना पाप छे, जोता मेर छे, अने माथे मरण रह्युं छे, ए विचारी आजना दिवसमा प्रवेश कर

३६ अयोग्य कर्म करवामा आवे तारे परतु होय तो राजपुत्र हो तो पण निशाचरी मान्य करी आजना दिवसमा प्रवेश करजे.

३७ भाग्यशाली हो तो तेना आनदमा बीजाने भाग्यशाली करजे, परंतु दुर्भाग्यशाली हो तो अन्यनुं बूरु करता रोकाई आजना दिवसमा प्रवेश करजे

३८ धर्माचार्य हो तो तारा अनाचार भणी कटाक्षदृष्टि करी आजना दिवसमा प्रवेश करजे

३९ अनुचर हो तो प्रियमा प्रिय एवा शरीरना निभावनार तारा अधिराजनी निमकहलाली इच्छी आजना दिवसमा प्रवेश करजे

४० दुराचारी हो तो तारी आरोग्यता, भय, परतन्त्रता, स्थिति अने सुख एनं विचारी आजना दिवसमा प्रवेश करजे.

४१ दुःखी हो तो (आजनी) आजीविका जेटली आशा राखी आजना दिवसमा प्रवेश करजे

४२ धर्मकरणीनो अवश्य वखत मेळवी आजनी व्यवहार-सिद्धिमा तु प्रवेश करजे

४३ कदापि प्रथम प्रवेशे अनुकूळता न होय तो पण रोज जता दिवसनु स्वरूप विचारी आजे गमे त्यारे पण ते पवित्र वस्तुनु मनन करजे

४४ आहार, विहार, निहार ए सबधीनी तारी प्रक्रिया तपासी आजना दिवसमा प्रवेश करजे

४५ तु कारीगर हो तो आळस अने शक्तिना गेरउपयोगनो विचार करी जई आजना दिवसमा प्रवेश करजे

४६ तु गमे ते धधार्थी हो, परतु आजीविकार्थे अन्याय-सपन्न द्रव्य उपाजन करीश नही

४७ ए स्मृति ग्रहण कर्या पछी शौचक्रियायुक्त थई भगवद्भक्तिमा लीन थई क्षमापना याच

४८ ससारप्रयोजनमा जो तु तारा हितने अर्थे अमुक समुदायनु अहित करी नाखतो हो तो अटकजे

४९ जुलमीने, कामीने, अनाडीने उत्तेजन आपतो हो तो अटकजे

५० ओछामा ओछो पण अर्ध प्रहर धर्मकर्तव्य अने विद्या-
संपत्तिमा ग्राह्य करजे.

५१ जिंदगी टूकी छे, अने जंजाळ लांबी छे, माटे जंजाळ
टूंकी कर तो सुखरूपे जिंदगी लांबी लागशे.

५२ स्त्री, पुत्र, कुटुंब, लक्ष्मी इत्यादि बधा सुख तारे घेर
होय तोपण ए सुखमा गौणताए दुःख रह्युं छे एम
गणी आजना दिवसमा प्रवेश कर

५३ पवित्रतानु मूळ सदाचार छे.

५४ मन दोरंगी थई जतु जाळववाने,—

५५ वचन शांत, मधुर, कोमळ, सत्य अने शौच बोलवानी
सामान्य प्रतिज्ञा लई आजना दिवसमां प्रवेश करजे.

५६ काया मळमूत्रनुं अस्तित्व छे, ते माटे 'हु आ शु
अयोग्य प्रयोजन करी आनंद मानुं छु ?' एम आजे
विचारजे.

५७ तारे हाथे कोईनी आजीविका आजे तूटवानी होय तो,—

५८ आहारक्रियामा हवे ते प्रवेश कर्यो मिताहारी अकबर
सर्वोत्तम बादशाह गणायो.

५९ जो आजे दिवसे तने सूवानु मन थाय, तो ते वखते ईश्वरभक्तिपरायण थजे, के सत्शास्त्रनो लाभ लई लेजे

६० हु समजु छु के एम थवु दुघट छे, तो पण अभ्यास सवनो उपाय छ

६१ चाल्यु आवतु वैर आजे निर्मूळ कराय तो उत्तम, नही तो तेनी सावचती राखजे

६२ तेम नवु वैर वधारीश नही, कारण वैर करी केटला काळनु सुख भोगववु छे ए विचार तत्त्वज्ञानीओ करे छे

६३ महारभी, हिंसायुक्त व्यापारमा आजे पडवु पडतु होय तो अटकजे

६४ वहोळी लक्ष्मी मळता छता आजे अन्यायथी कोईनो जाव जतो होय तो अटकजे

६५ वखत अमूल्य छे ए वात विचारो आजना दिवसनी २,१६००० विपळनो उपयोग करजे

६६ वास्तविक सुख मात्र विरागमा छे माटे जजाळ मोहिनीथी आजे अभ्यतरमोहिनी वधारीश नही

६७ नवरानो दिवस होय तो आगळ कहेली स्वतंत्रता प्रमाणे चालजे

६८ कोई प्रकारनी निष्पापी गम्मत किंवा अन्य कई निष्पापी साधन आजनी आनंदनीयताने माटे शोधजे.

६९ सुयोजक कृत्य करवामा दोरायु होय तो विलंब करवानो आजनो दिवस नथी, कारण आज जेवो मंगळदायक दिवस बीजो नथी

७० अधिकारी हो तो पण प्रजाहित भूलीश नहो, कारण जेनुं (राजानु) तु लूण खाय छे, ते पण प्रजाना मानीता नोकर छे.

७१ व्यावहारिक प्रयोजनमा पण उपयोगपूर्वक विवेकी रहेवानी सत्प्रतिज्ञा मानी आजना दिवसमा वर्तजे.

७२ सायंकाळ थया पछी विशेष शान्ति लेजे

७३ आजना दिवसमा आटली वस्तुने बाध न अणाय तो ज वास्तविक विचक्षणता गणाय

(१) आरोग्यता (२) महत्ता
(३) पवित्रता. (४) फरज

७४ जो आजे ताराथी कोई महान काम थतु होय तो तारा सर्व सुखनो भोग पण आपी देजे.

७५ करज ए नीच रज (क + रज) छे करज ए गमना हाथथी नीपजेली वस्तु छे, (कर + ज) कर ए राक्षसी राजानो जुलमी कर उघरावनार छे ए होय तो आजे उतारजे, अने नवु करता अटकजे

७६ दिवस सवधी कृत्यना गणितभाव हवे जोई जा

७७ सवारे स्मृति आपी छे छता कई अयोग्य थयु होय तो पश्चात्ताप कर अने शिक्षा ले

७८ कई परोपकार दान, लाभ के अन्यनु हित करीने आव्यो हो तो आनद मान, निरभिमानी रहे

७९ जाणता अजाणता पण विपरीत थयु होय तो हवे ते माटे अटकजे

८० व्यवहारना नियम राखजे अने नवराशे ससारनी निवृत्ति शोधजे

८१ आज जेवो उत्तम दिवस भोगव्यो, तवी तारी जिंदगी भोगववाने माटे तु आनदित था तो ज आ०—

८२ आज जे पळे तु मारी मया मनन कर छे, ते ज तारु आयुष्य समजी सद्वृत्तिमा दोराजे

८३ सत्पुरुष विदुरना कह्या प्रमाणे आजे एवु कृत्य करजे के रात्रे सुखे सुवाय

८४ आजनो दिवस सोनेरी छे, पवित्र छे, कृतकृत्य थवारूप छे, एम सत्पुरुषोए कह्यु छे, माटे मान्य कर.

८५ जेम बने तेम आजना दिवस संबंधी, स्वपत्नी संबंधी पण विषयासक्त ओछो रहेजे.

८६ आत्मिक अने शारीरिक शक्तिनी दिव्यतानु ते मूळ छे, ए ज्ञानीओनु अनुभवसिद्ध वचन छे

८७ तमाकु सूघवा जेवु नानु व्यसन पण होय तो आजे पूर्ण कर –(०) नवीन व्यसन करता अटक

८८ देश, काळ, मित्र ए सघळानो विचार सर्व मनुष्ये आ प्रभातमा स्वशक्ति समान करवो उचित छे.

८९ आजे केटला सत्पुरुषोनो समागम थयो, आजे वास्तविक आनदस्वरूप शु थयु ? ए चिंतवन विरला पुरुषो करे छे

९० आजे तुं गमे तेवा भयकर पण उत्तम कृत्यमा तत्पर हो तो नाहिम्मत थईश नही.

९१ शुद्ध सच्चिदानद, करुणामय परमेश्वरनी भक्ति ए आजना तारा सत्कृत्यनु जीवन छे

९२ तारु, तारा कुटुम्बनु, मित्रनु, पुत्रनु, पत्नीनु, माता पितानु, गुरुनु, विद्वानु, सत्पुरुषनु यथाशक्ति हित, सन्मान, विनय लाभनु कर्तव्य थयु होय तो आजना दिवसनी त सुगधी छे

९३ जेने घेर आ दिवस क्लेश वगरनो, स्वच्छतायी, शौचतायी, मपयी संतोषयी, सौम्यतायी, स्नेहथी, सम्यतायी, सुखयी जशे तने घेर पवित्रतानो वास छे

९४ कुशल अने कह्यागरा पुत्रो, आज्ञावलवनी धर्मयुक्त अनुचरो सद्गुणी सुदरी, सपील कुटुम्ब, सत्पुरुप जेवी पोताना दशा जे पुरुपनी हशे तेनो आजनो दिवस आपणे सघळाने वदनीय छ

९५ ए सर्व लक्षणसयुक्त थवा ज पुरुप विचक्षणतायी प्रयत्न करे छे तेनो दिवस आपणने माननीय छे

९६ एथी प्रतिमाववाल वर्तन ज्या मची रह्यु छे ते घर आपणी कटाक्षदृष्टिना रखा छे

९७ भले तारी आजीविका जेटलु तु प्राप्त करतो हो, परतु निरुपाधिमय होय तो उपाधिमय पेलु राजनुत्व इच्छी तारो आजनो दिवस अपवित्र करीश नही.

९८ कोईए तने कडवु कथन कह्यु होय ते वखतमा सहन-शीलता—निरुपयोगी पण,

९९ दिवसनी भूल माटे रात्रे हसजे, परतु तेवुं हसवु फरीथी न थाय ते लक्षित राखजे.

१०० आजे कई बुद्धिप्रभाव वधार्यो होय, आत्मिक शक्ति उजवाळी होय, पवित्र कृत्यनी वृद्धि करी होय तो ते,—

१०१ अयोग्य रीते आजे तारी कोई शक्तिनो उपयोग करीश नही,—मर्यादालोपनथी करवो पडे तो पापभीरु रहेजे

१०२ सरळता ए धर्मनु बीजस्वरूप छे. प्रज्ञाए करी सरळता सेवाई होय तो आजनो दिवस सर्वोत्तम छे.

१०३ बाई, राजपत्नी हो के दीनजनपत्नी हो, परंतु मने तेनी कई दरकार नथी मर्यादाथी वर्तती मे तो शु पण पवित्र ज्ञानीओए प्रशसी छे.

१०४ सद्गुणथी करीने जो तमारा उपर जगतना प्रशस्त मोह हशे तो हे बाई, तमने हु वन्न करु छु

१०५ बहुमान, नम्रभाव, विशुद्ध अत करणथी परमात्माना गुण सबधी चितवन, श्रवण, मनन, कीर्तन, पूजा, अर्चा ए ज्ञानीपुरुषोए वखाण्या छे, माटे आजनो दिवस शोभावजो

१०६ सत्‌शील्वान सुखी छे दुराचारी दु खी छे ए वात जो मान्य न होय तो अत्यारथी तमे लक्ष राखी ते वात विचारी जुओ

१०७ आ सघळानो सहेलो उपाय आजे कही दउ छु के दोषने ओळखी दोषने टाळवा

१०८ लाबी टूकी के क्रमानुक्रम गमे त स्वरूपे आ मारी कहेली, पवित्रताना पुष्पोथी छवायेली माळा प्रभातना वखतमा, सायकाळे अने अन्य अनुकूल निवृत्तिए विचारवाथी मगळदायक थशे विशेष शु कहु ?



(२)

महानीति

१ सत्य पण करुणामय बोलवु.

२ निर्दोष स्थिति राखवी.

३ वैरागी हृदय राखवुं.

४ दर्शन पण वैरागी राखवु.

५ डुंगरनी तळेटीमा वधारे योग साधवो

६ बार दिवस पत्नीसंग त्यागवो

७ आहार, विहार, आळस निद्रा इ० ने वश करवा.

८ संसारनी उपाधिथी जेम बने तेम विरक्त थवुं.

९ सर्व-संगउपाधि त्यागवी

१० गृहस्थाश्रम विवेकी करवो.

११ तत्त्वधर्म सर्वज्ञतावडे प्रणीत करवो

१२ वैराग्य अने गंभीरभावथी बेसवु.

१३ सघळी स्थिति तेमज.

१४ विवेकी, विनयी अने प्रिय पण मर्यादित बोलवु.

१५ साहस कर्तव्य पहेला विचार राखवो.

१६ प्रत्येक प्रकारथी प्रमादने दूर करवो.

१७ सघळु कर्तव्य नियमित ज राखवु
१८ शुक्ल भावथी मनुष्यनु मन हरण करवु
१९ शिर जता पण प्रतिज्ञा भग न करवी
२० मन, वचन अने कायाना योग वडे परपत्नी त्याग
२१ वेश्या, कुमारी, विधवानो तेमज त्याग
२२ मन, वचन, काया अविचारे वापरु नही
२३ निरीक्षण करु नहीं
२४ हावभावथी मोह पामु नही
२५ वातचीत करु नही
२६ एकाते रहु नही
२७ स्तुति करु नही
२८ चितवन करु नही
२९ श्रृगार वाचु नही
३० विशेष प्रसाद लउ नही
३१ स्वादिष्ट भोजन लउ नही
३२ सुगधी द्रव्य वापरु नही
३३ स्नान मजन करु नही
३४
३५ काम विषयने शल्यित भावे याचु नही

३६ वीर्यनो व्याघात करु नही.
३७ वघारे जळपान करु नही
३८ कटाक्ष दृष्टिथी स्त्रीने नीरखु नही.
३९ हसीने वात करु नही. (स्त्रीथी)
४० शृंगारी वस्त्र नीरखु नही.
४१ दपतीसहवास सेवुं नही.
४२ मोहनीय स्थानकमा रहु नही
४३ एम महापुरुषोए पाळवु. हु पाळवा प्रयत्नी छु
४४ लोकनिंदाथी डरु नही
४५ राज्यभयथी त्रासु नही.
४६ असत्य उपदेश आपु नही
४७ क्रिया सदोषी करु नही
४८ अहपद राखु के भाखु नही
४९ सम्यक् प्रकारे विश्व भणी दृष्टि करुं.
५० नि स्वार्थपणे विहार करु
५१ अन्यने मोहनी उपजावे एवो देखाव करु नही.
५२ धर्मानुरक्त दर्शनथी विचरु.
५३ सर्व प्राणीमा समभाव राखु.
५४ क्रोधी वचन भाखु नही.

५५ पापी वचन भाखु नही
५६ असत्य आना भाखु नही
५७ अपथ्य प्रतिना आपु नही
५८ सुष्टिसौंदर्यमा मोह गावु नही
५९ सुख दुःख पर समभाव करु
६० रात्रिभोजन करु नही
६१ जेमाथा नगो, ते सेवु नही
६२ प्राणीने दुःख थाय एवु मृषा भाखु नही
६३ अतिथिनु सन्मान करु
६४ परमात्मानी भक्ति करु
६५ प्रत्येक स्वयबुधन भगवान मानु
६६ तने दिन प्रति पूजु
६७ विद्वानोन सन्मान आपु
६८ विद्वानोथी माया करु नही
६९ मायावीन विद्वान कहु नही
७० कोई दर्शनने निन्दु नही
७१ अधमनी स्तुति करु नही
७२ एकपन्नी मतभेद बाधु नही
७३ अज्ञान पक्षने आराधु नही

७४ आत्मप्रशंसा इच्छु नहीं.
७५ प्रमाद कोई कृत्यमा करु नहीं.
७६ मांसादिक आहार करु नहीं.
७७ तृष्णाने शमावुं
७८ तापथी मुक्त थवु ए मनोजता मानु.
७९ ते मनोरथ पार पाडवा परायण थवु
८० योगवडे हृदयने शुक्ल करवुं.
८१ असत्य प्रमाणथी वातपूर्ति करुं नहीं.
८२ असंभवित कल्पना करु नहीं.
८३ लोक अहित प्रणीत करुं नहीं.
८४ ज्ञानीनी निंदा करु नहीं.
८५ वैरीना गुणनी पण स्तुति करु
८६ वैरभाव कोईथी राखु नहीं.
८७ मातापिताने मुक्ति वाटे चढावु
८८ रूडी वाटे तेमनो वदलो आपुं
८९ तेमनी मिथ्या आज्ञा मानु नहीं.
९० स्वस्त्रीमां समभावथी वर्तुं
९१
९२ उतावळो चालुं नहीं.

९३ जोसमेर चालु नही
९४ मराडथी चालु नहा
९५ उन्द्भ्रमल वस्त्र पहेरु नही
९६ वस्त्रनु अभिमान करु नही
९७ वधारे वाळ राखु नही
९८ चपोचप वस्त्र सजु नहीं
९९ अपवित्र वस्त्र पहेरु नही
१०० ऊनना वस्त्र पहेरवा प्रयत्न करु
१०१ रेशमी वस्त्रनो त्याग करु
१०२ शात चालथी चालु
१०३ खोटो भपको करु नही
१०४ उपदेशकने द्वेषथी जोउ नही
१०५ द्वेषमात्रनो त्याग करु
१०६ राग दृष्टिथी एके वस्तु आराधु नही
१०७ वरीना सत्य वचनने मान आपु
१०८
१०९
११०
१११

११२

११३

११४

११५

११६ वाळ राखु नही. (गृ०)

११७ कचरो राखु नहीं.

११८ गारो करु नही— आगणा पाले.

११९ फळियामा अस्वच्छता राखुं नहीं. (साधु)

१२० फाटल कपडा राखु नही. (साधु)

१२१ अणगळ पाणी पीउं नही.

१२२ पापी जळे नाहु नही.

१२३ वधारे जळ ढोळु नही.

१२४ वनस्पतिने दु.ख आपु नही.

१२५ अस्वच्छता राखु नहीं.

१२६ पहोरनुं राधेलु भोजन करु नही.

१२७ रसेंद्रियनी वृद्धि करु नही

१२८ रोग वगर औषधनु सेवन करुं नही.

१२९ विषयनुं औषध खाउ नही.

१३० खोटी उदारता सेवु नही.

१३१ कृपण थाउ नही
१३२ आजीविका सिवाय कोईमा माया करु नहीं
१३३ आजीविका माटे धम बोधु नही
१३४ वखतनो अनुपयोग करु नही
१३५ नियम वगर कृत सेवु नही
१३६ प्रतिज्ञा, श्रत तोडु नही
१३७ सत्य वस्तुनु खडन करु नही
१३८ तत्त्वज्ञानमा शकित थाउ नही
१३९ तत्त्व आराधता लोकनिंदाथी डरु नही
१४० तत्त्व आपता माया करु नही
१४१ स्वाथन धम भाखु नही
१४२ चारे वर्गने मडन करु
१४३ धम वडे स्वाथ पेदा करु नही
१४४ धर्म वडे अर्थ पेदा करु
१४५ जडता जोईने आक्रोश पामु नही
१४६ स्त्रीनी स्मृति आणु नही
१४७ मिथ्यात्वने विसर्जन करु
१४८ असत्यने सत्य कहु नही
१४९ शृगारने उत्तेजन आपु नही

१५० हिंसा वडे स्वार्थ चाहु नही.
१५१ सृष्टिनो खेद वधारु नही
१५२ खोटी मोहिनी पेदा करुं नही.
१५३ विद्या विना मूर्ख रहुं नही
१५४ विनयने आराधी रहुं.
१५५ मायाविनयनो त्याग करुं.
१५६ अदत्तादान लउ नही.
१५७ क्लेश करुं नही.
१५८ दत्ता अनीति लउं नहीं.
१५९ दु खी करीने धन लउं नही.
१६० खोटो तोल तोळु नही.
१६१ खोटी साक्षी पूरुं नही.
१६२ खोटा सोगन खाउं नही
१६३ हासी करुं नहीं.
१६४ समभावथी मृत्युने जोउं
१६५ मोतथी हर्ष मानवो.
१६६ कोईना मोतथी हसवु नही
१६७ विदेही हृदयने करतो जउ
१६८ विद्यानु अभिमान करुं नही.

१६९ गुरुनो गुरु बनु नही
१७० अपूज्य आचार्यने पूजु नही
१७१ खोटु अपमान तेने आपु नही
१७२ अकरणीय व्यापार करु नही
१७३ गुण वगरनु वनतत्व सेवु नही
१७४ तत्त्वन तप अकाळिक करु नही
१७५ शास्त्र वाचु
१७६ पोताना मिथ्या तर्कने उत्तेजन आपु नही
१७७ सर्व प्रकारनी क्षमाने चाहु
१७८ सतोपनी प्रयाचना करु
१८९ स्वात्मभक्ति करु
१८० सामान्य भक्ति करु
१८१ अनुपासक थाउ
१८२ निरभिमानी थाउ
१८३ मनुष्य जातिनो भेद न गण
१८४ जडती क्या खाउ
१८५ विशेषथी नयन ठडा करु
१८५ सामान्यथी मित्रभाव राखु
१८७ प्रत्येक वस्तुनो नियम करु

१८८ सादा पोशाकने चाहु
१८९ मधुरी वाणी भाखु.
१९० मनोवीरत्वनी वृद्धि करुं
१९१ प्रत्येक परिषह सहन करु
१९२ आत्माने परमेश्वर मानु
१९३ पुत्रने तारे रस्ते चडावु. (पिता इच्छा करे छे)
१९४ खोटा लाड लडावु नही ,,
१९५ मलिन राखु नही ,,
१९६ अवळी वातथी स्तुति करु नही ,,
१९७ मोहिनीभावे नीरखु नही ,,
१९८ पुत्रीनु वेशवाळ योग्य गुणे करु ,,
१९९ समवय जोउ ,,
२०० समगुण जोउ ,,
२०१ तारो सिद्धात त्रुटे तेम ससारव्यवहार न चलावुं
२०२ प्रत्येकने वात्सल्यता उपदेशु.
२०३ तत्त्वथी कटाळु नही
२०४ विधवा छु तारा धर्मने अगीकृत करु. (विधवा इच्छा करे छे.)
२०५ सुवासी साज सजु नही

२०६ धमकया करु
२०७ नवरी रहु नही
२०८ तुच्छ विचारपर जउ नही
२०९ सुखनी अदेखाई करु नही
२१० ससारन अनित्य मानु
२११ शुद्ध ब्रह्मचर्यनु सेवन करु
२१२ परघेर जउ नही
२१३ कोई पुरुष साथे वात करु नही
२१४ चचळताथी चालु नही,
२१५ ताळी दई वात करु नही
२१६ पुष्प-स्पर्श राखु नही
२१७ काईना कह्याथी रोप आणु नही
२१८ त्रिदडथी खेद मानु नही
२१९ माहदष्टिथी वस्तु नीरखु नही
२२० हृदयथी वीजु रूप राखु नही
२२१ गम्यनी शुद्ध भक्ति करु (सामान्य)
२२२ नीतिथी चालु
२२३ खारी आशा तोडु नही
२२४ अविनय करु नही

२२५ गळया विना दूध पीउं नही.
२२६ ते त्याग ठरावेली वस्तु उपयोगमा लउ नही.
२२७ पापथी जय करी आनद मानु नही.
२२८ गायनमां वधारे अनुरक्त थउ नही
२२९ नियम तोडे ते वस्तु खाउ नही.
२३० गृह-सौंदर्यनो वृद्धि करु.
२३१ सारा स्थाननी इच्छा न करु
२३२ अशुद्ध आहार-जळ न लउ (मुनित्व भाव)
२३३ केश लोचन करु.
२३४ परिषह प्रत्येक प्रकारे सहन करु
२३५ तत्त्वज्ञाननो अभ्यास करु
२३६ कदमूळनु भक्षण न करु
२३७ कोई वस्तु जोई राचु नही
२३८ आजीविका माटे उपदेशक थाउ नही (२)
२३९ तारा नियमने तोडु नही
२४० श्रुतज्ञाननी वृद्धि करु
२४१ तारा नियमनु मंडन करु
२४२ रस-गारव थउ नही.
२४३ कषाय धारु नही.

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

२६३ हृदयने लोवुरूप राखु

२६४ हृदयने जळरूप राखु.

२६५ हृदयने तेलरूप राखु.

२६६ हृदयने अग्निरूप राखु.

२६७ हृदयने आदर्शरूप राखु

२६८ हृदयने समुद्ररूप राखु

२६९ वचनने अमृतरूप राखु.

२७० वचनने निद्रारूप राखु

२७१ वचनने तृपारूप राखु.

२७२ वचनने स्वाधीनरूप राखु.

२७३ कायाने कमानरूप राखु

२७४ कायाने चचळरूप राखु.

२७५ कायाने निरपराधी राखु.

२७६ कोई प्रकारनी चाहना राखु नही. (परमहस)

२७७ तपस्वी छु, वनमा तपश्चर्या कर्या करु.

(तपस्वीनी इच्छा)

२७८ शीतळ छाया लउ छु.

२७९ समभावे सर्व सुख सपादन करुं छु.

२८० मायाथी दूर रहु छु.

२८१ प्रपचने त्यागु छु
२८२ सव त्यागवस्तुने जाणु छु
२८३ खोटी प्रशसा करु नही (मु० ब्र० उ० गृ० सामान्य
२८४ खोटु आळ आपु नही
२८५ खोटी वस्तु प्रणीत कर नही
२८६ कुटम्बक्लेश करु नही (गृ० उ०)
२८७ अभ्याख्यान धारु नही (सा०)
२८८ पिशुन थउ नही
२८९ असत्यथी राचु नही (२)
२९० खडखड हसु नहा (स्त्री)
२९१ कारण विना मा मलकावु नही
२९२ कोई वेळा हस नही
२९३ मनना आनद करता आत्मानदने चाहु
२९४ सर्वने ययातथ्य मान आपु (गृहस्थ)
२९५ स्थितिनो गर्व करु नही
२९६ स्थितिनो खद करु नहीं
२९७ खाटो उद्यम करु नहा
२९८ अनुद्यमी रहु नही
२९९ खोटी सलाह आपु नही (गृ०)

३०० पापी सलाह आपुं नही.
३०१ न्याय विरुद्ध कृत्य करुं नही. (२-३)
३०२ खोटी आगा कोईने आपुं नही. (गृ०मु०ब्र०उ०)
३०३ असत्य वचन आपु नही.
३०४ सत्य वचन भग करु नही
३०५ पाच समितिने धारण करुं. (मु०)
३०६ अविनयथी वेसु नही
३०७ खोटा मडळमा जउं नही. (गृ० मु०)
३०८ वेश्या सामी दृष्टि करुं नही.
३०९ एना वचन श्रवण करुं नही.
३१० वाजित्र साभळु नही.
३११ विवाहविधि पूछु नही.
३१२ एने वखाणु नही.
३१३ मनोरम्यमा मोह मानुं नही.
३१४ कर्मावर्मी करु नही (गृ०)
३१५ स्वार्थे कोईनी आजीविका तोडु नही. (गृ०)
३१६ वध वधननी शिक्षा करु नही.
३१७ भय, वात्सल्यथी राज चलावु (रा०)
३१८ नियम वगर विहार करुं नही. (मु०)

३१९ विषयनी स्मृतिए ध्यान धर्या विना रहु नहीं (मु० गृ० ब्र० उ०)
३२० विषयनी विस्मृति ज करु (मु० गृ० ब्र० उ०)
३२१ सब प्रकारनी नीति शीखु (मु० गृ० ब्र० उ०)
३२२ भयभाषा भाखु नहीं
३२३ अपशब्द बोलु नही
३२४ कोईने शिखडावु नही
३२५ असत्य मर्म भाषा भाखु नही
३२६ लीधेलो नियम वर्णोपरर्णी रीत तोडु नही
३२७ पूठचौय करु नही
३२८ अतिथिनो तिरस्कार करु नही (गृ० उ०)
३२९ गुप्त वात प्रसिद्ध करु नहीं (गृ० उ०)
३३० प्रसिद्ध करवा योग्य गुप्त राखु नही
३३१ विना उपयोगे द्रव्य रळु नही (गृ० उ० ब्र०)
३३२ अयोग्य करार करावु नही (गृ०)
३३३ वधारे व्याज लउ नही
३३४ हिसाबमा भुलावु नहो
३३५ स्थूल हिंसाथी आजीविका चलावु नहीं
३३६ द्रव्यनो खोटो उपयोग करु नही

३५६ दिवसे भोग भोगवु नही
३५७ दिवसे स्पश करु नही
३५८ अवभापाए बोलवु नही
३५९ कोईनु व्रत भगावु नही
३६० झाझे स्थळे भटकु नही
३६१ स्वाथ बहाने काईना त्याग मुकावु नही
३६२ क्रियाशाळीने निदु नही
३६३ नग्न चित्र निहाळु नही
.६४ प्रतिमाने निदु नही
३६५ प्रतिमाने नीरखु नही
३६६ प्रतिमाने पूजु (केवळ गृहस्थ स्थितिमा)
३६ पापथी धम मानु नही (सव)
३६८ सत्य वहेवारने छोडु नही (सव)
३६९ छळ करु नही
३७० नग्न सूउ नही
३७१ नग्न नाहु नही
३७२ आछा लूगडा पहेरु नही
३७३ झाझा अलकार पहेरु नही
३७४ अमर्यादाथी चालु नही

३७५ उतावळे सादे बोलु नही.
३७६ पति पर दाब राखु नही (स्त्री)
३७७ तुच्छ संभोग भोगववो नही. (गृ० उ०)
३७८ खेदमा भोग भोगववो नही
३७९ सायकाळे भोग भोगववो नही.
३८० सायकाळे जमवु नही
३८१ अरुणोदये भोग भोगववो नही.
३८२ ऊघमाथी ऊठी भोग भोगववो नही.
३८३ ऊघमाथी ऊठी जमवु नही.
३८४ शौचक्रिया पहेला कोई क्रिया करवी नही.
३८५ क्रियानी काई जरूर नथी. (परमहंस)
३८६ ध्यान विना एकाते रहु नही (मु०गृ०ब्र०उ०प०)
३८७ लघुशकामा तुच्छ थाउं नही.
३८८ दीर्घशंकामा वखत लगाडु नही.
३८९ ऋतुऋतुना शरीरधर्म साचवु (गृ०)
३९० आत्मानी ज मात्र धर्मकरणी साचवु. (मु०)
३९१ अयोग्य मार, बधन करु नही.
३९२ आत्मस्वतत्रता खोउ नही. (मु० गृ० ब्र०)
३९३ बंधनमा पड्या पहेला विचार करु. (सा०)

३९४ पूर्वित भोग समाप्त नही (मु० गृ०)
३९५ अयोग्य विद्या साधु नही (मु० गृ० ब्र० उ०)
३९६ बोधु पण नहीं
३९७ वण खपनी वस्तु लउ नहीं
३९८ नाहु नही (मु०)
३९९ दातण करु नही
४०० ससारसुख चाहु नही
४०१ नीति विना ससार भोगवु नही (गृ०)
४०२ प्रसिद्ध रीते कुटिल्तायी भोग वणवु नही (गृ०)
४०३ विरहप्राय गूयु नही (मु० गृ० ब्र०)
४०४ अयोग्य उपमा आपु नही (मु० गृ० ब्र० उ०)
४०५ स्वाथ माटे क्रोध करु नही (मु० गृ०)
४०६ वादयश प्राप्त करु नही (उ०)
४०७ अपवादयी खेद करु नही
४०८ धर्मद्रव्यना उपयोग करी शकु नहीं (गृ०)
४०९ दगाना वे-धममा माढु (गृ०)
४१० सयसग परित्याग करु (परमहस)
४११ सारो बोधेलो मारो धम विसारु नही (सर्व)
४१२ स्वप्नानद खेद करु नहा

४१३ आजीविक विद्या सेवुं नही. (मु०)
४१४ तपने वेचुं नही (गृ० ब्र०)
४१५ वे वखतथी वधारे जमुं नही. (गृ० मु० ब्र० उ०)
४१६ स्त्री भेळो जमु नही (गृ० उ०)
४१७ कोई साथे जमु नही (स०)
४१८ परस्पर कवळ आपुं नही, लउं नही. (म०)
४१९ वधारे ओछु पथ्य सावन करुं नही. (स०)
४२० नीरागीना वचनोने पूज्यभावे मान आपुं.
४२१ नीरागी ग्रन्थो वांचु.
४२२ तत्त्वने ज ग्रहण करुं
४२३ निर्माल्य अध्ययन करुं नही.
४२४ विचारशक्तिने खोलवु
४२५ ज्ञान विना तारो धर्म अंगीकृत करुं नही.
४२६ एकांतवाद लउं नही.
४२७ नीरागी अध्ययनो मुखे करु
४२८ धर्मकथा श्रवण करुं.
४२९ नियमित कर्तव्य चूकुं नही
४३० अपराधशिक्षा तोडुं नही.
४३१ याचकनी हासी करु नही

४३२ सत्पात्रे दान आपु
४३३ दीननी दया लाव
४३४ दु खीनो हासी कर नही
४३५ क्षमापना वगर शयन कर नही
४३६ आळसने उत्तेजन आपु नही
४३७ सृष्टिक्रम विरुद्ध कर्म कर नही
४३८ स्त्रीआख्यानो त्याग कर
४३९ निवृत्ति साधन ए विना सघळु त्यागु छु
४४० मर्मलेख कर नही
४४१ परदु खे दाझ
४४२ अपराधी पर पण क्षमा कर
४४३ अयोग्य लेख लख नही
४४४ आगुप्रश्ननो विषय जाळव
४४५ धर्मकर्तव्यमां द्रव्य आपता माया न कर
४४६ नाम धीरवथी सत्य बोल
४४७ परमहसनो हासी कर नही
४४८ आदर्श जोउ नही
४४९ आददामा जोई हुनु नही
४५० प्रवाही पदार्थमां मोढु जोउं नही

४५१ स्त्री पडावु नही.
४५२ अयोग्य स्त्री पडावुं नही.
४५३ अधिकारनो गेरउपयोग करुं नही.
४५४ खोटी हा कहु नहो.
४५५ क्लेशने उत्तेजन आपु नही.
४५६ निंदा करु नही
४५७ कर्तव्य नियम चूकुं नही.
४५८ दिनचर्यानो गेरउपयोग करु नही.
४५९ उत्तम शक्तिने साध्य करु.
४६० शक्ति वगरनुं कृत्य करुं नही
४६१ देश कालादिने ओळखु.
४६२ कृत्यनुं परिणाम जोउ.
४६३ कोईनो उपकार ओळवुं नही.
४६४ मिथ्या स्तुति करुं नही.
४६५ खोटा देव स्थापुं नही.
४६६ कल्पित धर्म चलावु नही.
४६७ सृष्टिस्वभावने अधर्म कहु नही.
४६८ सर्व श्रेष्ठ तत्त्व लोचनदायक मानु.
४६९ मानता मानु नही.

४७० अयोग्य पूजन कर नही
४७१ रात्रे शीतळ जळयी नाहु नही
४७२ दिवसे ऋण वखत नाहु नही
४७३ माननी अभिलाषा राखु नही
४७४ आलापादि सेवु नही
४७५ बीजा पासे वात करु नही
४७६ टूंकु लग्न राखु नही
४७७ प्रमाद सेवु नही
४७८ रौद्रादि रसनो उपयोग करु नही
४७९ शांत रसने निंदु नही
४८० सत्कर्ममा आडो आवु नही (मु० गृ०)
४८१ पाछो पाडवा प्रयत्न करुं नही
४८२ मिथ्या हठ ग्रहु नही
४८३ अवाचकने दुःख आपु नही
४८४ खोडीलानी गुप्तनाति वधारु
४८५ नीतिशास्त्रने मान आपु
४८६ हिंसक धर्म वळगु नही
४८७ अनाचारी धर्मने वळगु नही
४८८ मिथ्यावादीने वळगु नही

४८९ शृंगारी धर्मने वळगुं नही.
४९० अज्ञान धर्मने वळगुं नही.
४९१ केवळ ब्रह्मने वळगुं नही.
४९२ केवळ उपासना सेवुं नही.
४९३ नियतवाद सेवुं नही
४९४ भावे सृष्टि अनादि अनत कहु नही.
४९५ द्रव्ये सृष्टि सादिअत कहुं नही
४९६ पुरुषार्थने निन्दु नही.
४९७ निष्पापीने चचळतायी छळु नही.
४९८ शरीरनो भरूंसो करुं नही.
४९९ अयोग्य वचने वोलावु नही.
५०० आजीविका अर्थे नाटक करुं नही.
५०१ मा, वहेनथी एकाते रहु नही.
५०२ पूर्व स्नेहीओने त्या आहार लेवा जउं नही.
५०३ तत्त्वधर्मनिंदक पर पण रोष धरवो नही
५०४ धीरज मूकवी नही.
५०५ चरित्रने अद्भुत करवुं.
५०६ विजय, कीर्ति, यश सर्वपक्षी प्राप्त करवा.
५०७ कोईनो घरसंसार तोडवो नही.

५०८ अतराय माखवी नही
५०९ पुक्ल धम खडवो नही
५१० निष्काम शाल आराधव
५११ त्वरित भाषा बोलवी नहा
५१२ पापप्रय गुथु नही
५१३ क्षौर समय मौन रहु
५१४ विषय समय मौन रहु
५१५ क्लेश समय मौन रहु
५१६ जळ पीता मौन रहु
५१७ जमता मौन रहु
५१८ पशुपद्धति जळपान करु नही
५१९ बूदको मारी जळमा पडु नही
५२० स्मशाने वस्तुमात्र चाखु नही
५२१ ऊधु शयन करु नहो
५२२ वे पुरुषे साथे सूवु नही
५२३ वे स्त्रीए साथे सूवु नही
५२४ शास्त्रनी आशातना करु नहीं
५२५ गुरु आज्ञिनी तेम ज
५२६ स्वार्थे योग, तप माग नही

५२७ देशाटन करुं.

५२८ देशाटन करुं नहीं.

५२९ चोमासे स्थिरता करु

५३० सभामा पान खाउं नही.

५३१ स्वस्त्री साथे मर्यादा सिवाय फरुं नही

५३२ भूलनी विस्मृति करवी नही.

५३३ कां० कल्लाल, मोचीनी दुकाने बेसवु नही.

५३४ कारीगरने त्या (गुरुत्वे) जवु नही

५३५ तमाकु सेववो नही.

५३६ सोपारी त्रे वखत खावी

५३७ गोळ कूपमा नाहवा पडु नही.

५३८ निराश्रितने आश्रय आपुं.

५३९ समय विना व्यवहार बोलवो नही

५४० पुत्र लग्न करु.

५४१ पुत्री लग्न करुं.

५४२ पुनर्लग्न करुं नही

५४३ पुत्रीने भणाव्या वगर रहुं नही.

५४४ स्त्री विद्याशाळी शोधु, करु.

५४५ तेओने धर्मपाठ शिखडावु.

५४६ प्रत्येक गृह शांति विराम राखवां
५४७ उपयोगवनें समान आपु
५४८ अनंत गुणधर्मथी भरेली सृष्टि छे एम मानुं
५४९ कोई पाठ तत्त्व पढे बरी दुनियामांथी दुःख जशे
एम मानुं
५५० दुःख अने सुख भ्रमणा छे
५५१ माणस चाहे ते करी शके
५५२ शौर्य, बुद्धि इ० नो सुखद उपयोग करु
५५३ कोई मारुं मने दुःखी मानु नही
५५४ सृष्टिना दुःख प्रशमन करु
५५५ सर्व साध्य मनोरथ धारण करु
५५६ प्रत्येक तत्त्वज्ञानीओने परमेश्वर मानुं
५५७ प्रत्यकनु गुणतत्त्व ग्रहण करु
५५८ प्रत्येकना गुणने प्रफुल्लित करु
५५९ कुटुंबन स्वर्ग बनावु
५६० सृष्टिन स्वर्ग बनावु तो कुटुंबन मोक्ष बनावु
५६१ तत्त्वार्थे सृष्टिने सुखी करता हु स्वाथ आपु
५६२ सृष्टिना प्रत्येक (—) गुणनी वृद्धि करु
५६३ सृष्टिना दाखल थता सुधी पाप पुण्य छे एम मानु

५६४ ए सिद्धात तत्त्वधर्मनो छे; नास्तिकतानो नथी एम मानुं.
५६५ हृदय शोकित करु नही.
५६६ वात्सल्यताथी वैरीने पण वश करुं.
५६७ तुं जे करे छे तेमा असंभव न मानु
५६८ शका न करु, उथापु नही; मडन करु
५६९ राजा छतां प्रजाने तारे रस्ते चडावु
५७० पापीने अपमान आपु.
५७१ न्यायने चाहु, वर्तुं.
५७२ गुणनिधिने मान आपु.
५७३ तारो रस्तो सर्व प्रकारे मान्य राखु
५७४ धर्मालय स्थापुं
५७५ विद्यालय स्थापु
५७६ नगर स्वच्छ राखु
५७७ वधारे कर नाखु नही
५७८ प्रजा पर वात्सल्यता धरावु
५७९ कोई व्यसन सेवु नही.
५८० बे स्त्री परणु नही.
५८१ तत्त्वज्ञानना प्रायोजनिक अभावे बीजी परणु ते अपवाद.

५८२ व ( ) पर समभावे जोउ
५८३ सेवक तत्त्वण रासु
५८४ अभान क्रिया तजी दउ
५८५ मान क्रिया सववा माटे
५८६ कपटने पण जाणवु
५८७ असूया सेवु नही
५८८ धर्म आज्ञा सवथी श्रेष्ठ मानु छु
५८९ सद्गति धर्मे ज मवीश
५९० सिद्धांत मानीश, प्रणीत करीश
५९१ धर्म महात्माओने सन्मान दईश
५९२ ज्ञान विना सघळी याचनाओ त्यागु छु
५९३ भिक्षाचरी याचना सवु छु
५९४ चतुर्मास प्रवास करुं नहो
५९५ जेनी तें ना कही त माटे शोधु वे कारण मागु नही
५९६ देहघात करु नही
५९७ व्यायामादि सेवीश
५९८ पौषधादिक व्रत सेवु छु
५९९ बांधेलो आश्रम सवु छु
६०० अकरणीय क्रिया, ज्ञान साधु नही

६०१ पाप व्यवहारना नियम बांधु नही
६०२ द्युत-रमण करुं नही.
६०३ रात्रे क्षौर-कर्म करावु नही.
६०४ ठासोठांस मोड ताणु नही.
६०५ अयोग्य जागृति भोगवु नही
६०६ रसस्वादे तनधर्म मिथ्या करु नही.
६०७ एकात शारीरिक धर्म आराधुं नही
६०८ अनेक देव पूजुं नही
६०९ गुणस्तवन सर्वोत्तम गणु.
६१० सद्‌गुणनु अनुकरण करु.
६११ शृगारी ज्ञाता प्रभु मानुं नही.
६१२ सागर प्रवास करु नही
६१३ आश्रम नियमोने जाणु.
६१४ क्षौर-कर्म नियमित राखवु
६१५ ज्वरादिकमां स्नान करवु नही
६१६ जळमा डूबकी मारवी नही
६१७ कृष्णादि पाप लेश्यानो त्याग करुं छु
६१८ सम्यक् समयमा अपध्याननो त्याग करु छु
६१९ नाम भक्ति सेवीश नही.

६२० ऊभा ऊभा पाणी पीउ नही
६२१ आहार अते पाणी पीउ नही
६२२ चालता पाणी पीउ नही
६२३ रात्रे गळया विना पाणी पीउ नहीं
६२४ मिथ्या भाषण करु नहा
६२५ सत् शब्दोने सन्मान आपु
६२६ अयोग्य आवें पुरुष नीरख नही
६२७ अयोग्य वचन भाखु नही
६२८ उघाडे शिर बेसु नही
६२९ वारवार अवयवो नीरखु नहा
६३० स्वस्थनी प्रशसा करु नही
६३१ शाया पर गूढभावे राचु नही
६३२ भार भोजन करु नहा
६३३ तीव्र हृदय राखु नही
६३४ मानार्थे कृत्य करु नही
६३५ कीत्यर्थे पुण्य करु नही
६३६ कल्पित कथा दृष्टात सत्य कहु नही
६३७ अजाणी वाटे रात्रे चालु नही
६३८ शक्तिनो गेरउपयोग करु नही

६३९ स्त्रीपक्षे धन प्राप्त करुं नही.
६४० वंध्याने मातृभावे सत्कार दउं.
६४१ अक्रुत धन लउं नहो.
६४२ वळदार पाघडी बाधु नही.
६४३ वळदार चलोठो पहेरु नही.
६४४ मलिन वस्त्र पहेरुं.
६४५ मृत्यु पाछळ रागथी रोउ नही.
६४६ व्याख्यानशक्तिने आराधु.
६४७ धर्मनामे क्लेशमा पडु नही.
६४८ तारा धर्म माटे राजद्वारे केस मूकु नही
६४९ बने त्या सुधी राजद्वारे चढु नही.
६५० श्रीमंतावस्थाए वि० शाळाथी करुं
६५१ निर्धनावस्थानो शोक करु नही.
६५२ परदु खे हर्ष धरुं नही.
६५३ जेम बने तेम धवळ वस्त्र सजुं.
६५४ दिवसे तेल नाखु नही.
६५५ स्त्रीए रात्रे तेल नाखवु नही.
६५६ पापपर्व सेवु नही.
६५७ धर्मी, सुयशी एक कृत्य करवानो मनोरथ धरावुं छुं.

६५८ गाळ साभळु पण गाळ दउं नही
६५९ गुक्त एकातनु निरतर सेवन करु छु
६६० सर्व धाक मेळापमा जउ नही
६६१ झाड तळे रात्रे शयन करु नही
६६२ कूवा काठे रात्र वेसु नही
६६३ एकय नियमने तोडु नही
६६४ तन, मन धन, वचन अने आत्मा समर्पण करु छु
६६५ मिथ्या परद्रव्य त्यागु छु
६६६ अयोग्य शयन त्यागु छु
६६७ अयोग्य दान त्यागु छु
६६८ बुद्धिनी वृद्धिना नियमो तजु नही
६६९ दासत्व-परम-लाभ त्यागु छु
६७० धमधूर्तता त्यागु छु
६७१ मायाथी निवतु छु
६७२ पापमुक्त मनोरथ स्मृत करु छु
६७३ विद्यादान नेता छल त्यागु छु
६७४ सतने सकट आपु नही
६७५ अजाण्यान रस्ता बतावुं
६७६ वे भाव राखु नही

६७७ वस्तुमा मेळभेळ करु नही.
६७८ जीवहिंसक व्यापार करु नही
६७९ ना कहेला अथाणादिक सेवु नही
६८० एक कुळमा कन्या आपु नही, लउ नही.
६८१ सामा पक्षना सगा स्वधर्मी ज खोळीश
६८२ धर्मकर्तव्यमा उत्साहादिनो उपयोग करीश
६८३ आजीविका अर्थे सामान्य पाप करता पण कपतो जईश
६८४ धर्ममित्रमा माया रमु नही
६८५ चतुर्वर्णी धर्म व्यवहारमा भूलीश नही
६८६ सत्यवादीने सहायभूत थईश.
६८७ धूर्त त्यागने त्यागुं छु.
६८८ प्राणी पर कोप करवो नही
६८९ वस्तुनुं तत्त्व जाणवु
६९० स्तुति, भक्ति, नित्यकर्म विसर्जन करुं नही
६९१ अनर्थ पाप करु नही
६९२ आरभोपाधि त्यागु छु
६९३ कुसग त्यागु छु
६९४ मोह त्यागु छु

६९५ दोषनु प्रायश्चित्त करीश
६९६ प्रायश्चित्तादिकनी विस्मृति नही करु
६९७ सघळा करता धर्मंवग प्रिय मानीश
६९८ तागे धम त्रिकरण गुद्ध सेववामा प्रमाद नहो करु
६९९
७००

( )

बत्रीस योग

सत्पुरुषो नीचेना बत्रीस योगना संग्रह करी आत्मान उज्ज्वळ करवानु कहे छे

*१ शिष्य पोताना जेवो थाय तने माटे तेन श्रुतादिक ज्ञान आपवु

*२ पोताना आचार्यपणानु जे ज्ञान होय तना अन्यने बोध आपवो अने प्रकाश करवा

---

* पाठांतर—१ मोक्षसाधक योग माटे शिष्ये आचार्य पास आलोचना करवी २ आचार्ये आलोचना बीजा पास प्रकाशवी नही

३ आपत्तिकाळे पण धर्मनुं दृढपणु त्यागवुं नही.
४ लोक, परलोकना सुखना फळनी वाछना विना तप करवुं
५ शिक्षा मळी ते प्रमाणे यत्नाथी वर्तवु, अने नवी शिक्षा विवेकथी ग्रहण करवी
६ ममत्वनो त्याग करवो.
७ गुप्त तप करवु
८ निर्लोभता राखवी.
९ परिषह उपसर्गने जीतवा.
१० सरळ चित्त राखवु.
११ आत्मसंयम शुद्ध पाळवो
१२ समकित शुद्ध राखवु.
१३ चित्तनी एकाग्र समाधि राखवी.
१४ कपटरहित आचार पाळवो
१५ विनय करवायोग्य पुरुषोनो यथायोग्य विनय करवो.
१६ संतोषथी करीने तृष्णानी मर्यादा टूकी करी नाखवी.
१७ वैराग्य भावनामा निमग्न रहेवु
१८ मायारहित वर्तवु.
१९ शुद्ध करणीमा सावधान थवु.

२० सवरने आदरवो अने पापने रोकवा
२१ पोताना दोप समभावपूर्वक टाळवा
२२ सर्व प्रकारना विपयथी विरक्त रहेवु
२३ मूळगुणे पचमहाव्रत विशुद्ध पाळवा
२४ उत्तरगुणे पचमहाव्रत विशुद्ध पाळवा
२५ उत्साहपूवक कायोत्सर्ग करवो
२६ प्रमादरहित ज्ञान ध्यानमा प्रवर्तन करवु
२७ हमेशा आत्मचारित्रमा सूक्ष्म उपयोगथी वर्तवु
२८ ध्यान, जितेंद्रियता अर्थे एकाग्रतापूवक करवु
२९ मरणात दु खथी पण भय पामवो नही
३० स्त्रीआदिकना सगने त्यागवो
३१ प्रायश्चित्त विशुद्धि करवी
३२ मरणकाले आराधना करवी

ए एकेको योग अमूल्य छे सघळा सग्रह करनार परिणामे अनत सुखने पामे छे

वि० स० १९४० चैत्र

---

(४)

स्मृतिमां राखवा योग्य महावाक्यो :—

१ एक भेदे नियम ए ज आ जगतनो प्रवर्तक छे.

२ जे मनुष्य सत्पुरुषोना चरित्ररहस्यने पामे छे, ते मनुष्य परमेश्वर थाय छे.

३ चंचळ चित्त ए ज सर्व विषम दुःखनुं मूळियु छे

४ ज्ञाज्ञानो मेळाप अने थोडा साथे अति समागम ए बन्ने समान दु खदायक छे

५ समस्वभावीनुं मळवु एने ज्ञानीओ एकात कहे छे

६ इन्द्रियो तमने जीते अने सुख मानो ते करता तेने तमे जीतवामा ज सुख, आनद अने परमपद प्राप्त करशो.

७ राग विना ससार नथी अने ससार विना राग नथी.

८ युवावयनो सर्वसग परित्याग परमपदने आपे छे.

९ ते वस्तुना विचारमा पहोचो के जे वस्तु अतीन्द्रिय स्वरूप छे.

१० गुणीना गुणमा अनुरक्त थाओ

वि० स० १९४०

(५)

वचनामृत

१ आ तो अखड सिद्धात मानजो के सयोग, वियोग, सुख दुख, खेद, आनद, अणराग, अनुराग इत्यादि योग कोई व्यवस्थित कारणने लईने रह्या छे

२ एकात भावी के एकात न्यायदोषने सन्मान न आपजो

३ कोईनो पण समागम करवा योग्य नथी छता ज्या सुधी तेवी दशा न थाय त्या सुधी सत्पुरुषनो समागम अवश्य सेववो घटे छे

४ जे कृत्यमा परिणामे दुख छे तेने सन्मान आपता प्रथम विचार करो

५ कोईने अत करण आपशो नही, आपो तेनाथी भिन्नता राखशो नही, भिन्नता राखो त्या अन्त करण आप्यु न आप्या समान छे

६ एक भोग भोगवे छे छता कर्मनी वृद्धि नथी करतो, अने एक भोग नथी भोगवतो छता कर्मनी वृद्धि करे छे ए आश्चर्यकारक पण समजवा योग्य कथन छे

७ योगानुयोगे बनेलु कृत्य बहु सिद्धिने आपे छे

८ आपणे जेनाथी पटंतर पाम्या तेने सर्वस्व अर्पण करतां अटकशो नही.

९ तो ज लोकापवाद सहन करवा के जेथी ते ज लोको पोते करेला अपवादनो पुन: पश्चात्ताप करे.

१० हजारो उपदेशवचनो, कथन साभळवा करतां तेमाना थोडा वचनो पण विचारवां ते विशेष कल्याणकारी छे.

११ नियमथी करेलुं काम त्वराथी थाय छे, धारेली सिद्धि आपे छे; आनंदना कारणरूप थई पडे छे

१२ ज्ञानीओए एकत्र करेला अद्भुत निधिना उपभोगी थाओ

१३ स्त्रीजातिमा जेटलु मायाकपट छे तेटलु भोळपणुं पण छे.

१४ पठन करवा करता मनन करवा भणी बहु लक्ष आपजो

१५ महापुरुषना आचरण जोवा करता तेनुं अन्तःकरण जोवु ए वधारे परीक्षा छे.

१६ वचनसप्तशती पुन: पुन. स्मरणमा राखो.

१७ महात्मा थवुं होय तो उपकारबुद्धि राखो; सत्पुरुषना समागममा रहो; आहार, विहारादिमा अलुब्ध अने

नियमित रहो सत्शास्त्रनु मनन करो, ऊची श्रेणिमा लक्ष राखो

१८ ए एक्के न होय तो समजीने आनद राखता शीखो

१९ वतनमा बालक थाओ, सत्यमा युवान थाओ, ज्ञानमा वृद्ध थाओ

२० राग करवो नही, करवो तो सत्पुरुष पर करवो, द्वेष करवो नही, करवो तो कुशील पर करवो

२१ अनतज्ञान, अनतदर्शन अनतचारित्र अने अनतवीर्यथी अभेद एवा आत्मानो एक पळ पण विचार करो

२२ मनने वश कयु तेणे जगतने वश कयु

२३ आ ससारने शु करवो ? अनत वार थयेली माने आजे स्त्रीरूपे भोगवीए छीए

२४ निग्रथता धारण करता पहेला पूर्ण विचार करजो, ए लईने खामी आणवा करता अल्पारभी थजो

२५ समर्थ पुरुषो कल्याणनु स्वरूप पोकारी पोकारीने कही गया, पण कोई विरलाने ज ते यथार्थ समजायु

२६ स्त्रीना स्वरूप पर मोह थतो अटकाववाने वगर त्वचानु तेनु रूप वारवार चितववा योग्य छे

२७ कुपात्र पण सत्पुरुषना मूकेला हस्तथी पात्र थाय छे. जेम छाशथी शुद्ध थयेलो सोमल शरीरने नीरोगी करे छे

२८ आत्मानु सत्य स्वरूप एक शुद्ध सच्चिदानंदमय छे, छता भ्रातिथी भिन्न भासे छे, जेम त्रासी आख करवाथी चद्र बे देखाय छे

२९ यथार्थ वचन ग्रहवामा दभ राखशो नही के आपनारनो उपकार ओळवशो नही

३० अमे बहु विचार करीने आ मूळतत्त्व शोध्यु छे के— गुप्त चमत्कार ज सृष्टिना लक्षमा नथी

३१ रडावीने पण बच्चाना हाथमा रहेलो सोमल लई लेवो

३२ निर्मळ अत'करणथी आत्मानो विचार करवो योग्य छे.

३३ ज्या 'हु' माने छे त्या 'तु' नथी; ज्या 'तु' माने छे त्या 'तु' नथी.

३४ हे जीव ! हवे भोगथी शात था, शात विचार तो खरो के एमा कयु सुख छे ?

३५ बहु कटाळीने ससारमा रहीश नही

३६ सत्ज्ञान अने सत्शीलने साथे दोरजे.

३७ एकथी मैत्री करीश नही, कर तो आखा जगतथी करजे.

३८ महा सौंदयथी भरेली देवागनाना क्रीडा विलास निरीक्षण करता छता जेना अत करणमा थामथी विशेष विशेष विराग छूटे छे तेने धन्य छे तेने त्रिकाळ नमस्कार छे

३९ भोगना वखतमा योग सांभरे ए हळुकर्मीनु लक्षण छे

४० आटलु होय तो हु मोक्षनी इच्छा करतो नथी आखी सृष्टि सतशीलने सेवे नियमित आयुष्य, नीरोगी शरीर, अचळ प्रेमी प्रेमदा, आज्ञाक्ति अनुचर, कुळदीपक पुत्र, जावनपयत बाल्यावस्था आत्मतत्त्वनु चिंतवन

४१ एम कोई काळे थवानु नथी, माटे हु तो मोक्षने ज इच्छु छु

४२ सृष्टि सर्व अपेक्षाए अमर थशे ?

४३ कोई अपेक्षाए हु एम कहु छु के सृष्टि मारा हाथथी चालती होत तो बहु विवकी धोरणथी परमानदमा विराजमान होत

४४ शुक्ल निर्जनावस्थाने हु बहु मान्य करु छु

४५ सृष्टिलीलामा शातभावथी तपश्चर्या करवी ए पण उत्तम छे

४६ एकातिक कथन कथनार ज्ञानी न कही शकाय.

४७ शुक्ल अंत करण विना मारा कथनने कोण दाद आपशे ?

४८ ज्ञातपुत्र भगवानना कथननी ज बलिहारी छे

४९ हु तमारी मूर्खता पर हसु छु के—नथी जाणता गुप्त चमत्कारने छता गुरुपद प्राप्त करवा मारी पासे का पधारो ?

५० अहो ! मने तो कृतघ्नी ज मळता जणाय छे, आ केवी विचित्रता छे !

५१ मारा पर कोई राग करो तेथी हु राजी नथी, परतु कंटाळो आपशो तो हु स्तब्ध थई जईश अने ए मने पोसाशे पण नही.

५२ हुं कहुं छु एम कोई करशो ? मारुं कहेलुं सघळु मान्य राखशो ? मारा कहेला धाकडे धाकड पण अगीकृत करशो ? हा होय तो ज हे सत्पुरुष ! तुं मारी इच्छा करजे.

५३ संसारी जीवोए पोताना लाभने माटे द्रव्यरूपे मने हसतो रमतो मनुष्य लीलामय कर्यो !

५४ देवदेवीनी तुषमानताने शु करीशु ? जगतनी तुषमानताने शु करीशु ? तुषमानता सत्पुरुषनी इच्छो.

५५ हु सच्चिदानन्द परमात्मा छु

५६ एम समजो के तमे तमारा आत्माना हित माटे परवस्तुनी अभिलाषा राखता हशो तो निराशा प्राप्त थई तो ते पण तमारु आत्महित ज छे

५७ तमारा शुभ विचारमा पार पडो, नहीं तो स्थिर चित्तथी पार पड्या छो एम समजो

५८ ज्ञानीओ अवसर खेद अने हर्षथी रहित होय छे

५९ ज्या सुधी ते तत्त्वना प्राप्ति नहीं थाय त्या सुधी मोक्षनी तात्पर्यता मळी नथी

६० नियम पाळवानु दृढ करता छता नथी पळतो ए पूर्वकर्मनो ज दोष छे एम ज्ञानीओनु कहेवु छे

६१ संसाररूपी कुटुंबने घेर आपणो आत्मा परोणो दाखल छे

६२ ए ज भाग्यशाळी छे जे दुर्भाग्यशाळीनी दया खाय छे

६३ शुभ द्रव्य ए शुभ भावनु निमित्त महर्षिओ कहे छे

६४ स्थिर चित्त करीने धर्म अने शुक्ल ध्यानमा प्रवृत्ति करो

६५ परिग्रहनी मूर्छा पापनु मूळ छे

६६ जे कृत्य करवा वखते व्यामोहसंयुक्त खेदमा छो, अने

परिणामे पण पस्ताओ छो, तो ते कृत्यने पूर्वकर्मनो दोप ज्ञानीओ कहे छे

६७ जडभरत अने जनक विदेहीनी दशा मने प्राप्त थाओ.

६८ सत्पुरुषना अत करणे आचर्यो किंवा कह्यो ते धर्म.

६९ अंतरग मोहग्रथि जेनी गई ते परमात्मा छे

७० व्रत लईने उल्लासित परिणामे भागशो नही

७१ एकनिष्ठाए ज्ञानीनी आज्ञा आराधता तत्त्वज्ञान प्राप्त थाय छे.

७२ क्रिया ए कर्म, उपयोग ए धर्म, परिणाम ए बध, भ्रम ए मिथ्यात्व, ब्रह्म ते आत्मा अने शका ए ज शल्य छे शोकने सभारवो नही, आ उत्तम वस्तु ज्ञानीओए मने आपी

७३ जगत जेम छे तेम तत्त्वज्ञाननी दृष्टिए जुओ

७४ श्री गौतमने चार वेद पठन करेला जोवाने श्रीमत् महावीरस्वामीए सम्यक्नेत्र आप्या हता.

७५ भगवतीमा कहेली पुद्गल नामना परिव्राजकनी कथा तत्त्वज्ञानीओनु कहेलु सुंदर रहस्य छे.

७६ वीरना कहेला शास्त्रमां सोनेरी वचनो छूटक छूटक अने गुप्त छे

७७ सम्यक्‌नेत्र पामीने तमे गमे ते धर्मशास्त्र विचारशो तो पण आत्महित प्राप्त थशे

७८ कुदरत आ तारो प्रबल अन्याय छे के मारी धारेली नीति मारा पासे आचरावती नथी ! (कुदरते ते पूर्वकर्म)

७९ मानव परमेश्वर थाय छे एम ज्ञानीओ कहे छे

८० उत्तराध्ययन नामनुं जैनसूत्र तत्त्वदृष्टिए पुन पुन अवलोको

८१ जीवतां मराय तो फरी न मरवुं पडे एवुं मरण इच्छवा योग्य छे

८२ कृतघ्नता जेवो एके महादोष मने लागतो नथी

८३ जगतमां मान न होत तो अहीं ज मोक्ष होत !

८४ वस्तुने वस्तुगते जुओ

८५ धर्मनुं मूळ वि० छ

८६ तेनुं नाम विद्या के जेनाथी अविद्या प्राप्त न थाय

८७ वीरना एक वाक्यने पण समजो

८८ अहपद, कृतघ्नता, उत्सूत्रप्ररूपणा, अविवेक धर्म ए माठी गतिना लक्षणो छे.

८९ स्त्रीनुं कोई अग लेशमात्र सुखदायक नथी छता मारो देह भोगवे छे.

९० देह अने देहार्थममत्व ए मिथ्यात्व लक्षण छे.

९१ अभिनिवेशना उदयमा उत्सूत्रप्ररूपणा न थाय तेने हु महाभाग्य, ज्ञानीओना कहेवाथी कहुं छु

९२ स्याद्वाद शैलीए जोतां कोई मत असत्य नथी.

९३ स्वादनो त्याग ए आहारनो खरो त्याग ज्ञानीओ कहे छे

९४ अभिनिवेश जेवु एक्के पाखड नथी.

९५ आ काळमा आटलु वध्युं :—झाझा मत, झाझा तत्त्वज्ञानीओ, झाझी माया अने झाझो परिग्रहविशेष

९६ तत्त्वाभिलाषाथी मने पूछो तो हु तमने नीरागी धर्म बोधी शकुं खरो.

९७ आखा जगतना शिष्य थवारूप दृष्टि जेणे वेदी नथी ते सद्गुरु थवाने योग्य नथी

९८ कोई पण शुद्धाशुद्ध धर्मकरणी करतो होय तो तेने करवा दो.

९९ आत्मानो धर्म आत्मामा ज छे

१०० मारा पर सघळा सरळ भावथी हुकम चलावो तो हु राजी छु

१०१ हु ससारथी लेश पण रागसयुक्त नथी छता तेने ज भोगवु छु, काई में त्याग्यु नथी

१०२ निर्विकारी दशाथी मने एकलो रहेवा दो

१०३ महावीरे जे ज्ञानथी आ जगतने जोयु छे ते ज्ञान सव आत्मामा छे, पण आविर्भाव करवु जोईए

१०४ बहु छकी जाओ तो पण महावीरनो आज्ञा तोडशो नही गमे तेवी शका थाय तो पण मारी वती वीरने नि शक गणजो

१०५ पार्श्वनाथ स्वामीनु ध्यान योगीओए अवश्य स्मरवु जोईए छे नि —ए नागनी छत्रछाया वळानो पार्श्वनाथ ओर हतो !

१०६ गजसुकुमारनी क्षमा अने राजेमती रहनेमीने बोधे छे ते बोध मने प्राप्त थाओ

१०७ भोग भोगवता सुधी (ज्या सुधी ते कर्म छे त्या सुधी) मने योग ज प्राप्त रहो !

१०८ मर्व शास्त्रनुं ए.क तत्त्व मने मळ्युं छे एम कहुं तो मारुं अहृपद नथी.

१०९ न्याय मने बहु प्रिय छे. वीरनी शैली ए ज न्याय छे, ममजवु दुर्लभ छे

११० पवित्र पुरुपोनी कृपादृष्टि ए ज सम्यक्‌दर्शन छे

१११ भर्तृहरिए कहेलो त्याग विशुद्ध बुद्धिथी विचारता घणी ऊर्ध्वज्ञानदशा थता सुधी वर्ते छे.

११२ कोई धर्मथी हु विरुद्ध नथी. सर्व धर्म हु पाळु छु तमे सघळा धर्मथी विरुद्ध छो एम कहेवामां मारो उत्तम हेतु छे.

११३ तमारो मानेलो धर्म मने कया प्रमाणथी बोधो छो ते मारे जाणवु जरूरनुं छे.

११४ शिथिल बंध दृष्टिथी नीचे आवीने ज विखेराई जाय (—जो निर्जरामा आवे तो)

११५ कोई पण शास्त्रमा मने शका न हो.

११६ दु.खना मार्या वैराग्य लई जगतने आ लोको भ्रमावे छे

११७ अत्यारे, हु कोण छु एनु मने पूर्ण भान नथी.

११८ तुं सत्पुरुपनो शिष्य छे.

११९ ए ज मारी आराक्षा छे
१२० मने कोई गजसुकुमार जेवा वखत आवो
१२१ कोई राजेमती जेवो वखत आवो
१२२ सत्पुरुषो कहेता नथी करता नथी, छता तेनी सत्पुरुषता निर्विकार मुखमुद्रामा रही छ
१२३ सस्थानविचयध्यान पूर्वधारीओने प्राप्त थतु हशे एम मानवु योग्य लागे छे तम पण तन ध्यायन करो
१२४ आत्मा जेवो कोई देव नथी
१२५ कोण भाग्यशाळी ? अविरति सम्यग्दृष्टि के विरति ?
१२६ कांईनी आजीविका तोडशो नहो

वि० स० १९४३ कार्तिक

---

(६)

थोडा वाक्यो

१ विशाळ बुद्धि, मध्यस्थता, सरळता अने जितेंद्रियपणु आटला गुणो जे आत्मामा होय त तत्त्व पामवानु उत्तम पात्र छे
२ जगतमा नीरागीत्व, विनयता अने सत्पुरुषना आज्ञा ए

नही मळवाथी आ आत्मा अनादिकाळथी रखड्यो, पण निरुपायता थई ते थई हवे आपणे पुरुषार्थ करवो उचित छे. जय थाओ !

३ परमात्माने ध्याववाथी परमात्मा थवाय छे, पण ते ध्यावन, आत्मा सत्पुरुषना चरणकमळनी विनयोपासना विना प्राप्त करी शकतो नथी. ए निर्ग्रन्थ भगवाननुं सर्वोत्कृष्ट वचनामृत छे.

४ बाह्यभावे जगतमा वर्तो अने अंतरंगमा एकांत शीतलीभूत-निर्लेप रहो, ए ज मान्यता अने बोधना छे.

५ इच्छा वगरनुं कोई प्राणी नथी. विविध आशाथी तेमा पण मनुष्यप्राणी रोकायेलुं छे. इच्छा, आशा ज्या सुधी अतृप्त छे, त्या सुधी ते प्राणी अधोवृत्तिवत् छे. इच्छा जयवाळु प्राणी ऊर्ध्वगामीवत् छे.

६ तेने मोह शो, अने तेने शोक शो, के जे सर्वत्र एकत्व (परमात्मस्वरूप) ने ज जुए छे.

७ तृषातुरने पायानी महेनत करजो अतृषातुरने तृषातुर थवानी जिज्ञासा पेदा करजो. जेने ते पेदा न थाय तेवु होय, तेने माटे उदासीन रहेजो.

८ दृष्टिविष गया पछी गमे ते शास्त्र, गमे ते अक्षर, गमे ते कथन, गमे ते स्थळ प्राये अहितनु कारण थतु नथी

९ जीवने ज्या सुधी सतनो जोग न थाय त्या सुधी मतमतातरमा मध्यस्थ रहेवु योग्य छे

१० गमे तेटली विपत्तिओ पडे, तथापि ज्ञानी द्वारा सासारिक फळनी इच्छा करवी योग्य नथी

११ जेनी प्राप्ति पछी अनतकाळनु याचकपणु मटी सव काळने माटे अयाचकपणु प्राप्त होय छे एवा जो कोई होय तो ते तरणतारण जाणीए छीए, तेने भजो

१२ सर्व प्रकारना भयने रहेवाना स्थानकरूप आ ससारने विषे मात्र एक वैराग्य ज अभय छे

१३ जेने मृत्युनी साथे मित्रता होय, अथवा जे मृत्युथी भागी छूटी शके एम होय, अथवा हु नही ज मरु एम जेने निश्चय होय ते भले सुखे सूए

—(श्री तीथकर–छ जीव निकाय अध्ययन)

१४ विषम भावना निमित्तो बळवानपणे प्राप्त थया छता जे ज्ञानीपुरुष अविषम उपयोगे वर्त्या छे, वर्ते छे, अने भविष्यकाळे वर्ते ते सर्वने वारवार नमस्कार !

१५ परमभक्तिथी स्तुति करनार प्रत्ये पण जेने राग नथी अने परमद्वेषथी परिषह-उपसर्ग करनार प्रत्ये पण जेने द्वेष नथी, ते पुरुषरूप भगवानने वारंवार नमस्कार !

१६ जेने कोई पण प्रत्ये रागद्वेष रह्या नथी ते महात्माने वारंवार नमस्कार !

१७ वीतराग पुरुषना समागम विना, उपासना विना, आ जीवने मुमुक्षुता केम उत्पन्न थाय ? सम्यक्ज्ञान क्याथी थाय? सम्यक्दर्शन क्याथी थाय ? सम्यक्चारित्र क्याथी थाय ? केमके ए त्रणे वस्तु अन्य स्थानके होती नथी.

---

(७)

१ प्रमादने लीधे आत्मा मळेलु स्वरूप भूली जाय छे

२ जे जे काळे जे जे करवानु छे तेने सदा उपयोगमा राख्या रहो

३ क्रमे करीने पछी तेनी सिद्धि करो.

४ अल्प आहार, अल्प विहार, अल्प निद्रा, नियमित वाचा, नियमित काया अने अनुकूळ स्थान ए मनने वश करवाना उत्तम साधनो छे

५ श्रेष्ठ वस्तुनी जिज्ञासा करवी ए ज आत्मानी श्रेष्ठता छे कदापि तें जिज्ञासा पार न पडी तोपण जिज्ञासा ते पण ते ज अशवत् छे

६ नवा कर्म बाधवा नही अने जूना भोगवी लेवा, एवी जेनी अचळ जिज्ञासा छे ते, त प्रमाण वर्ती शके छे

७ जे कृत्यनु परिणाम धर्म नथी, ते कृत्य मूळथी ज करवानी इच्छा रहेवा देवी जोईती नथी

८ मन जो शकाशील थई गयु होय तो 'द्रव्यानुयाग विचारवो योग्य छे, प्रमादी थई गयु होय तो 'चरणकरणानुयोग' विचारवो योग्य छे, अने कषायी थई गयु होय तो 'धर्मकथानुयोग' विचारवो योग्य छे, जड थई गयु होय तो गणितानुयोग' विचारवो योग्य छे

९ कोई पण कामनी निराशा इच्छवी, परिणामे पछी जेटली सिद्धि थई तेटलो लाभ, आम करवाथी सतोषी रहेवाने

१० पृथ्वी सबधी क्लेश थाय तो एम समजी लेजे के ते साथे आववानी नथी, ऊलटो हु तेने देह आपी जवानो

छु; वळी ते कंई मूल्यवान नथी. स्त्री संबंधी क्लेश, शंकाभाव थाय तो आम समजी अन्य भोक्ता प्रत्ये हसजे के ते मळमूत्रनी खाणमां मोही पड्यो, (जे वस्तुनो आपणे नित्य त्याग करीए छीए तेमां !) धन संबंधी निराशा के क्लेश थाय तो ते ऊंची जातना कांकरा छे एम समजी संतोष राखजे; क्रमे करीने तो तु निःस्पृही थई शकीश.

११ तेनो तुं बोध पाम के जेनाथी समाधिमरणनी प्राप्ति थाय

१२ एक वार जो समाधिमरण थयुं तो सर्व काळना असमाधिमरण टळशे.

१३ सर्वोत्तम पद सर्वत्यागीनुं छे.

कारतक, १९४३

---

(८)

सत्पुरुषोने नमस्कार

अनंतानुबंधी क्रोध, अनंतानुबंधी मान, अनंतानुबंधी माया अने अनंतानुबंधी लोभ ए चार तथा मिथ्यात्वमोहिनी, मिश्रमोहिनी, सम्यक्त्वमोहिनी ए त्रण एम ए

सात प्रकृति ज्या सुधी क्षयोपशम, उपशम के क्षय थती नथी त्या सुधी सम्यक्दृष्टि थवु संभवतु नथी ए सात प्रकृति जेम जेम मदताने पामे तेम तेम सम्यक्त्वनो उदय थाय छे ते प्रकृतिओनी ग्रथि छेदवी परम दुर्लभ छे जेनी ते ग्रथि छेदाई तेने आत्मा हस्तगत थवो सुलभ छे तत्त्व ज्ञानीओए ए ज ग्रंथिने भदवानो फरी फरीने बोध कर्यो छे जे आत्मा अप्रमादपणे ते भेदवा भणी दृष्टि आपशे ते आत्मा आत्मत्वने पामशे ए नि सदेह छे

सद्गुरुना उपदेश विना अने जीवनी सत्पात्रता विना एम थवु अटक्यु छे तेनी प्राप्ति करीने ससारतापथी अत्यत तपायमान आत्माने शीतळ करवो ए ज कृत कृत्यता छे

"धर्म" ए वस्तु बहु गुप्त रही छे ते बाह्य सशो धनथी मळवानी नथी अपूर्व अतर्सशोधनथी ते प्राप्त थाय छे ते अतर्सशोधन कोईक महाभाग्य सद्गुरु-अनुग्रहे पामे छे

एक भवना थोडा सुख माटे अनत भवनु अनत दु ख नहो वधारवानु प्रयत्न सत्पुरुषो करे छे

स्यात्पद आ वात पण मान्य छे के बननार छे ते फरनार नथी अने फरनार छे ते बननार नथी. तो पछी धर्मप्रयत्नमा, आत्मिक हितमा अन्य उपाधिने आधीन थई प्रमाद शु धारण करवो ? आम छे छता देश, काळ, पात्र, भाव जोवा जोईए

सत्पुरुषोनुं योगबळ जगतनुं कल्याण करो.

प्रणाम—नीराग श्रेणी समुच्चये.

ववाणिया, महा सुद १४, बुध, १९४५

---

(९)

नीचेना दोष न आववा जोईए :—

१ कोईथी महा विश्वासघात.
२ मित्रथी विश्वासघात.
३ कोईनी थापण ओळववी.
४ व्यसननु सेववुं
५ मिथ्या आळनु मूकवुं.
६ खोटा लेख करवा.
७ हिसाबमा चूकववुं.
८ जुलमी भाव कहेवो.

९ निर्लंछने अल्प मायाथी पण छेतरवो
१० यूनाधिक तोळी आपवु
११ एकने बदले बीजु अथवा मिश्र करीने आपवु
१२ कर्मादानी धधो
१३ लाच के अन्तादान

ए वाटेथी कई रळवु नही ए जाणे सामान्य व्यवहार शुद्धि उपजीवन अर्थे वही गयो (अपूर्ण)

ववाणिया, माह, १९४५

---

(१०)
नीरागी महात्माओने नमस्कार

कर्म ए जड वस्तु छे जे जे आत्माने ए जडथी जेटलो जेटलो आत्मबुद्धिए समागम छे तेटली तेटली जडतानी एटले अबोधतानी ते आत्माने प्राप्ति हाय, एम अनुभव थाय छे आश्चर्यता छे, के पोते जड छता चेतनने अचेतन मनावी रह्या छे ! चेतन चेतनभाव भूली जई तेने स्वस्व रूप ज माने छे जे पुरुषो ते कर्मसयोग अने तेना उदये उत्पन्न थयेला पर्यायोने स्वस्वरूप नथी मानता अने पूर्व सयोगो सत्तामा छे, तेने अबध परिणामे भोगवी रह्या छे,

ते आत्माओ स्वभावनी उत्तरोत्तर ऊर्ध्वश्रेणी पामी शुद्ध चेतनभावने पामशे, आम कहेवु सप्रमाण छे. कारण अतीत काळे तेम थयु छे, वर्तमान काळे तेम थाय छे, अनागत काळे तेम ज थशे.

कोई पण आत्मा उदयी कर्मने भोगवता समत्वश्रेणीमां प्रवेश करी अबध परिणामे वर्तशे, तो खचीत चेतनशुद्धि पामशे.

आत्मा विनयी थई, सरळ अने लघुत्वभाव पामी सदैव सत्पुरुषना चरणकमळ प्रति रह्यो, तो जे महात्माओने नमस्कार कर्यो छे ते महात्माओनी जे जातिनी रिद्धि छे, ते जातिनी रिद्धि संप्राप्य करी शकाय.

अनंतकाळमा का तो सत्पात्रता थई नथी अने का तो सत्पुरुष (जेमा सद्‌गुरुत्व, सत्संग अने सत्कथा ए रह्या छे) मळ्या नथी; नही तो निश्चय छे, के मोक्ष हथेळीमा छे, ईषत्प्राग्भारा एटले सिद्ध-पृथ्वी पर त्यार पछी छे. एने सर्व शास्त्र पण संमत छे, (मनन करशो) अने आ कथन त्रिकाळ सिद्ध छे

ववाणिया, फाल्गुन सुद ९, १९४५

(११)

कर्मगति विचित्र छे निरतर मत्री, प्रमोद, करुणा अने उपेक्षा भावना राखशो

मत्री एटले सव जगतथी निर्वैरबुद्धि, प्रमोद एटले कोई पण आत्माना गुण जोई हर्ष पामवो, करुणा एटले ससारतापथी दु खी आत्माना दु खथी अनुकपा पामवी, अने उपेक्षा एटले नि स्पृह भाव जगतना प्रतिबधने विसारी आत्महितमा आववु ए भावनाओ कल्याणमय अने पात्रता आपनारी छे

मोरबी, चत्र वद ९, १९४५

---

(१२)

बीजु काई शोध मा मात्र एक सत्पुरुषने शोधीने तेना चरणकमळमा सर्व भाव अर्पण करी दई वर्त्यो जा पछी जो मोक्ष न मळे तो मारी पासेथी लेजे

सत्पुरुष ए ज छे के निशदिन जेने आत्मानो उपयोग छे, शास्त्रमा नथी अने साभळ्यामा नथी, छता अनुभवमा आवे तेवु जेनु कथन छे, अतरग स्पृहा नथी एवो जेनो

गुप्त आचरणा छे बाकी तो कई कह्यु जाय तेम नथी अने आम कर्या विना तारो कोई काळे छूटको थनार नथी, आ अनुभवप्रवचन प्रमाणिक गण.

एक सत्पुरुषने राजी करवामां, तेनी सर्व इच्छाने प्रशसवामा, ते ज सत्य मानवामा आखी जिंदगी गई तो उत्कृष्टमा उत्कृष्ट पंदर भवे अवश्य मोक्षे जईश.

मोहमयी, आसो वदी १०, शनि, १९४५

---

(१२)

निराबाधपणे जेनी मनोवृत्ति वह्या करे छे; संकल्प-विकल्पनी मदता जेने थई छे, पचविषयथी विरक्तबुद्धिना अकुरो जेने फूट्या छे; क्लेशना कारण जेणे निर्मूळ कर्यां छे, अनेकात दृष्टियुक्त एकातदृष्टिने जे सेव्या करे छे; जेनी मात्र एक शुद्ध वृत्ति ज छे, ते प्रतापी पुरुष जयवान वर्तो.

आपणे तेवा थवानो प्रयत्न करवो जोईए.

वि० सं० १९४५

गाई, आटलु तारे अवश्य करवा जेवु छे —

१ देहमा विचार करनार बेठो छे ते देहथी भिन्न छे ? ते सुखी छे के दु खी ? ए सभारी ले

२ दु ख लागशे ज, अने दु खना कारणो पण तने दृष्टि गोचर थशे, तेम छता कदापि न थाय तो ;मारा० कोई भागने वाची जा, एटले सिद्ध थशे ते टाळवा माटे जे उपाय छ ते एटलो ज के तेथी बाह्याभ्यतर रहित थवु

३ रहित थवाय छे, ओर दशा अनुभवाय छे ए प्रतिना पूर्वक कहु छु

४ ते साधन माटे सर्वसगपरित्यागी थवानी आवश्यकता छे निग्रन्थ सद्‌गुरुना चरणमां जईने पडवु योग्य छे

५ जेवा भावथी पडाय तेवा भावथी सव काळ रहेवा माटेनी विचारणा प्रथम करी ले जो तने पूर्वकर्म बळवान लागता होय तो अत्यागी, देशत्यागी रहीने पण ते वस्तुने विसारीश नही

६ प्रथम गमे तेम करी तु तारु जीवन जाण जाणवु था माटे के भविष्यसमाधि थवा अत्यारे अप्रमादी थवु

७ ते आयुष्यनो मानसिक आत्मोपयोग तो निर्वेदमा राख.

८ जीवन बहु टूकु छे, उपाधि बहु छे, अने त्याग थई शके तेम नथी तो नीचेनी वात पुन. पुन. लक्षमा राख.

१ जिज्ञासा ते वस्तुनी राखवी

२ संसारने बंधन मानवुं.

३ पूर्वकर्म नथी एम गणी प्रत्येक धर्म सेव्या जवो. तेम छता पूर्वकर्म नडे तो शोक करवो नही.

४ देहनी जेटली चिंता राखे छे तेटली नही पण एथी अनत गणी चिंता आत्मानी राख, कारण अनत भव एक भवमा टाळवा छे.

५ न चाले तो प्रतिश्रोती था

६ जेमाथी जेटलु थाय तेटलु कर.

७ परिणामिक विचारवाळो था.

८ अनुत्तरवासी थईने वर्त.

९ छेवटनु समये समये चूकीश नही. ए ज भळामण अने ए ज धर्म.

वि० स० १९४६

समजीने अल्पभाषी थनारने पश्चात्ताप करवानो थोडो ज अवसर सभवे छे

हे नाथ ! सातमी तमतमप्रभा नरकनी वेदना मळी होत तो वखते सम्मत करत, पण जगतनी मोहिनी सम्मत थती नथी

पूर्वना अशुभ कर्म उदय आव्ये वेदता जो शोच करो छो तो हव ए पण ध्यान राखो के नवा बाधता परिणामे तवा तो बधाता नथी ?

आत्माने ओळखवो होय तो आत्माना परिचयी थवु, परवस्तुना त्यागी थवु

जेटला पातानी पुद्गलिक मोटाई इच्छे छे, तेटला हलका सभवे

प्रशस्त पुरुषनी भक्ति करो, तनु स्मरण करो, गुण चितन करो

मुबई, वि० स० १९४६

सहज

जे पुरुष आ ग्रंथना सहज नोंध करे छे, ते पुरुष माटे प्रथम सहज ते ज पुरुष ठरे छे.

तेनी हमणा एवी दशा अंतरंगमां रही छे के कांईक विना सर्व संसारी इच्छानी पण तेणे विस्मृति करी नाखी छे.

ते कांईक पाम्यो पण छे, अने पूर्णनो परम मुमुक्षु छे, छेल्ला मार्गनो नि शंक जिज्ञासु छे.

हमणा जे आवरणो तेने उदय आव्यां छे, ते आवरणोथी एने खेद नथी, परंतु वस्तुभावमां थती मंदतानो खेद छे.

ते धर्मनी विधि, अर्थनी विधि, कामनी विधि, अने तेने आधारे मोक्षनी विधिने प्रकाशी शके तेवो छे. घणा ज थोडा पुरुषोने प्राप्त थयो हशे एवो ए काळनो क्षयोपशमी पुरुष छे.

तेने पोतानी स्मृति माटे गर्व नथी, तर्क माटे गर्व नथी; तेम ते माटे तेनो पक्षपात पण नथी; तेम छतां कंईक वहार राखवुं पडे छे, तेने माटे खेद छे.

तेनु अत्यारे एक विषय विना बीजा विषय प्रति ठेकाणु नथी ते पुरुष जोके तीक्ष्ण उपयोगवाळो छे, तथापि ते तीक्ष्ण उपयोग बीजा कोई पण विषयमां वापरवा ते प्रीति धरावतो नथी

हा नो १-४

---

(१७)

नीचेना नियमो पर बहु लक्ष आपवु —

१ एक वात करता तेनी अपूर्णतामा अवश्य विना बीजी वात न करवी जोईए

२ कहेनारनी वात पूर्ण साभळवी जोईए

३ पोते धीरजथी तेनो सदुत्तर आपवो जोईए

४ जेमा आत्मश्लाघा के आत्महानि न होय ते वात उच्चारवी जोईए

५ धर्म सबंधी हमणा बहु ज ओछी वात करवी

६ लोकोथी धर्मव्यवहारमा पडवु नही

मुबई, पोष सुद ३, बुध, १९४६

---

(१८)

महावीरना बोधने पात्र कोण ?

१ सत्पुरुषना चरणनो इच्छक,

२ सदैव सूक्ष्म बोधनो अभिलाषी,

३ गुण पर प्रशस्तभाव राखनार,

४ ब्रह्मव्रतमा प्रीतिमान,

५ ज्यारे स्वदोष देखे त्यारे तेने छेदवानो उपयोग राखनार,

६ उपयोगथी एक पळ पण भरनार,

७ एकातवासने वखाणनार,

८ तीर्थादि प्रवासनो उछरंगी,

९ आहार, विहार, निहारनो नियमी,

१० पोतानी गुरुता दबावनार,

एवो कोई पण पुरुष ते महावीरना बोधने पात्र छे, सम्यक्दशाने पात्र छे. पहेला जेवु एक्के नथी.

मुबई, फागण सुद ६, १९४६

(१९)

हे जीव तु भ्रमा मा, तने हित कहु छु

अतरमा सुख छे, बहार शोधवाथी मळशे नही

अतरनु सुख अतरनी समश्रेणीमा छे स्थिति थवा माटे बाह्य पदार्थोनु विस्मरण कर, आश्चय भूल

समश्रेणी रहेवी बहु दुलभ छे, निमित्ताधीन वृत्ति फरी फरी चलित थई जशे, न थवा अचळ गमीर उपयोग राख

आ क्रम यथायोग्यपणे चाल्यो आव्यो तो तु जीवन त्याग करतो रहीश, मूझाईश नही, निभय थईश

भ्रमा मा तने हित कहु छु

आ मारु छे एवा भावनी व्याख्या प्राये न कर

आ तेनु छे एम मानी न बेस

आ माटे आम करवु छे, ए भविष्यनिर्णय न करी राख

आ माटे आम न थयु होत तो सुख थात एम स्मरण न कर

आटलु आ प्रमाणे होय तो सारु एम आग्रह न करी राख

आणे मारा प्रति अनुचित कर्युं एवुं सभारता न शीख

आणे मारा प्रति उचित कर्युं एवु स्मरण न राख.

आ मने अशुभ निमित्त छे एवो विकल्प न कर.

आ मने शुभ निमित्त छे एवी दृढता मानी न वेस.

आ न होत तो हु वंधात नही एम अचळ व्याख्या नही करीश.

पूर्वकर्म वळवान छे, माटे आ वधो प्रसग मळी आव्यो एवुं एकातिक ग्रहण करीश नही.

पुरुषार्थनो जय न थयो एवी निराशा स्मरीश नही.

वीजाना दोषे तने वधन छे एम मानीश नही

तारे निमित्ते पण वीजाने दोष करतो भुलाव.

तारे दोषे तने वधन छे ए सतनी पहेली शिक्षा छे

तारो दोष एटलो ज के अन्यने पोतानु मानवुं, पोते पोताने भूली जवु

ए वधामा तारो लागणी नथी, माटे जुदे जुदे स्थळे तें सुखनी कल्पना करी छे हे मूढ ! एम न कर—

ए तने ते हित कह्यु.

अतरमां सुख छे.

जगतमा कोई एवु पुस्तक वा ?स वा काई एवो साक्षी आहित तमने एम नथी कही शकतो के आ सुखनो मार्ग छे, वा तमारे आम वतवु वा सवने एक ज क्रमे ऊगवु ए ज सूचवे छे के त्या कई प्रबळ विचारणा रही छे

एक भोगी थवानो बोध करे छे
एक योगी थवानो बोध करे छे
ए बेमाथी कोने सम्मत करीशु ?
बन्ने शा माटे बोध कर छे ?
बन्ने कोन बोध कर छे ?
कोना प्रेरवाथी करे छे ?
कोईने कोईनो अने कोईन कोईनो बोध का लागे छे ?
एना कारणो शा छे ?
तेनो साक्षी कोण छे ?
तमे शु वाच्छो छो ?
ते क्याथी मळशे वा शामा छे ?
ते कोण मेळवशे ?
क्या थईने लावशो ?
लाववानु कोण। शीखवशे ?

वा शीख्या छीए ?
शीख्या छो तो क्याथी शीख्या छो ?
अपुनर्वृत्तिरूपे शीख्या छो ?
नही तो शिक्षण मिथ्या ठरशे.
जीवन शु छे ?
जीव शु छे ?
तमे शु छो ?
तमारी इच्छापूर्वक का नथी थतुं ?
ते केम करी शकशो ?
बाधता प्रिय छे के निराबाधता प्रिय छे ?
ते क्या क्या केम केम छे ?
एनो निर्णय करो

अंतरमां सुख छे; बहारमां नथी. सत्य कहुं छुं.

हे जीव, भूल मा, तने सत्य कहुं छु
सुख अतरमा छे; ते बहार शोधवाथी नही मळे.

अतरनु सुख अतरनी स्थितिमा छे, स्थिति थवा माटे बाह्य पदार्थो सबधीनु आश्चर्य भूल.

स्थिति रहेवी बहु विकट छे, निमित्ताधीन फरी फरी वृत्ति चलित थई जाय छे एनो दढ उपयोग राखवो जोईए

ए क्रम यथायोग्य चलाव्यो आवीश तो तु मूझाईश नही, निर्भय थईश

हे जीव ! तु भूल मा वखते वखत उपयोग चूकी कोईने रजन करवामा, कोईथी रजन थवामा, वा मननी निर्बळताने लीधे अन्य पासे मद थई जाय छे ए भूल थाय छे, ते न कर मुबई, फागण, १९४६

(२०)

विश्वासथी वर्तो अन्यथा वर्तनारा आजे पस्तायो 'कर छे'[1]

मुबई, अषाड वद ४, रवि १९४६

(२१)

१ 'अणु छनु[2] 'बाधा वगरनु'[3] आ जगत तो जुआ

मुबई, अषाड वद ११, शनि, १९४६

पाठातर १ करावे छे २ अणछनु ३ बाधा वगरनु

२ दृष्टि एवी स्वच्छ करो के जेमां सूक्ष्ममां सूक्ष्म दोष पण देखाई शके, अने देखायाथी क्षय थई शके.

मुंबई, अषाढ वद १२, रवि, १९४६

---

(२२)

सहज प्रकृति

१ परहित ए ज निजहित समजवुं, अने परदु:ख ए पोतानु दु:ख समजवुं

२ सुख दु ख ए बन्ने मननी कल्पना छे.

३ क्षमा ए ज मोक्षनो भव्य दरवाजो छे

४ सघळा साथे नम्रभावथी वर्तवुं ए ज खरु भूषण छे

५ शांत स्वभाव ए ज सज्जनतानु खरुं मूळ छे.

६ खरा स्नेहीनी चाहना ए सज्जनतानु खास लक्षण छे

७ दुर्जननो ओछो सहवास

८ विवेकबुद्धिथी सघळु आचरण करवुं.

९ द्वेषभाव ए वस्तु झेररूप मानवी

१० धर्मकर्ममा वृत्ति राखवी.

११ नीतिना बाधा पर पग न मूकवो.

१२ जितेंद्रिय थवु.

१३ ज्ञानचर्चा अने विद्याविलासमा तथा शास्त्राध्ययनमा गूथावु

१४ गभीरता राखवी

१५ ससारमा रह्या छता ने ते नीतिथी भोगवता छता, विदेही दशा राखवी

१६ परमात्मानी भक्तिमा गूथावु

१७ परनिंदा ए ज सबळ पाप मानवु

१८ दुर्जनता करी फावबु ए ज हारवु, एम मानवु

१९ आत्मज्ञान अने सज्जनसगत राखवा

---

(२३)

वचनावली

१ जीव पोताने भूली गयो छे, अने तेथी सत्सुखनो तेने वियोग छे, एम सव धर्म सम्मत कह्यु छे

२ पोताने भूली गयारूप अज्ञान, ज्ञान मळवाथी नाश थाय छे, एम निःशक मानवु

३ ज्ञाननी प्राप्ति ज्ञानी पासेथी थवी जोईए, ए स्वाभाविक समजाय छे, छता जीव लोकलज्जादि

कारणोथी अज्ञानीनो आश्रय छोडतो नथी, ए ज अनंतानुबंधी कषायनुं मूळ छे.

४ ज्ञाननी प्राप्ति जेणे इच्छवी, तेणे ज्ञानीनी इच्छाए वर्तवुं एम जिनागमादि सर्व शास्त्र कहे छे. पोतानी इच्छाए प्रवर्तता अनादि काळथी रखडयो.

५ ज्या सुधी प्रत्यक्ष ज्ञानीनी इच्छाए, एटले आज्ञाए नही वर्ताय, त्या सुधी अज्ञाननी निवृत्ति थवी संभवती नथी.

६ ज्ञानीनी आज्ञानु आराधन ते करी शके के जे एकनिष्ठाए, तन, मन, धननी आसक्तिनो त्याग करी तेनी भक्तिमा जोडाय.

७ जोके ज्ञानी भक्ति इच्छता नथी परंतु मोक्षाभिलाषीने ते कर्या विना उपदेश परिणमतो नथी, अने मनन तथा निदिध्यासनादिनो हेतु थतो नथी, माटे मुमुक्षुए ज्ञानीनी भक्ति अवश्य कर्तव्य छे एम सत्पुरुषोए कह्यु छे.

८ आमा कहेली वात सर्व शास्त्रने मान्य छे.

९ ऋषभदेवजीए अठ्ठाणु पुत्रोने त्वराथी मोक्ष थवानो ए ज उपदेश कर्यो हतो.

१० परीक्षित राजाने शुकदेवजीए ए ज उपदेश कर्यो छे

११ अनंत काळ सुधी जीव निज छंदे चाली परिश्रम करे तोपण पोते पोताथी ज्ञान पामे नहीं परंतु ज्ञानीनी आज्ञानो आराधक अंतर्मुहूर्तमां पण केवळज्ञान पामे

१२ शास्त्रमां कहेली आज्ञाओ परोक्ष छे अने ते जीवने अधिकारी थवा माटे कही छे, मोक्ष थवा माटे ज्ञानीनी प्रत्यक्ष आज्ञा आराधवी जोईए

१३ आ ज्ञानमार्गनी श्रेणी कही, ए पाम्या विना बीजा मार्गथी मोक्ष नथी

१४ ए गुप्त तत्त्वने जे आराधे छे, ते प्रत्यक्ष अमृतने पामी अभय थाय छे इति शिवम्

मुंबई, माह सुद, १९४७

---

(२४)

पुराणपुरुषने नमोनम

आ लोक त्रिविध तापथी आकुळव्याकुळ छे झांझवाना पाणीने लेवा दोडी तृषा छिपाववा इच्छे छे, एवो दीन छे अज्ञानने लीधे स्वस्वरूपनु विस्मरण थई जवाथी भयंकर

परिभ्रमण तेने प्राप्त थयुं छे समये समये अतुल खेद, ज्वरादिक रोग, मरणादिक भय, वियोगादिक दु.खने ते अनुभवे छे, एवी अशरणतावाळा आ जगतने एक सत्पुरुष ज शरण छे, सत्पुरुषनी वाणी विना कोई ए ताप अने तृषा छेदी शके नही एम निश्चय छे माटे फरी फरी ते सत्पुरुषना चरणनु अमे ध्यान करीए छीए.

संसार केवळ अशातामय छे. कोई पण प्राणीने अल्प पण शाता छे, ते पण सत्पुरुषनो ज अनुग्रह छे, कोई पण प्रकारना पुण्य विना शातानी प्राप्ति नथी, अने ए पुण्य पण सत्पुरुषना उपदेश विना कोईए जाण्युं नथी; घणे काळे उपदेशेलु ते पुण्य रूढिने आधीन थई प्रवर्ते छे; तेथी जाणे ते ग्रथादिकथी प्राप्त थयेलु लागे छे, पण एनु मूळ एक सत्पुरुष ज छे, माटे अमे एम ज जाणीए छीए के एक अश शाताथी करीने पूर्णकामता सुधीनी सर्व समाधि तेनु सत्पुरुष ज कारण छे, आटली बधी समर्थता छता जेने कंई पण स्पृहा नथी, उन्मत्तता नथी, पोतापणु नथी, गर्व नथी, गारव नथी, एवा आश्चर्यनी प्रतिमारूप सत्पुरुषने अमे फरी फरी नामरूपे स्मरीए छीए.

त्रिलोकना नाथ वश थया छे जेने एवा छता पण

एवी कोई अटपटी दशायी वर्ते छे के जेनु सामान्य मनुष्य ने ओळखाण थवु दुलभ छे, एवा सत्पुरुषने अमे फरी फरी स्तवीए छीए

एक समय पण केवळ असगपणाथी रहेवु ए त्रिलोकने वश करवा करता पण विकट काय छे, तेवा असगपणाथी त्रिकाळ जे रह्या छ, तेवा सत्पुरुषना अत करण, ते जोई अमे परमाश्चय पामी नमीए छीए

हे परमात्मा! अमे तो एम ज मानीए छीए के आ काळमा पण जीवनो मोक्ष होय तेम छता जन ग्रथोमा क्वचित् प्रतिपादन थयु छे ते प्रमाणे आ काळे मोक्ष न होय, तो आ क्षत्रे ए प्रतिपादन तु राख, अने अमने मोक्ष आपवा करता सत्पुरुषना ज चरणनु ध्यान करीए अने तेनी समीप ज रहीए एवो याग आप

हे पुरुषपुराण! अमे तारामा अने सत्पुरुषमा कई भद होय एम समजता नथी, तारा करता अमने तो सत्पुरुप ज विशेष लागे छे, कारण के तु पण तेने आधीन ज रह्यो छ अने अमे सत्पुरुषने ओळख्या विना तने ओळखी शक्या नहो, ए ज तारु दुघटपणु अमने सत्पुरुष प्रत्ये प्रेम उपजाव छ कारण के तु वश छता पण तेओ

उन्मत्त नथी, अने ताराथी पण मळ्ळ छे, माटे हवे तुं कहे तेम करीए.

हे नाथ! तारे गोठे न आगळ्यु के अमे तारा करता पण सत्पुरुषने विशेष स्तवीए छीए. जगत आखुं तने स्तवे छे; तो पछी अमे एक तारा सामा बेठा रहीए तेथी तेमने क्यां स्तवननी आकांक्षा छे, अने क्यां तने न्यूनपणु पण छे?

ज्ञानी पुरुषो त्रिकाळनी वात जाणतां छतां प्रगट करता नथी, एम आपे पूछ्युं, ते संबंधमां एम जणाय छे के ईश्वरी इच्छा ज नथी के घणुं करीने पारमार्थिक वात सिवाय ज्ञानी शिष्यो त्रिकाळिक वात प्रसिद्ध न करे, अने ज्ञानीनी पण अंतर्-इच्छा एवी ज जणाय छे. जेनी कोई पण प्रकारनी आकांक्षा नथी, एवा ज्ञानीपुरुषने कंई कर्तव्यरूप नथी एवा योगमां कंई उदयमां आवे तेटलुं ज करे छे. अमे तो कंई एवुं ज्ञान धरावता नथी के जेथी त्रणे काळ सर्वथा प्रकारे जणाय, अने अमने एवा ज्ञाननो कंई विशेष लक्ष नथी; अमने तो वास्तविक स्वरूपनी भक्ति अने असंगता, ए प्रिय छे, ए ज विज्ञापन.

मुंबई, फागण सुद ४, शनि, १९४७

(२५)

जीव स्वभाव (पाताना समजणनी भ्रे) दोपित छे, त्या पछी तेना दोष भणी जोवु ए अनुकपानो त्याग करवा जेवु थाय छ, अने मोटा पुरुपो तेम आचरवा इच्छता नथी कळियुगमा असत्सगथी अने अणसमजणथी भूल्भरले रस्ते न दाराय एम बनवु बहु मुस्केल छ

मुबई, असाड वद ४, १९४७

---

(२६)

जे जे प्रकार आत्माने चितन कर्यो होय ते ते प्रकारे ते प्रतिभासे छे

विपर्यासपणाथी मढताने पामेली विचारशक्तिवाळा जीवन आत्मानु नित्यपणु भासतु नथी एम घणु करीने देखाय छे, तेम थाय छे, त यथार्थ छे, केमके अनित्य एवा विषयने विषे आत्मबुद्धि होवाथी पोतानु पण अनित्यपणु भासे छे

विचारवानने आत्मा विचारवान लागे छे शून्यपणे चितन करनारने आत्मा शून्य लागे छे, अनित्यपणे चितन

करनारने अनित्य लागे छे, नित्यपणे चिंतन करनारने नित्य लागे छे. हा. नो १-६०

---

(२७)

हे परमकृपाळु देव ! जन्म, जरा, मरणादि सर्व दुखोनो अत्यत क्षय करनारो एवो वीतराग पुरुपनो मूळ मार्ग आप श्रीमदे अनत कृपा करी मने आप्यो, ते अनत उपकारनो प्रतिउपकार वाळवा हुं सर्वथा असमर्थ छु; वळी आप श्रीमत् कंई पण लेवाने सर्वथा नि स्पृह छो, जेथी हु मन, वचन, कायानी एकाग्रताथी आपना चरणारविन्दमा नमस्कार करु छु आपनी परमभक्ति अने वीतराग पुरुषना मूळधर्मनी उपासना मारा हृदयने विषे भवपर्यंत अखड जाग्रत रहो एटलु मागुं छु ते सफळ थाओ ! ॐ शाति. शाति. शातिः आश्विन, १९४८

---

(२८)

मुमुक्षु जीवने आ काळने विषे संसारनी प्रतिकूळ दशाओ प्राप्त थवी ते तेने ससारथी तरवा बराबर छे. अनंतकाळथी अभ्यासेलो एवो आ संसार स्पष्ट विचारवानो

थवत प्रतिकूळ प्रसगे विनोदे होय छे, ए वात निश्चय करवा याग्य छे

ए (प्रतिकूळ) प्रसग जो समताए वेदवामा आवे तो जीवने निर्वाण समीपनु साधन छे व्यावहारिक प्रसगोनु नित्य चित्रविचित्रपणु छे मात्र कल्पनाए तेमा सुख अने कल्पनाए दु ख एवी तेनी स्थिति छे अनुकूळ कल्पनाए ते अनुकूळ भासे छे, प्रतिकूळ कल्पनाए ते प्रतिकूळ भासे छे, अने ज्ञानीपुरुषोए ते बय कल्पना करवानो ना कही छे विचारवानने शोक घटे नही, एम श्री तीर्थकर कहता हता

मुबई, फागण १९५०

---

(७९)

नित्यनियम

ॐ श्रीमत्परमगुरुभ्यो नम

सवारमा ऊठी ईर्यापथिकी प्रतिक्रमी रात्रि दिवस जे कई अढार पापस्थानकमा प्रवृत्ति थई होय, सम्यग्ज्ञान दर्शन चारित्र सबधी तथा पचपरमपद सबधी जे कई अपराध थयो होय, कोई पण जीव प्रति किंचित्मात्र पण

अपराध कर्यो होय, ते जाणता अजाणता थयो होय, ते सर्व क्षमाववा, तेने निदवा, विशेप निदवा, आत्मामांथी ते अपराध विसर्जन करी नि शल्य थवुं रात्रिए शयन करती वखते पण ए ज प्रमाणे करवु

श्री सत्पुरुषना दर्शन करी चार घडी माटे सर्व सावद्य व्यापारथी निवर्ती एक आसन पर स्थिति करवी. ते समयमां 'परमगुरु' ए शब्दनी पांच माळाओ गणी बे घडी सुधी सत्शास्त्रनुं अध्ययन करवुं त्यार पछी एक घडी कायोत्सर्ग करी श्री सत्पुरुषोना वचनोनु ते कायोत्सर्गमा रटण करी सद्वृत्तिनु अनुसधान करवु. त्यार पछी अरधी घडीमा भक्तिनी वृत्ति उजमाळ करनारा एवा पदो (आज्ञानुसार) उच्चारवा अरधी घडीमा 'परमगुरु' शब्दनु कायोत्सर्गरूपे रटण करवु, अने 'सर्वज्ञदेव' ए नामनी पाच माळा गणवी.

हाल अध्ययन करवा योग्य शास्त्रो :—वैराग्यशतक, इद्रियपराजयशतक, शातसुधारस, अध्यात्मकल्पद्रुम, योगदृष्टिसमुच्चय, नवतत्त्व, मूळपद्धति कर्मग्रथ, धर्मबिंदु, आत्मानुशासन, भावनाबोध, मोक्षमार्गप्रकाश, मोक्षमाळा, उपमितिभवप्रपंच, अध्यात्मसार, श्री आनदघनजी

चोवीशीमाथी नीचेना स्तवनो १, ३, ५, ७, ८, ९, १०, १३, १५ १६, १७, १९, २२

सात व्यसन (जुगटु मास, मदिरा वेश्यागमन, शिकार चोरी, परस्त्री) नो त्याग

"जूवा आमिष, मदिरा दारी,
आहटर, चोरी, परनारी,
एहि सप्त व्यसन दुःखदाई
दुरितमळ दुर्गतिके जाई"

ए सप्तव्यसननो त्याग रात्रिभोजननो त्याग अमुक सिवाय सर्व वनस्पतिनो त्याग अमुक तिथिए अत्याग वनस्पतिना पण प्रतिबध अमुक रसनो त्याग अब्रह्मचर्य नो त्याग, परिग्रहपरिमाण

शरीरमा विशेष रोगादि उपद्रवथी, बेभानपणाथी, राजा अथवा देवादिना बळात्कारथी अत्रे विदित करेल नियममा प्रवर्तवा अशक्त थवाय तो ते माटे पश्चात्तापनु स्थानक समजवु स्वेच्छाए कराने ते नियममा न्यूनाधिकता कइ पण करवानी प्रतिज्ञा सत्पुरुषनी आज्ञाए ते नियममा फरफार करवाथी नियमभग नही वगाण, १९५०

---

(३०)

सर्वं विभावथी उदासीन अने अत्यंत शुद्ध निजपर्यायने सहजपणे आत्मा भजे, तेने श्री जिने तीव्र ज्ञान दशा कही छे जे दशा आव्या विना कोई पण जीव बंधनमुक्त थाय नही, एवो सिद्धांत श्री जिने प्रतिपादन कर्यो छे, जे अखंड सत्य छे.

कोईक जीवथी ए गहन दशानो विचार थई शकवा-योग्य छे, केमके अनादिथी अत्यत अज्ञान दशाए आ जीवे प्रवृत्ति करी छे, ते प्रवृत्ति एकदम असत्य, असार समजाई, तेनी निवृत्ति सूझे, एम बनवु बहु कठण छे; माटे ज्ञानी-पुरुषनो आश्रय करवारूप भक्तिमार्ग जिने निरूपण कर्यो छे, के जे मार्ग आराधवाथी सुलभपणे ज्ञानदशा उत्पन्न थाय छे.

ज्ञानीपुरुषना चरणने विषे मन स्थाप्या विना ए भक्तिमार्ग सिद्ध थतो नथी, जेथी फरी फरी ज्ञानीनी आज्ञा आराधवानुं जिनागममा ठेकाणे ठेकाणे कथन कर्युं छे

ज्ञानी पुरुषना चरणमा मननुं स्थापन थवु प्रथम कठण पडे छे, पण वचननी अपूर्वताथी, ते वचननो विचार करवाथी, तथा ज्ञानी प्रत्ये अपूर्व दृष्टिए जोवाथी, मननु स्थापन थवुं सुलभ थाय छे

ज्ञानीपुरुषना आश्रयमा विरोध करनारा पंचविषयादि दोषो छे ते दोष थवाना साधनथी जेम बने तम दूर रहेवु अने प्राप्त साधनमा पण उदासीनता राखवी अथवा ते ते साधनोमाथी अहबुद्धि छोडी दई, रोगरूप जाणी प्रवतवु घटे अनादि दोषनो एवा प्रसगमा विशेष उदय थाय छे केमके आत्मा ते दोषने छेदवा पोतानी सन्मुख लावे छे के, ते स्वरूपातर करी तेने आकर्षे छे अने जागृतिमा शिथिल करी नाखी पोताने विषे एकाग्रबुद्धि करावी दे छे ते एकाग्रबुद्धि एवा प्रकारनी होय छे के 'मने आ प्रवृत्तियो तेवो विशेष बाध नही थाय, हु अनुक्रमे तेने छोडीश अने करता जागृत रहीश' ए आदि भ्रातदशा ते दोष कर छे जेथी ते दोषना सबध जीव छोडतो नथी, अथवा ते दोष वधे छे तेनो लक्ष तेने आवी शकतो नथी

ए विरोधी साधननो बे प्रकारथी त्याग थई शके छे एक ते साधनना प्रसगनी निवृत्ति, बीजो प्रकार विचारथी करी तेनु तुच्छपणु समजावु

विचारथी करी तुच्छपणु समजावा माटे प्रथम ते पचविषयादिना साधननी निवृत्ति करवी वधार योग्य छ, केमके तेथी विचारनो अवकाश प्राप्त थाय छे

ते पंचविपयादि साधननी निवृत्ति सर्वथा करवानुं जीवनु बळ न चालतु होय त्यारे, क्रमेक्रमे, देशेदेशे तेनो त्याग करवो घटे, परिग्रह तथा भोगोपभोगना पदार्थनो अल्प परिचय करवो घटे. एम करवाथी अनुक्रमे ते दोप मोळा पडे, अने आश्रयभक्ति दृढ थाय; तथा ज्ञानीना वचनोनु आत्मामा परिणाम थई तीव्रज्ञानदशा प्रगटी जीवन्मुक्त थाय

जीव कोईक वार आवी वातनो विचार करे, तेथी अनादि अभ्यासनु बळ घटवु कठण पडे, पण दिन दिन प्रत्ये, प्रसगे-प्रसगे अने प्रवृत्ति प्रवृत्तिए फरी फरी विचार करे, तो अनादि अभ्यासनुं बळ घटी, अपूर्व अभ्यासनी सिद्धि थई सुलभ एवो आश्रयभक्तिमार्ग सिद्ध थाय

मुंबई, फागण वद ७, रवि, १९५१

---

(३१)

जे कषाय परिणामथी अनत ससारनो सबध थाय ते कषाय परिणामने जिनप्रवचनमा 'अनतानुबधी' सज्ञा कही छे जे कषायमा तन्मयपणे अप्रशस्त (माठा) भावे तीव्रोपयोगे आत्मानी प्रवृत्ति छे, त्या 'अनतानुबधी'नो सभव

छे मुख्य करीने अहो कह्या छे ते स्थानके ते कषायनो विशेष संभव छे सनदव सदगुरु अने सत्धर्मनो जे प्रकारे द्रोह थाय, अवज्ञा थाय, तथा विमुखभाव थाय, ए आदि प्रवृत्तिथी तमज असतदेव, असतगुरु तथा असत्धर्मना जे प्रकार आग्रह थाय, त सबधी कृतकृत्यता मान्य थाय, ए आदि प्रवत्तिथी प्रवतता 'अनतानुबधी कषाय' सभव छे, अथवा ज्ञानीना वचनमा स्त्रीपुत्रादि भावोने जे मर्यादा पछी इच्छना निर्ध्वस परिणाम कह्या छे, ते परिणामे प्रवतना पण 'अनतानुबधी' होवा योग्य छे सक्षेपमा 'अनतानुबधी कषाय'नी व्याख्या ए प्रमाणे जणाय छे

मुबई, असाड सुद ११, बुध, १९५१

अनतानुबधी क्रोध, मान, माया अने लोभ सम्यक्त्व सिवाय गया सभवे नहो एम जे कहेवाय छे ते यथार्थ छे ससारी पदार्थोने विषे जीवने तीव्र स्नेह विना एवा क्रोध मान, माया अने लोभ होय नही, के जे कारण तेने अनत ससारनो अनुबध थाय जे जोवने ससारी पदार्थो विषे तीव्र स्नेह वततो होय तने कोई प्रसगे पण अनंतानुबधी चतुष्कमाथी कोई पण उदय थवा सभवे छ अने ज्या सुधी तीव्र स्नेह ते पदार्थोमा होय त्या सुधी अवश्य परमार्थमार्ग

वाळो जीव ते न होय. परमार्थमार्गनुं लक्षण ए छे के अपरमार्थने भजता जीव बधा प्रकारे कायर थया करे, सुखे अथवा दु.खे दु'खमां कायरपणु कदापि बीजा जीवोनुं पण संभवे छे, पण संसारसुखनी प्राप्तिमा पण कायरपणु, ते सुखनुं अणगमवापणु, नीरसपणु परमार्थमार्गी पुरुषने होय छे

तेवु नीरसपणु जीवने परमार्थज्ञाने अथवा परमार्थ-ज्ञानीपुरुषना निश्चये थवु संभवे छे, बीजा प्रकारे थवु संभवतु नथी परमार्थज्ञाने अपरमार्थरूप एवो आ ससार जाणी पछी ते प्रत्ये तीव्र एवो क्रोध, मान, माया के लोभ कोण करे ? के क्याथी थाय ? जे वस्तुनु माहात्म्य दृष्टि-माथी गयु ते वस्तुने अर्थे अत्यत क्लेश थतो नथी ससार-ने विषे भ्रान्तिपणे जाणेलु सुख ते परमार्थज्ञाने भ्रान्ति ज भासे छे, अने जेने भ्रान्ति भासी छे तेने पछी तेनु माहा-त्म्य शु लागे ? एवी माहात्म्यदृष्टि परमार्थज्ञानीपुरुषना निश्चयवाळा जीवने होय छे, तेनु कारण पण ए ज छे. कोई ज्ञानना आवरणने कारणे जीवने व्यवच्छेदक ज्ञान थाय नहो, तथापि सामान्य एवु ज्ञान, ज्ञानीपुरुषनी श्रद्धा-रूपे थाय छे वडना बीजनी पेठे परमार्थ-वडनु बीज ए छे.

तीव्र परिणामे, भवभयरहितपणे ज्ञानीपुरुष के सम्यक् दृष्टि जीवने क्रोध, मान, माया के लाभ होय नही जे ससारअर्थे अनुबध कर छे, ते करता परमार्थने नामे, भ्रान्तिगत परिणामे असद्‌गुरु, देव धर्मने भजे छे, ते जीवने घणु करी अनतानुबधी क्रोध, मान, माया, लोभ थाय छे, कारण के बीजी ससारनी क्रियाओ घणु करी अनत अनुबध करवावाळी नथी, मात्र अपरमार्थने परमार्थ जाणी आग्रह जीव भज्या करे, ते परमार्थज्ञानी एवा पुरुष प्रत्ये, देव प्रत्ये, धर्म प्रत्ये निरादर छे, एम कहेवामा घणु करी यथार्थ छे ते सद्‌गुरु, देव, धर्म प्रत्ये असतगुर्वादिकना आग्रहथी माठा बोधथी, आशातनाए, उपेक्षाए प्रवर्ते एवो सभव छे तेमज ते माठा सगथी तेनी ससारवासना परिच्छेद नही थती होवा छता ते परिच्छेद मानी परमार्थ प्रत्ये उपेक्षक रहे छे, ए ज अनतानुबधी क्रोध मान, माया, लोभनो आकार छ मुबई बीजा अ० वद ६, १९४९

---

(३२)

'अनतानुबधी नो बाजो प्रकार लख्यो छे ते विषे विशेषार्थ नीचे लख्याथी जाणशो —

उदयथी अथवा उदामभावसंयुक्त मदपरिणत बुद्धिथी भोगादिने विषे प्रवृत्ति थाय त्या सुधीमा ज्ञानीनी आज्ञा पर पग मूकीने प्रवृत्ति थई न सभवे, पण ज्या भोगादिने विषे तीव्र तन्मयपणे प्रवृत्ति थाय त्या ज्ञानीनी आज्ञानो कंई अंकुशता सभवे नही, निर्भयपणे भोगप्रवृत्ति संभवे. जे निर्ध्वंस परिणाम कह्या छे, तेवा परिणाम वर्ते त्या पण 'अनतानुबंधी' सभवे छे. तेम ज 'हु समजु छु', 'मने बाध नथी' एवा ने एवा बफममा रहे, अने 'भोगथी निवृत्ति घटे छे', अने वळी कई पण पुरुषत्व करे तो थई शकवा योग्य छता पण मिथ्याज्ञानथी ज्ञानदशा मानी भोगादिकमा प्रवर्तना करे त्या पण 'अनतानुबधी' सभवे छे

जाग्रतमा जेम जेम उपयोगनु शुद्धपणु थाय, तेम तेम स्वप्नदशानुं परिक्षीणपणु सभवे   मुबई, अषाड, १९५१

---

(२३)

प्रथम पदमां एम कह्यु छे के : हे मुमुक्षु ! एक आत्माने जाणता समस्त लोकालोकने जाणीश, अने सर्व जाणवानु फळ पण एक आत्मप्राप्ति छे, माटे आत्माथी जुदा एवा बीजा भावो जाणवानी वारवारनी इच्छाथी तुं

निवर्त अने एव निजस्वरूपने विषे दृष्टि दे, व जे दृष्टिथी समस्त सृष्टि ज्ञेयपणे तार विष देखाशे तत्त्वस्वरूप एवा सतशास्त्रमा कहला मार्गनु पण आ तत्त्व छे, एम तत्त्व ज्ञानीओए कह्यु छे, तथापि उपयोगपूर्वक ते समजावु दुर्लभ छे ए मार्ग जुदो छे, अने तेनु स्वरूप पण जुदु छे, जेम मात्र कथनज्ञानीओ कहे छे तेम नथी माटे ठेकाण ठेकाण जईने का पूछे छे ? केमक ते अपूर्व भावनो अर्थ ठेकाणे ठेकाणथी प्राप्त थवा योग्य नथी

बीजा पदनो संक्षेप अर्थ हे मुमुक्षु ! यमनियमादि जे साधनो सर्व शास्त्रमा कह्या छे ते उपर कहला अथवा निष्फळ ठरशे एम पण नथी केमके ते पण कारणने अर्थे छे ते कारण आ प्रमाणे छे आत्मज्ञान रही शके एवी पात्रता प्राप्त थवा, तथा तमा स्थिति थाय तेवी योग्यता आववा ए कारणो उपदेश्या छे तत्त्वज्ञानीओए एवी एवा हतुथी ए साधना कह्या छ, पण जीवनी समजणमां सामटो फेर होवाथी ते साधनामां ज अटकी रह्यो अथवा ते साधन पण अभिनिवेश परिणामे ग्रह्या आगळीथी जेम बाळकने चद्र देखाडवामा आवे, तेम तत्त्वज्ञानीओए ए तत्त्वनु तत्त्व कह्यु छे' ववाणिया, श्रा०व० १४, १९५१

(३४)

एवंभूत दृष्टिथी ऋजुसूत्र स्थिति कर
ऋजुसूत्र दृष्टिथी एवंभूत स्थिति कर
नैगम दृष्टिथी एवभूत प्राप्ति कर
एवंभूत दृष्टिथी नैगम विशुद्ध कर
सग्रह दृष्टिथी एवभूत था
एवभूत दृष्टिथी सग्रह विशुद्ध कर
व्यवहार दृष्टिथी एवभूत प्रत्ये जा
एवंभूत दृष्टिथी व्यवहार विनिवृत्त कर
शब्द दृष्टिथी एवंभूत प्रत्ये जा
एवंभूत दृष्टिथी शब्द निर्विकल्प कर.
समभिरूढ दृष्टिथी एवभूत अवलोक
एवभूत दृष्टिथी समभिरूढ स्थिति कर.
एवभूत दृष्टिथी एवभूत था
एवंभूत स्थितिथी एवंभूत दृष्टि शमाव.
ॐ शातिः शाति शाति.

हा० नो० २-१६

---

(३५)

समस्त विश्व घणु करीने परकथा तथा परवृत्तिमां वह्यु जाय छे, तमा रही स्थिरता क्याथी प्राप्त थाय ?

आवा अमूल्य मनुष्यपणानो एक समय पण परवृत्तिए जवा देवा योग्य नथी, अने कई पण तम थया करे छ तनो उपाय थई विचारे करी गवपवा योग्य छे

ज्ञानीपुरुषनो निश्चय थई अंतर्भेद न रहे तो आत्म प्राप्ति साव सुलभ छे, एवु ज्ञानी पोकारी गया छता केम लोको भूल छे ? मुबई आसो सु॰ १३, १९५१

---

(३६)

करवा योग्य थई कह्यु होय ते विस्मरणयोग्य न होय एटलो उपयोग करो क्रमे करीने पण तेमा अवश्य परिणति करवी घटे त्याग, वैराग्य, उपशम अने भक्ति मुमुक्षु जीवे सहज स्वभावरूप करी मूक्या विना आत्मदशा केम आवे ? पण शिथिलपणाथी प्रमाथी ए वात विस्मृत थई जाय छे

मुबई, आसो सुद १३, १९५१

---

(३७)

"ज्ञाननु फळ विरति छे." वीतरागनु आ वचन सर्व मुमुक्षुओए नित्य स्मरणमा राखवा योग्य छे जे वाचवाथी, समजवाथी तथा विचारवाथी आत्मा विभावथी, विभावना कार्योथी अने विभावना परिणामथी उदास न थयो, विभावनो त्यागी न थयो, विभावना कार्योनो अने विभावना फळनो त्यागी न थयो, ते वाचवु, ते विचारवु अने ते समजवु अज्ञान छे विचारवृत्ति साथे त्यागवृत्ति उत्पन्न करवी ते ज विचार सफळ छे, एम कहेवानो ज्ञानीनो परमार्थ छे. ववाणिया, फागण वद ११, १९५३

---

(३८)

ॐ नम.

सर्वं जीव सुखने इच्छे छे

दु:ख सर्वंने अप्रिय छे

दु.खथी मुक्त थवा सर्व जीव इच्छे छे.

वास्तविक तेनु स्वरूप न समजावाथी ते दु.ख मटतु नथी

ते दु.खना आत्यतिक अभावनु नाम मोक्ष कहीए छीए.

अत्यंत वीतराग थया विना आत्यंतिक मोक्ष होय नही

सम्यग्ज्ञान विना वीतराग थई शकाय नही

सम्यग्दर्शन विना ज्ञान असम्यक् कहेवाय छे

वस्तुनी जे स्वभावे स्थिति छे, ते स्वभावे ते वस्तुनी स्थिति समजावी तेने सम्यग्ज्ञान कहीए छीए

सम्यग्ज्ञानदर्शनथी प्रतीत थयेला आत्मभावे वर्तवु ते चारित्र छे

ए त्रणेनी एकताथी मोक्ष थाय

जीव स्वाभाविक छे परमाणु स्वाभाविक छे

जीव अनंत छे परमाणु अनंत छे

जीव अने पुद्गलनो संयोग अनादि छे

ज्यां सुधी जीवने पुद्गलसंबंध छे, त्यां सुधी सकर्म जीव कहेवाय

भावकर्मनो कर्ता जीव छे

भावकर्मनु बीजु नाम विभाव कहेवाय छे

भावकर्मना हेतुथी जीव पुद्गल ग्रहे छे

तेथी तैजसादि शरीर अने औदारिकादि शरीरनो योग थाय छे

भावकर्मथी विमुख थाय तो निजभावपरिणामी थाय

सम्यग्दर्शन विना वास्तविकपणे जीव भावकर्मथी विमुख न थई शके

सम्यग्दर्शन थवानो मुख्य हेतु जिनवचनथी तत्त्वार्थ-प्रतीति थवी ते छे. हा. नो. ३-६

---

(३९)

(१)

ॐ

सत्पुरुषोना अगाध गभीर संयमने नमस्कार

अविषम परिणामथी जेमणे काळकूट विष पीधु एवा श्री ऋषभादि परमपुरुषोने नमस्कार.

परिणाममा तो जे अमृत ज छे, पण प्रथम दशाए काळकूट विषनी पेठे मूंझवे छे, एवा श्री सयमने नमस्कार

ते ज्ञानने, ते दर्शनने अने ते चारित्रने वारवार नमस्कार

(२)

जेनी भक्ति निष्काम छे एवा पुरुषोनो सत्सग के दर्शन ए महत् पुण्यरूप जाणवा योग्य छे.

(३)

ॐ

पारमार्थिक हेतुविशेषथी पत्रादि लखवानुं बनी शकतुं नथी

जे अनित्य छे जे असार छे अने जे अशरणरूप छे ते आ जीवने प्रीतिनुं कारण केम थाय छे ते वात रात्रि दिवस विचारवा योग्य छे

लोकदृष्टि अने ज्ञानीनी दृष्टिने पश्चिम पूर्व जेटलो तफावत छे ज्ञानीनी दृष्टि प्रथम निरालंबन छे, रुचि उत्पन्न करती नथी, जीवनी प्रकृतिने मळती आवती नथी; तेथी जीव ते दृष्टिमां रुचिवान थतो नथी, पण जे जीवोए परिषह वेठीने थोडा काळ सुधी ते दृष्टिनुं आराधन कर्युं छे ते सर्व दुःखना क्षयरूप निर्वाणने पाम्या छे, तेना उपायने पाम्या छे

जीवने प्रमादमां अनादिथी रति छे, पण तेमां रति करवा योग्य कांई देखातुं नथी ॐ

मुंबई आसो सुद ८, रवि, १९५२

(४०)

आत्मदशाने पामी निर्द्वन्द्वपणे यथाप्रारब्ध विचरे छे, एवा महात्माओनो योग जीवने दुर्लभ छे

तेवो योग बन्ये जीवने ते पुरुषनी ओळखाण पडती नथी, अने तथारूप ओळखाण पड्या विना ते महात्मा प्रत्ये दृढाश्रय थतो नथी

ज्या सुधी आश्रय दृढ न थाय त्या सुधी उपदेश परिणाम पामतो नथी.

उपदेश परिणम्या विना सम्यग्दर्शननो योग बनतो नथी.

सम्यग्दर्शननी प्राप्ति विना जन्मादि दु खनी आत्यतिक निवृत्ति बनवा योग्य नथी

तेवा महात्मा पुरुषोनो योग तो दुर्लभ छे, तेमा सशय नथी. पण आत्मार्थी जीवोनो योग बनवो पण कठण छे तोपण क्वचित् क्वचित् ते योग वर्तमानमा बनवा योग्य छे

सत्समागम अने सत्शास्त्रनो परिचय कर्त्तव्य छे. ॐ

मुबई, कार्तिक वद १२, १९५४

---

(४१)

अपार महा मोहजळने अनत अतराय छना धीर रह्यो जे पुरुष तर्या ते श्री पुरुष भगवानने नमस्कार

अनत काळथी ज ज्ञान भवहेतु थतु हतु ते ज्ञानने एक समयमात्रमा जात्यांतर करी जेणे भवनिवृत्तिरूप कर्यु ते कल्याणमूर्ति सम्यग्दर्शनने नमस्कार

निवृत्तिमार्गमा सत्समागमनी वृत्ति राखवी योग्य छे

मुबई, अषाड सुद ११, गुरु, १९५४

---

(४२)

हे काम ! हे मान ! हे सगउदय !

हे वचनवर्गणा ! हे मोह ! हे मोहदया !

हे शिथिलता ! तमे शा माटे अतराय करो छो ?

परम अनुग्रह करीने हव अनुकूळ थाओ ! अनुकूळ थाओ

हा नो २ १९

---

(४३)

हे सर्वोत्कृष्ट सुखना हेतुभूत सम्यग्दर्शन ! तने अत्यंत भक्तिथी नमस्कार हो

आ अनादि अनंत संसारमा अनंत अनत जीवो तारा आश्रय विना अनंत अनंत दुःखने अनुभवे छे

तारा परमानुग्रहथी स्वस्वरूपमा रुचि थई. परम वीतराग स्वभाव प्रत्ये परम निश्चय आव्यो. कृतकृत्य थवानो मार्ग ग्रहण थयो

हे जिन वीतराग ! तमने अत्यंत भक्तिथी नमस्कार करु छु तमे आ पामर प्रत्ये अनत अनत उपकार कर्यो छे

हे कुदकुंदादि आचार्यो ! तमारा वचनो पण स्वरूपानुसंधानने विषे आ पामरने परम उपकारभूत थया छे ते माटे हु तमने अतिशय भक्तिथी नमस्कार करुं छु

हे श्री सोभाग ! तारा सत्समागमना अनुग्रहथी आत्मदशानुं स्मरण थयु ते अर्थे तने नमस्कार हो हा. नो. २-२०

---

(४४)

जेम भगवान जिने निरूपण कर्युं छे तेम ज सर्व पदार्थनु स्वरूप छे.

भगवान जिने उपदेशेलो आत्मानो समाधिमार्ग श्री गुरुना अनुग्रहथी जाणी, परम प्रयत्नथी उपासना करो.

हा. नो २-२१

---

(४५)

(१) सर्वज्ञोपदिष्ट आत्मा सद्‌गुरुकृपाए जाणीने निरंतर
तेना ध्याननां अर्थे विचरवुं संयम अने तपपूर्वक—

(२) अहो ! सर्वोत्कृष्ट शांतरसमय सन्मार्ग—

अहो ! ते सर्वोत्कृष्ट शांतरसप्रधान मार्गना मूळ सर्वज्ञदेव —

अहो ! ते सर्वोत्कृष्ट शांत रस सुप्रतीत करावनार परमकृपाळु सद्‌गुरुदेव—

आ विश्वमां सर्वकाळ तमे जयवंत वर्तो, जयवंत वर्तो
हा नो ३ २२

---

(४६)

(१) प्राणीमात्रना रक्षक, बांधव अने हितकारी एवो कोई उपाय होय तो ते वीतरागनो धर्म ज छे

(२) सज्जनो ! जिनवरेंद्रोए प्रकाशित ज स्वरूप निरूपण कर्यां छे ते आत्मिक भाषामां निरूपण छे, जे पूर्वापर भाषाभ्यास विना ज्ञानगोचर थवा योग्य नथी माटे तेम तमारा श्रवण करवानो आशय वीतरागनां वाक्योनो

विरोध करता नही; पण योगनो अभ्यास करी पूर्णताए ते स्वरूपना ज्ञाता थवानु राखजो.

मुवई, का० वद ११, मगळ, १९५६

(४७)

ॐ

वीतरागनो कहेलो परम शात रसमय धर्म पूर्ण सत्य छे, एवो निश्चय राखवो. जीवना अनधिकारीपणाने लीधे तथा सत्पुरुषना योग विना समजातु नथी, तो पण तेना जेवु जीवने ससाररोग मटाडवाने वीजु कोई पूर्ण हितकारी औषध नथी, एवुं वारंवार चितवन करवु

आ परम तत्त्व छे, तेनो मने सदाय निश्चय रहो, ए यथार्थ स्वरूप मारा हृदयने विषे प्रकाश करो, अने जन्म-मरणादि वधनथी अत्यत निवृत्ति थाओ ! निवृत्ति थाओ !!

हे जीव ! आ क्लेशरूप ससार थकी, विराम पाम, विराम पाम, काईक विचार, प्रमाद छोडी जागृत था ! जागृत था !! नही तो रत्नचितामणि जेवो आ मनुष्यदेह निष्फळ जशे.

हे जीव ! हवे तारे सत्पुरुषनी आज्ञा निश्चय उपासवा योग्य छे. ॐ शान्ति शान्ति शान्तिः

वर्ष २७ मु.

(४८)

अनन्य शरणना आपनार एवा श्री सद्गुरुदेवने अत्यंत भक्तिथी नमस्कार

शुद्ध आत्मस्वरूपने पाम्या छे एवा ज्ञानीपुरुषोए नीचे कह्यां छे ते छ पदने सम्यग्दर्शनना निवासना सर्वोत्कृष्ट स्थानक कह्यां छे

प्रथम पद —

'आत्मा छे' जेम घटपटआदि पदार्थो छे, तेम आत्मा पण छे अमुक गुण होवाने लीधे जेम घटपटआदि होवानु प्रमाण छे, तेम स्वपरप्रकाशक एवी चैतन्यसत्ताना प्रत्यक्ष गुण जेने विषे छे एवो आत्मा होवानु प्रमाण छे

बीजु पद —

'आत्मा नित्य छे' घटपटआदि पदार्थो अमुक कालवर्ती छे आत्मा त्रिकाळवर्ती छे घटपटादि संयोगे करी पदार्थ छे आत्मा स्वभावे करीने पदार्थ छे केमके तेनी उत्पत्ति माटे कोई पण संयोगो अनुभवयोग्य थता नथी कोई पण संयोगी द्रव्यथी चेतनसत्ता प्रगट थवा योग्य नथी, माटे अनुत्पन्न छे असंयोगी होवाथी अविनाशी छे, केमके जेनी कोई संयोगथी उत्पत्ति न होय, तेनो कोईने विषे लय पण होय नहीं

त्रीजुं पद :—

'आत्मा कर्त्ता छे' सर्व पदार्थ अर्थक्रियासपन्न छे कई ने कंई परिणामक्रिया सहित ज सर्व पदार्थ जोवामा आवे छे आत्मा पण क्रियासपन्न छे क्रियासपन्न छे, माटे कर्त्ता छे. ते कर्त्तापणु त्रिविध श्री जिने विवेच्यु छे, परमार्थथी स्वभाव-परिणतिए निजस्वरूपनो कर्त्ता छे अनुपचरित (अनुभवमा आववा योग्य, विशेष संबंध सहित) व्यवहारथी ते आत्मा द्रव्यकर्मनो कर्त्ता छे उपचारथी घर, नगर आदिनो कर्त्ता छे

चोथुं पद :—

'आत्मा भोक्ता छे' जे जे कई क्रिया छे ते ते सर्व सफळ छे, निरर्थक नथी. जे कई पण करवामा आवे तेनु फळ भोगववामां आवे एवो प्रत्यक्ष अनुभव छे विष खाधाथी विषनु फळ, साकर खावाथी साकरनु फळ; अग्निस्पर्शथी ते अग्निस्पर्शनुं फळ, हिमने स्पर्श करवाथी हिमस्पर्शनुं जेम फळ थया विना रहेतु नथी, तेम कषायादि के अकषायादि जे कई पण परिणामे आत्मा प्रवर्ते तेनु फळ पण थवा योग्य ज छे, अने ते थाय छे. ते क्रियानो आत्मा कर्त्ता होवाथी भोक्ता छे.

पांचमु पद —

'मोक्षपद छे' जे अनुपचरित व्यवहारथी जीवने कर्मनुं कर्त्तापणु निरूपण कयु, कर्त्तापणु होवाथी भोक्तापणु निरूपण कयु ते कर्मनुं टळवापणु पण छे केमके प्रत्यक्ष कषायादिनु तीव्रपणु होय पण तेना अनभ्यासथी, तेना अपरिचयथी, तेने उपशम करवाथी तेनु मंदपणु देखाय छे ते क्षीण थवा योग्य देखाय छे, क्षीण थई शके छे ते ते बंधभाव क्षीण थई शकवा योग्य होवाथी तेथी रहित एवो जे शुद्ध आत्मस्वभाव ते रूप मोक्षपद छे

छट्ठं पद —

ते 'मोक्षनो उपाय छे' जो कदी कर्मबंधमात्र थया करे एम ज होय, तो तेनी निवृत्ति कोई काळे संभवे नही, पण कर्मबंधथी विपरीत स्वभाववाळा एवा ज्ञान, दर्शन, समाधि, वैराग्य, भक्त्यादि साधन प्रत्यक्ष छे जे साधनना बळे कर्मबंध शिथिल थाय छे, उपशम पामे छे क्षीण थाय छे माटे ते ज्ञान, दर्शन संयमादि मोक्षपदना उपाय छे

श्री ज्ञानीपुरुषोए सम्यग्दर्शनना मुख्य निवासभूत कह्यां एवा आ छ पद अत्रे संक्षेपमा जणाव्यां छे समीपमुक्तिगामी जीवने सहज विचारमां ते सप्रमाण थवा योग्य छे,

परम निश्चयरूप जणावा योग्य छे, तेनो सर्व विभागे विस्तार थई तेना आत्मामां विवेक थवा योग्य छे. आ छ पद अत्यंत संदेहरहित छे, एम परमपुरुषे निरूपण कर्युं छे ए छ पदनो विवेक जीवने स्वस्वरूप समजवाने अर्थे कह्यो छे अनादि स्वप्नदशाने लीधे उत्पन्न थयेलो एवो जीवनो अहंभाव, ममत्वभाव ते निवृत्त थवाने अर्थे आ छ पदनी ज्ञानीपुरुषोए देशना प्रकाशी छे. ते स्वप्नदशाथी रहित मात्र पोतानु स्वरूप छे, एम जो जीव परिणाम करे, तो सहजमात्रमा ते जागृत थई सम्यक्‌दर्शनने प्राप्त थाय; सम्यक्‌दर्शनने प्राप्त थई स्वस्वभावरूप मोक्षने पामे. कोई विनाशी, अशुद्ध अने अन्य एवा भावने विषे तेने हर्ष, शोक, सयोग उत्पन्न न थाय ते विचारे स्वस्वरूपने विषे ज शुद्धपणुं, सपूर्णपणु, अविनाशीपणु, अत्यत आनंदपणु, अंतररहित तेना अनुभवमा आवे छे. सर्व विभावपर्यायमा मात्र पोताने अध्यासथी ऐक्यता थई छे, तेथी केवळ पोतानुं भिन्नपणु ज छे, एम स्पष्ट—प्रत्यक्ष—अत्यंत प्रत्यक्ष—अपरोक्ष तेने अनुभव थाय छे विनाशी अथवा अन्य पदार्थना सयोगने विषे तेने इष्टअनिष्टपणुं प्राप्त थतु नथी जन्म, जरा, मरण, रोगादि बाधारहित संपूर्ण माहा-

रम्यनु ठेकाणु एवु निजस्वरूप जाणी, वदी ते कृतार्थ थाय छे जे जे पुरुषोने ए छ पद सप्रमाण एवा परम पुरुषना वचने आत्मानो निश्चय थयो छे, त ते पुरुषो सव स्वरूपने पाम्या छे आधि, व्याधि, उपाधि, सव सगथी रहित थया छे, थाय छे, अने भाविकाळमा पण तम ज थशे

जे सत्पुरुषोए जन्म जरा मरणनो नाश करवावाळो, स्वस्वरूपमा सहज अवस्थान थवाना उपदेश कह्यो छ, ते सत्पुरुषोने अत्यत भक्तिथी नमस्कार छे तेनी निष्कारण करुणाने नित्य प्रत्ये निरतर स्तववामा पण आत्मस्वभाव प्रगटे छे, एवा सव सत्पुरुषो तना चरणारविंद सदाय हृदयने विषे स्थापन रहो !

जे छ पदथी सिद्ध छ एवु आत्मस्वरूप ते जेना वचनने अगाकार कर्ये सहजमा प्रगट छे, जे आत्मस्वरूप प्रगटवाथी सर्व काळ जीव सपूर्ण आनदने प्राप्त थई निर्भय थाय छे त वचनना कहनार एवा सत्पुरुषना गुणनी व्याख्या करवाने अशक्ति छे, केमके जेनो प्रत्युपकार न थई शके एवा परमात्मभाव त जाणे कइ पण इच्छया विना मात्र निष्कारण करुणाशीलताथी आप्या, एम छता पण जेणे अन्य जीवने विषे आ मारो शिष्य छे, अथवा

भक्तिनो कर्ता छे, माटे मार्गो छे, एम रही ओळखु नथी, एवा जे सत्पुरुष तेने अनन्य भक्तिए फरी फरी नमस्कार हो !

जे सत्पुरुषोए सद्गुरुनी भक्ति निरूपण करी छे, ते भक्ति मात्र शिष्यना कल्याणने अर्थे कही छे. जे भक्तिने प्राप्त थवाथी सद्गुरुना आत्मानी चेष्टाने विषे वृत्ति रहे, अपूर्व गुण दृष्टिगोचर थई अन्य स्वच्छंद मटे अने सहेजे आत्मबोध थाय एम जाणीने जे भक्तिनु निरूपण कर्यु छे, ते भक्तिने अने ते सत्पुरुषोने फरी फरी त्रिकाळ नमस्कार हो !

जो कदी प्रगटपणे वर्तमानमा केवळज्ञाननी उत्पत्ति थई नथी, पण जेना वचनना विचारयोगे शक्तिपणे केवळज्ञान छे एम स्पष्ट जाण्यु छे, श्रद्धापणे केवळज्ञान थयु छे, विचारदशाए केवळज्ञान थयु छे, इच्छादशाए केवळज्ञान थयु छे, मुख्य नयना हेतुथी केवळज्ञान वर्ते छे, ते केवळज्ञान सर्व अव्याबाध सुखनुं प्रगट करनार, जेना योगे सहज मात्रमा जीव पामवा योग्य थयो, ते सत्पुरुषना उपकारने सर्वोत्कृष्ट भक्तिए नमस्कार हो ! नमस्कार हो ! !

मुंबई, फागण, १९५०



(१)

ग्रंथारंभ

(शार्दूलविक्रीडित वृत्त)

ग्रंथारंभ प्रसंग रंग भरवा, थोडे थई कामना,
बोधु धमद मर्म भर्म हरवा छे अन्यथा काम ना,
भाखु मोन सुबोध धर्म धनना, जोइ प्रभु कामना,
एमां तत्त्व विचार सत्य सुखदा, प्रेरो प्रभु कामना

---

(२)

(छप्पय)

नाभिनंदन नाथ, विश्ववत्सल विज्ञानी
भवभयना फंद, करण खंडन गुणखानी
धर्म धर्म आधार, ज्ञान प्रगट भगवंता,
जगहित अरिहंत संहारक जयवंता,
श्री मरणहरण तारणतरण, निर्मोहारण भय हर,
ते ऋषभदेव परमानंद, गायन्द वंद्य वर.

---

(३)

प्रभुप्रार्थना

(दोहरा)

अकळ ज्योति स्वरूप तुं, केवळ कृपानिधान;
मन पुनित तुज प्रेरजे, भयभंजन भगवान. १
नित्य निरंजन निर्भय छो, गंजन गंज गुमान;
अभिवंदन अभिवदना, भयभंजन भगवान. २
धर्मधरण तारणतरण, शरण चरण सन्मान;
विघ्नहरण पावनकरण, भयभंजन भगवान. ३
भद्रभरण भीतिहरण, सुधाझरण शुभवान;
क्लेशहरण चिंताचूरण, भयभंजन भगवान. ४
अविनाशी अरिहंत तुं, एक अखंड अमान,
अजर अमर अणजन्म तुं, भयभंजन भगवान. ५
आनंदी अपवर्गी तु, अकळ गति अनुमान,
आशिष अनुकूळ आपजे, भयभंजन भगवान. ६
निराकार निर्लेप छो, निर्मळ नीतिनिधान,
निर्मोहक नारायणा, भयभंजन भगवान. ७
सचराचर स्वयंभू प्रभु, सुखद सोंपजे सान,
सृष्टिनाथ सर्वेश्वरा, भयभंजन भगवान. ८

सकट शोक सकळ हरण, नौतम मान निदान,
इच्छा विमळ अचळ करो, भयभजन भगवान ९
आधि व्याधि उपाधिने हरो तत तोफान,
करुणाळु करुणा करो, भयभजन भगवान १०
तिरस्ती थथर मति, भूल भयकर भान,
नकर ते स्नेहे हरो, भयभजन भगवान ११
शक्ति शिशुने आपजो, भक्ति मुक्तिनु दान,
शुभ युक्ति जाहेर छे, भयभजन भगवान १२
नीति प्रीति नम्रता, भली भक्तिनु भान,
आप प्रजाने आपजो, भयभजन भगवान १३
दया शांति औदार्यता, धर्म मर्म मनध्यान,
तप जप दानव्रत दे, भयभजन भगवान १४
हर आळस एदीपणु, हर भय ने अज्ञान,
हर भमणा भारत तणी, भयभजन भगवान १५
तन मन धन न थजनु, दे सुख सुधा समान,
आ अवनीनु कर भलु, भयभजन भगवान १६
विनय विनति राखना, धरो कृपाथी ध्यान;
मान्य करो महाराज ते, भयभजन भगवान १७

---

(४)

(वसंततिलका वृत्त)

संसारमां मन वरे परम मोह पामे ?
वैराग्यमां नट पडे गति ए ज जामे;
माता अहो गणी रहे दिन आप आवी,
"आत्मान-पुण्य गणी प्रभुता वधावी."

---

(५)

मुनिने प्रणाम

(मनहर छंद)

शांतिके सागर अरु, नीतिके नागर नेक,
दयाके आगर ज्ञान, ध्यानके निधान हो;
शुद्धबुद्धि ब्रह्मचारी, मुखबानी पूर्ण प्यारी,
भवनके हितकारी, धर्मके उद्यान हो,
रागद्वेषसे रहित, परम पुनित नित्य,
गुनसे खचित नित्त, सज्जन समान हो,
रायचंद धैर्यपाल, धर्मढाल क्रोधकाल,
मुनि तुम आगे मेरे, प्रनाम अमान हो.

(शार्दूलविक्रीडित)

माया मान मनोज मोह ममता, मिथ्यात मोडे मुनि,
धोरी धर्म धरेल ध्यान धरणी, धारेल धैर्य धुनी,
छे मनोज्ञ सुशील सौम्य समता, जे शीयळे चढना,
नीति राय दया क्षमाधर मुनि वांदो सदा वदना

---

(६)

काळ कोईने नहि मूके

(हरिगीत)

मोतीतणी माळा गळामां मूल्यवती मलकती,
हीरातणा शुभ हारथी बहु कंठकांति झळकती,
आभूषणोथी ओपता भाग्या मरणने जोईने,
जन जाणीए मन मानीए नव काळ मूके कोईने १
मणिमय मुगट माथे धरीने कर्ण कुंडळ नाखता,
कांचन कडां करमां धरी कशीए कचाश न राखता,
पळमां पड्या पृथ्वीपति ए भान भूतळ खोईने,
जन जाणीए मन मानीए नव काळ मूके कोईने २
दश आंगळीमां मांगलिक मुद्रा जडित माणिक्यथी
जे परम प्रेमे पेरता पोंची कळा बारीकथी,

ए वेठ वीटी सर्व छोडी नाख्या भूप धोईने,
जन जाणीए मन मानीए नव काळ मूके कोईने. ३
मूछ वाकडी करी फाकडा थई लीधु घरना ते परे,
कापेल नाकी कातर तरकोईलो हैयां हरे;
ए नाकटीमा आविया छटापा तजी म्हु खोईने,
जन जाणीए मन मानीए नव काळ मूके कोईने. ४
छो खंडना अधिराज जे चढे करीने नीपज्या,
ब्रह्मांडमा बळवान थईने भूप भारे ऊपज्या;
ए चतुर चक्री चालिया होता नहोता होईने,
जन जाणीए मन मानीए नव काळ मूके कोईने ५
जे राजनीतिनिपुणतामा न्यायवंता नीवड्या,
अवळा कर्ये जेना बधा सवळा सदा पासा पड्या,
ए भाग्यशाळी भागिया ते खटपटो सौ खोईने,
जन जाणीए मन मानीए नव काळ मूके कोईने ६
तरवार बहादुर टेकधारी पूर्णतामां पेखिया,
हाथी हणे हाथे करी ए केशरी सम देखिया;
एवा भला भडवीर ते अंते रहेला रोईने,
जन जाणीए मन मानीए नव काळ मूके कोईने. ७

---

(७)

धर्म विषे

(कवित)

साह्यबी सुखद होय, मानतणो मद होय,
खमा खमा खुद होय, ते ते कशा कामनु ?
जुवानीनु जोर होय, एशनो अकोर होय,
दोलतनो दोर होय, ए ते सुख नामनु,
वनिता विलास होय, प्रौढता प्रकाश होय,
दक्ष जेवा दास होय, होय सुख धामनु,
वदे रायचद एम, सद्धर्मने धार्या विना,
जाणी लेजे सुख ए तो, बेए ज बदामनु ! १
मोह मान मोडवाने, फेलपणु फोडवाने,
जाळफद तोडवाने, हेते निज हाथथी,
कुमतिने कापवाने, सुमतिने स्थापवाने,
ममत्वने मापवाने, सकळ सिद्धान्तथी,
महा मोक्ष माणवाने, जगदीश जाणवाने,
अजन्मता आणवाने, वळी भली भातथी,
अलौकिक अनुपम, सुख अनुभववाने,
धर्म धारणाने धारो, खरेखरी खांतथी २

दिनकर विना जेवो, दिननो देखाव दीसे,
शशी विना जेवी रीते, शर्वरी सुहाय छे;
प्रजापति विना जेवी, प्रजा पुरतणी पेखो,
सुरस विनानी जेवी, कविता कहाय छे,
सलिल विहीन जेवी, सरितानी शोभा अने,
भर्त्तार विहीन जेवी, भामिनी भळाय छे;
वदे रायचंद वीर, सद्धर्मने धार्या विना,
मानवी महान तेम, कुकर्मी कळाय छे ३

चतुरो चोपेथी चाही चिंतामणि चित्त गणे,
पंडितो प्रमाणे छे पारसमणि प्रेमथी;
कविओ कल्याणकारी कल्पतरु कथे जेने,
सुधानो सागर कथे, साधु शुभ क्षेमथी,
आत्मना उद्धारने उमंगथी अनुसरो जो,
निर्मळ थवाने काजे, नमो नीति नेमथी;
वदे रायचन्द वीर, एवु धर्मरूप जाणी,
"धर्मवृत्ति ध्यान धरो, विलखो न वे'मथी." ४

धर्म विना प्रीत नही, धर्म विना रीत नही,
धर्म विना हित नही, कथुं जन कामनुं;

धर्म विना टेक नही, धम विना नेक नही,
धम विना ऐश्वय नही, धर्म धाम रामनु,
धम विना ध्यान नही, धम विना ज्ञान नही,
धर्म विना मान नही, जीव्यु कोना कामनु ?
धर्म विना तान नही, धर्म विना सान नही,
धर्म विना गान नही, वचन उमामनु ५
धम विना धन धाम, धान्य धूळधाणी धारो,
धम विना धरणीमा, धिक्कता धराय छे,
धम विना धामतनी, धारणाओ धोखो धरे,
धर्म विना धातु धर्य, धूम्र थै धमाय छे,
धम विना धराधर, धुताशे, न धामधूमे,
धम विना ध्यानी ध्यान, ढोग ठगे धाय छे,
धारो धारा धवळ, सुषमनी धुरधरता,
धय ! धय ! धामे धामे, धमथी धराय छे ६

---

(८)

सवमान्य धम

(चोपाई)

धमतत्त्व जो पूछयु मने,
तो समळावु स्नेहे तने,

जे सिद्धांत सकळनो सार,
सर्वमान्य सहुने हितकार १

भाख्यु भाषणमा भगवान,
धर्म न बीजो दया समान,
अभयदान साथे संतोष,
द्यो प्राणीने, दळवा दोष. २

सत्य शीळ ने सघळा दान,
दया होईने रह्यां प्रमाण;
दया नही तो ए नहि एक,
विना सूर्य किरण नहि देख. ३

पुष्पपाखडी ज्या दुभाय,
जिनवरनी त्या नहि आज्ञाय,
सर्व जीवनुं इच्छो सुख,
महावीरनी शिक्षा मुख्य ४

सर्व दर्शने ए उपदेश,
ए एकाते, नही विशेष,
सर्व प्रकारे जिननो बोध,
दया दया निर्मळ अविरोध। ५

ए भवतारक [illegible] [illegible]
धरिये [illegible] [illegible] [illegible]
पर [illegible] ए [illegible] [illegible]
एवा [illegible] [illegible] [illegible] ६
तत्त्वस्पर्शी [illegible] [illegible]
ते पत पशॅद [illegible] [illegible]
शांतिनाथ [illegible] [illegible],
राजचन्द्र [illegible] [illegible] ७

वि. सं. १[illegible]

([illegible])

भक्तिनो [illegible]

([illegible])

शुभ शीत[illegible] [illegible] [illegible],
मनवांछित [illegible] [illegible] [illegible]
जिनभक्ति ग्रहो [illegible] [illegible],
भजीने भगवत [illegible] १

निज आत्मस्वरूप मुदा प्रगटे,
मनताप उताप तमाम मटे;
अति निर्जरता वणदाम ग्रहो,
भजीने भगवंत भवंत लहो २

समभावी सदा परिणाम थशे,
जड मंद अधोगति जन्म जशे,
शुभ मंगळ आ परिपूर्ण चहो,
भजीने भगवत भवंत लहो ३

शुभ भाव वडे मन शुद्ध करो,
नवकार महापदने समरो;
नहि एह समान सुमंत्र कहो,
भजीने भगवंत भवत लहो ४

करशो क्षय केवळ राग कथा,
धरशो शुभ तत्त्वस्वरूप यथा,
नृपचन्द्र प्रपंच अनंत दहो,
भजीने भगवंत भवंत लहो. ५

वि स. १९४०

(१०)

ब्रह्मचर्य विषे सुभाषित

(दोहरा)

नीरखीने नवयौवना, लेश न विषयनिदान
गणे काष्ठनी पूतळी, ते भगवान समान १
आ सघळा संसारनी, रमणी नायकरूप,
ए त्यागी त्याग्युं बधुं केवळ शोकस्वरूप २
एक विषयने जीततां, जीत्यो सौ संसार,
नृपति जीततां जीतिये, दळ, पुर ने अधिकार ३
विषयरूप अंकुरथी, टळे ज्ञान ने ध्यान,
लेश मदिरापानथी छाके ज्यम अज्ञान ४
जे नव वाड विशुद्धथी, धरे शियळ सुखदाई,
भव तेनो लव पछी रहे, तत्त्ववचन ए भाखे ५
सुंदर शियळ सुरतरु मन वाणी ने देह,
जे नरनारी सेवशे, अनुपम फळ ते तेह ६
पात्र विना वस्तु न रहे, पात्रे आत्मिक ज्ञान,
पात्र थवा सेवो सदा ब्रह्मचर्य मतिमान ७

वि सं १९४०

---

(११)

सामान्य मनोरथ

(सवैया)

मोहिनीभाव विचार अधीन थई,
ना नीरखु नयने परनारी;
पथ्थरतुल्य गणु परवैभव,
निर्मळ तात्त्विक लोभ समारी!
द्वादश व्रत अने दीनता धरी,
सात्त्विक थाउं स्वरूप विचारी;
ए मुज नेम सदा शुभ क्षेमक,
नित्य अखंड रहो भवहारी. १
ते त्रिशलातनये मन चिंतवी,
ज्ञान, विवेक, विचार वधारुं,
नित्य विशोध करी नव तत्त्वनो,
उत्तम बोध अनेक उच्चारुं
संशयबीज ऊगे नही अंदर,
जे जिनना कथनो अवधारु,
राज्य, सदा मुज ए ज मनोरथ,
धार, थशे अपवर्गउतारु २

---

(१०)

तृष्णानी विचित्रता

(मनहर छंद)

(एक गरीबनी वधती गयेली तृष्णा)

हती दीनताई त्यारे ताकी पटेलाई अने,
मळी पटेलाई त्यारे ताकी छे शेठाईने,
सांपडी शेठाई त्यारे ताकी मंत्रिताई अने,
आवी मंत्रिताई त्यारे ताकी नृपताईने,
मळी नृपताई त्यारे ताकी देवताई अने,
दीठी देवताई त्यारे ताकी शंकराईने,
अहा ! राजचंद्र मानो मानो शंकराई मळी,
वधे तृषनाई तोय जाय न मराईने १

करोचली पडी दाढी डाचातणो दाट वळ्यो,
काळी केशपटी विषे श्वेतता छवाई गई
सूंघवु साभळवु ने देखवु ते माडी वाळ्यु
तेम दांत आवली ते, खरी के खवाई गई,
वळी केड वांकी, हाड गया, अंगरंग गयो,
ऊठवानी आय जतां लाकडी लेवाई गई,

अरे ! राजचंद्र एम, युवानी हराई पण,
मनथी न तोय राड ममता मराई गई २
करोडोना करजना, शिर पर डंका वागे,
रोगथी रुंधाई गयु, शरीर सुकाईने;
पुरपति पण माथे पीडवाने ताकी रह्यो,
पेट तणी वेठ पण, शके न पुराईने;
पितृ अने परणी ते, मचावे अनेक धध,
पुत्र, पुत्री भाखे खाउं खाउ दु:खदाईने;
अरे ! राजचद्र तोय जीव झावा दावा करे,
जजाळ छडाय नही, तजी तृपनाईने. ३
थई क्षीण नाडी अवाचक जेवो रह्यो पडी,
जीवन दीपक पाम्यो केवळ झंखाईने,
छेल्ली इसे पडचो भाळी भाईए त्या एम भाख्यु,
हवे टाढी माटी थाय तो तो ठीक भाईने;
हाथने हलावी त्या तो खीजी वुढ्ढे सूचव्युं ए,
बोल्या विना वेस बाळ तारी चतुराईने !
अरे ! राजचन्द्र देखो देखो आशापाश केवो ?
जता गई नही डोशे ममता मराईने ! ४

वि. सं. १९४०

(१३)

अमूल्य तत्त्वविचार

(हरिगीत छंद)

बहु पुण्यकेरा पुंजथी शुभ देह मानवनो मळ्यो,
तोये अरे! भवचक्रनो आंटो नहि एक्के टळ्यो,
सुख प्राप्त करतां सुख टळे छे लेश ए लक्षे लहो,
क्षण क्षण भयंकर भावमरणे का अहो राची रहो? १

लक्ष्मी अने अधिकार वधतां, शुं वध्युं ते तो कहो?
शुं कुटुंब के परिवारथी, वधवापणुं ए नय ग्रहो,
वधवापणुं संसारनुं नरदेहने हारी जवो,
एनो विचार नहीं अहोहो! एक पळ तमने हवो!!! २

निर्दोष सुख निर्दोष आनंद, ल्यो गमे त्यांथी भले,
ए दिव्य शक्तिमान जेथी जंजीरेथी नीकळे,
परवस्तुमां नहि मुंझवो, एनी दया मुजने रही,
ए त्यागवा सिद्धांत के पश्चात्‌दुःख ते सुख नहीं ३

हुं कोण छुं? क्यांथी थयो? शुं स्वरूप छे मारुं खरुं?
कोना संबंधे वळगणा छे? राखुं के ए परहरुं?

एना विचार विवेकपूर्वक शांत भावे जो कर्या,
तो सर्व आत्मिक ज्ञानना सिद्धांततत्त्व अनुभव्यां. ४
ते प्राप्त करवा वचन कोनुं सत्य केवळ मानवुं ?
निर्दोष नरनुं कथन मानो 'तेह' जेणे अनुभव्युं;
रे! आत्म तारो! आत्म तारो! शीघ्र एने ओळखो,
सर्वात्ममां समदृष्टि द्यो आ वचनने हृदये लखो. ५

वि. सं. १९४०

---

(१४)

जिनेश्वरनी वाणी

(मनहर छंद)

अनंत अनंत भाव भेदथी भरेली भली,
अनंत अनंत नय निक्षेपे व्याख्यानी छे,
सकळ जगत हितकारिणी हारिणी मोह,
तारिणी भवाब्धि मोक्षचारिणी प्रमाणी छे;
उपमा आप्यानी जेने तमा राखवी ते व्यर्थ,
आपवाथी निज मति मपाई मे मानी छे;
अहो! राजचन्द्र, बाळ ख्याल नथी पामता ए,
जिनेश्वर तणी वाणी जाणी तेणे जाणी छे. १

वि. सं. १९४०

---

(१५)
पूर्णमालिका मंगल
(उपजाति)

तपोपध्याने रविरूप थाय,
ए साधीने सोम रही सुहाय,
महान ते मंगळ पंक्ति पामे,
आवे पछी ते बुधना प्रणामे १
निर्ग्रंथ ज्ञाता गुरु सिद्धिदाता,
का तो स्वयं शुक्र प्रपूर्ण ख्याता,
त्रियोग त्यां स्वळ मंद पामे,
स्वरूप सिद्धे विचरी विरामे, २

---

(१६)
अनित्य भावना
(उपजाति)

विद्युत लक्ष्मी प्रभुता पतंग,
आयुष्य ते तो जळना तरंग,
पुरंदरी चाप अनंग रंग,
शुं राचीए त्यां क्षणना प्रसंग।

अशरण भावना

(उपजाति)

सर्वज्ञनो धर्म सुशर्ण जाणी,
आराध्य आराध्य प्रमाद आणी;
अनाथ एकांत सनाथ थाशे,
एना विना कोई न बाह्य स्हाशे.

एकत्व भावना

(उपजाति)

शरीरमां व्याधि प्रत्यक्ष थाय,
ते कोई अन्ये लई ना शकाय;
ए भोगवे एक स्वआत्म पोते,
एकत्व एथी नयसुज्ञ गोते.

(शार्दूलविक्रीडित)

राणी सर्व मळी सुचन्दन घसी, ने चर्चवामां हती,
बूझ्यो त्यां ककळाट कंकणतणो, श्रोती नमि भूपति;
संवादे पण इंद्रथी दृढ रह्यो, एकत्व साचुं कर्युं,
एवा ए मिथिलेशनुं चरित आ, संपूर्ण अत्रे थयुं.

अन्यत्व भावना

(शार्दूलविक्रीडित)

ना मारा तन रुप कांति युवती, ना पुत्र के भ्रात ना,
ना मारा भृत स्नेहीओ स्वजन के, ना गोत्र के ज्ञात ना,
ना मारा धन धाम यौवन धरा, ए मोह अज्ञात्वना,
रे ! रे ! जीव विचार एम ज सदा, अन्यत्वदा भावना

(शार्दूलविक्रीडित)

देखी आंगळी आप एक अडवी, वैराग्यवेगे गया,
छांडी राजसमाजने भरतजी, कैवल्यज्ञानी थया,
चोथुं चित्र पवित्र ए ज चरिते पाम्युं अहीं पूर्णता,
ज्ञानीना मन तेह रंजन करो, वैराग्य भावे यथा

अशुचि भावना

(गीति वृत्त)

खाण मूत्र ने मळनी, रोग जरानुं निवासनुं धाम,
काया एवी गणीने, मान त्यजीने कर साथर्क आम

निवृत्ति बोध

(नाराच छंद)

अनंत सौख्य नाम दुःख त्यां रही न मित्रता !
अनंत दुःख नाम सौख्य प्रेम त्यां, विचित्रता !!
उघाड न्याय-नेत्र ने निहाळ रे ! निहाळ तुं;
निवृत्ति शीघ्रमेव धारी ते प्रवृत्ति बाळ तुं.

दोहरा

१

ज्ञान, ध्यान, वैराग्यमय, उत्तम जहां विचार;
ए भावे शुभ भावना, ते ऊतरे भव पार.

२

ज्ञानी के अज्ञानी जन, सुख दुःख रहित न कोय;
ज्ञानी वेदे धैर्यथी, अज्ञानी वेदे रोय.

३

मंत्र तंत्र औषध नहीं, जेथी पाप पलाय;
वीतराग वाणी विना, अवर न कोई उपाय,

४

जन्म, जरा ने मृत्यु, मुख्य दुःखना हेतु
कारण तेना बे कह्या, राग द्वेष अणहेतु

५

वचनामृत वीतरागना परम शांतरस मूळ,
औषध जे भवरोगना, कायरने प्रतिकूळ

---

(१७)

"सुखकी सहेली है अकेली उदासीनता"
अध्यात्मनी जननी ते उदासीनता

लघु वयथी अद्भुत थयो, तत्त्वज्ञाननो बोध,
ए ज सूचवे एम के, गति आगति का शोध ? १
जे संस्कार थवो घटे, अति अभ्यासे काय,
विना परिश्रम ते थयो, भवशंका शी त्याय ? २
जेम जेम मति अल्पता अने मोह उद्योत
तेम तेम भवशंकना, अपात्र अंतर ज्योत ३
करी कल्पना दृढ करे नाना नास्ति विचार,
पण अस्ति ते सूचवे, ए ज खरा निर्धार ४

आ भव वण भव छे नही, ए ज तर्क अनुकूळ;
विचारता पामी गया, आत्मधर्मनुं मूळ. ५
वि. सं. १९४५

---

(१८)

भिन्न भिन्न मत देखीए, भेद दृष्टिनो एह;
एक तत्त्वना मूळमां, व्याप्या मानो तेह. १

तेह तत्त्वरूप वृक्षनुं, आत्मधर्म छे मूळ;
स्वभावनी सिद्धि करे, धर्म ते ज अनुकूळ. २

प्रथम आत्मसिद्धि थवा, करीए ज्ञान विचार,
अनुभवी गुरुने सेवीए, बुधजननो निर्धार ३

क्षण क्षण जे अस्थिरता, अने विभाविक मोह;
ते जेनामाथी गया, ते अनुभवी गुरु जोय. ४

बाह्य तेम अभ्यंतरे, ग्रंथ ग्रंथि नहि होय,
परम पुरुष तेने कहो, सरळ दृष्टिथी जोय. ५
वि. सं. १९४५

---

(१९)

(चोपाई)

१ लोक पुण्यसारथानो कह्यो,
एनो भेद तमे कई लह्यो ?
तनु कारण समज्या मार्ग,
के समजाव्यानी चतुराई ? १
शरीर पन्थी ए उपदेश,
ज्ञान दर्शने मे उद्देश,
जेम जणावा सुणीए तम,
का तो रूडीए दईए पेम २
२ शु करवाथी पोते सुखी ?
शु करवाथी पोते दुखी ?
पोते शु ? क्यांथी छे आप ?
एनो मागो शीघ्र जवाप १
३ ज्या शंका त्या गण संताप,
शंका नहि त्याप,
त्या उत्तम ज्ञान,
गुरु भगवान १

[illegible] पद वैराग्य,
[illegible]
[illegible]
[illegible] ३

४ जे गायो ते सघळे एक,
सकळ दर्शने ए ज विवेक;
समजाव्यानी शैली करी,
स्याद्वाद समजण पण खरी. १

मूळ स्थिति जो पूछो मने,
तो सोंपी दउं योगी कने,
प्रथम अंत ने मध्ये एक,
लोकरूप अलोके देख. २

जीवाजीव स्थितिने जोई,
टळ्यो ओरतो शंका खोई;
एम ज स्थिति त्यां नहीं उपाय,
"उपाय का नहीं ?" शंका जाय. ३

ए आश्चर्य जाणे ते जाण,
जाणे ज्यारे प्रगटे भाण,

समजे बंधमुक्तियुत जीव,
नीरखी टाळे मोह सदैव ४
बंधयुक्त जीव कर्म सहित,
पुद्गल रचना कर्म खचीत,
पुद्गलभाव प्रथम तुं जाण,
नर देहे पछी पामे ध्यान ५
जो के पुद्गलनो ए देह,
तोपण ओर स्थिति त्यां छेह,
समजण बीजी पछी वहीला,
ज्यार चित्ते स्थिर थईने ६

५ जहां राग अने वळी द्वेष,
तहां सर्वदा मानो क्लेश,
उदासीनतानो ज्यां वास,
सकळ दुःखनो छे त्यां नाश १
सर्व काळनुं छे त्यां ज्ञान,
देह छतां त्यां छे निर्वाण,
भव छेवटनो छे ए दशा,
राम धाम आवीने वस्या २

मुंबई, फागण वद १, १९४६

---

(२०)

आज मने उछरंग अनुपम,
जन्मकृतार्थ [illegible] जणायो;
[illegible] वस्तु, [illegible],
ते [illegible] आज सुभाग्य जणायो.

मुंबई, [illegible] वद ४, गुरु, १९४६

---

(२१)

होत आसवा परिस्रवा, नहि इनमें संदेह;
मात्र दृष्टिकी भूल है, भूल गये गत एहि.
रचना जिन उपदेशकी, परमोत्तम तिनु काल;
इनमें सब मत रहत हैं, करते निज संभाल.
जिन सो ही है आतमा, अन्य होई सो कर्म;
कर्म कटे सो जिनवचन, तत्त्वज्ञानीको मर्म.
जब जान्यो निजरूपको, तब जान्यो सब लोक;
नहि जान्यो निजरूपको, सब जान्यो सो फोक
एहि दिशाकी मूढता, है नहि जिनपें भाव,
जिनसें भाव, विनु कबू, नहि छूटत दुःखदाव.

व्यवहारमें देव जिन, निहचेमें है आप;
एहि वचनसें समज ले, जिनप्रवचनकी छाप
एहि नहा है कल्पना, एही नही विभग,
जब जागेंगे आतमा तब लागेंगे रग
हा नो ११४

---

(२२)

मारग साचा मिल गया, छूट गये संदेह,
होता सो तो जल गया, भिन्न किया निज देह
समज, पिछें सब सरल है, बिनू समज मुशकील,
ये मुशकीली क्या कहु ? **
खोज पिंड ब्रह्माडका, पत्ता तो लग जाय,
येहि ब्रह्माडि वासना, जब जावे तब
आप आपकु भूल गया, इनसें क्या अंधेर ?
समर समर अब हसत हैं, नहि भूलेंगे फेर
जहा कलपना-जल्पना, तहा मानु दु:ख छाई,
मिटे कलपना-जल्पना, तब वस्तू तिन पाई

हे जीव ! क्या इच्छत हवे ? है इच्छा दु समूल;
जब इच्छाका नाश तब, मिटे अनादि भूल.

ऐसी कहांमें मति भई, आप आप है नाहि,
आपनकुं जब भूल गये, अवर कहांसे लाई.

आप आप ए शोधसें, आप आप मिल जाय;
आप मिलन नय वापको, ...

हा. नो. १–१२

---

(२३)

ॐ

बीजा साधन बहु कर्यां, करी कल्पना आप,
अथवा असद्गुरु थकी, ऊलटो वध्यो उताप.

पूर्व पुण्यना उदयथी, मळयो सद्गुरु योग;
वचनसुधा श्रवणे जतां, थयुं हृदय गतशोग.

निश्चय एथी आवियो, टळशे अही उताप;
नित्य कर्यो सत्संग मे, एक लक्षथी आप

मोरबी, आसो, १९४६

---

(२४)

ॐ सत

(दोहरा

बिना नयन पावे नहीं, बिना नयनकी बात,
सेवे सद्‌गुरुके चरन सो पावे साक्षात १
बूझी चहत जो प्यासको, है बूझनकी रीत,
पावे नहि गुरुगम बिना, एही अनादि स्थित २
एही नहि है कल्पना, एही नहीं विभग,
कई नर पंचमकाळमें, देखी वस्तु अभंग ३
नहि दे तु उपदेशकु प्रथम लेहि उपदेश,
सबसें न्यारा अगम है वो ज्ञानीका देश ४
जप, तप और व्रतादि सब, तहा लगी भ्रमरूप,
जहा लगी नहि सतकी, पाई कृपा अनूप ५
पायाकी ए बात है, निज छदनको छोड,
पिछे लाग सत्पुरुषके, तो सब बंधन तोड ६
मुंबई, अषाड, १९४७

(२५)

(दोहरा)

हे प्रभु, हे प्रभु, शु कहुं, दीनानाथ दयाळ,
हुं तो दोष अनंतनुं, भाजन छुं करुणाळ. १
शुद्ध भाव मुजमा नथी, नथी सर्व तुज रूप;
नथी लघुता के दीनता, शु कहुं परमस्वरूप? २
नथी आज्ञा गुरुदेवनी, अचळ करी उरमाही,
आप तणो विश्वास दृढ, ने परमादर नाही. ३
जोग नथी सत्संगनो, नथी सत्सेवा जोग;
केवळ अर्पणता नथी, नथी आश्रय अनुयोग. ४
'हुं पामर शु करी शकुं?' एवो नथी विवेक;
चरण शरण धीरज नथी, मरण सुधीनी छेक. ५
अचिंत्य तुज माहात्म्यनो, नथी प्रफुल्लित भाव;
अंश न एके स्नेहनो, न मळे परम प्रभाव ६
अचळरूप आसक्ति नहि, नही विरहनो ताप;
कथा अलभ तुज प्रेमनी, नहि तेनो परिताप. ७
भक्तिमार्ग प्रवेश नहि, नही भजन दृढ भान;
समज नही निजधर्मनी, नहि शुभ देशे स्थान. ८

काळदोष कळिथी थयो, नहि मर्यादा धर्म,
तोय नही व्याकुळता, जुओ प्रभु मुज कर्म ९
सेवाने प्रतिकूळ जे, ते बधन नथी त्याग,
देहेंद्रिय माने नही, करे बाह्य पर राग १०
तुज वियोग स्फुरतो नथी, वचन नयन यम नाही,
नहि उदास अनभक्तथी, तेम गृहादिक माही ११
अहभावथी रहित नहि, स्वधर्म सचय नाही,
नथी निवृत्ति निर्मळपणे अन्य धर्मनी काई १२
एम अनत प्रकारथी, साधन रहित हुय,
नही एक सद्गुण पण, मुख बतावु शुय ? १३
केवळ करुणामूर्ति छो, दीनबधु दीननाथ,
पापी परम अनाथ छु ग्रहो प्रभुजी हाथ १४
अनत काळथी आथड्यो, विना भान भगवान,
सेव्या नहि गुरु सतने मूक्यु नहि अभिमान १५
सत चरण आश्रय विना, साधन कर्यां अनेक,
पार न तेथी पामियो ऊग्यो न अश विवेक १६
सहु साधन बधन थया, रह्यो न कोई उपाय,
सत्साधन समज्यो नही, त्या बधन शु जाय ? १७

प्रभु प्रभु लय लागी नहीं, पड्यो न सद्गुरु पाय;
दीठा नहि निज दोष तो, तरिये कोण उपाय ? १८

अधमाधम अधिको पतित, सकल जगतमां हुय,
ए निश्चय आव्या विना, साधन करशे शुय ? १९

पडी पडी तुज पदपंकजे, फरी फरी मागुं ए ज;
सद्गुरु संत स्वरूप तुज, ए दृढता करी दे ज २०

राळज, भा सुद ८, १९४७

---

(२६)

ॐ सत्

(त्रोटक छंद)

यम नियम संजम आप कियो,
पुनि त्याग विराग अथाग लह्यो;
वनवास लियो मुख मौन रह्यो,
दृढ आसन पद्म लगाय दियो. १

मन पौन निरोध स्वबोध कियो,
हठजोग प्रयोग सु तार भयो,

जप भेद जपे तपत्योंहि तपे,
उरसेंहि उदासी लही सबपं २
सब शास्त्रनके नय धारी हिये,
मत मंडन खंडन भेद लिये,
वह साधन वार अनंत कियो
तदपि कछु हाथ हजु न पर्यो ३

अब क्यों न विचारत है मनसें,
कछु और रहा उन साधनसें?
बिन सद्‌गुरु कोय न भेद लहे,
मुख आगल है वह बात कहे? ४

करुना हम पावत हे तुमकी,
वह बात रही सुगुरु गमकी,
पलमें प्रगटे मुख आगलसें,
जब सद्‌गुरुचन सुप्रेम बसें ५
तनसें, मनसें, धनसें, सबसें,
गुरुदेवकी आन स्वआत्म बसें,
तब कारज सिद्ध बने अपनो,
रस अमृत पावहि प्रेम घनो ६

वह सत्य सुधा दरसावहिंगे,
चतुरांगुल हे दृगमें मिलहे,
रस देव निरंजन को पिवही,
गहि जोग जुगोजुग सो जीवही. ७

परप्रेमप्रवाह बढे प्रभुसें,
सब आगमभेद सुउर बसे;
वह केवलको बीज ग्यानि कहे,
निजको अनुभौ बतलाई दिये. ८

राळज, भा. सुद ८, १९४७

---

(२७)

(दोहरा)

१) जड भावे जड परिणमे, चेतन चेतन भाव;
कोई कोई पलटे नहीं, छोडी आप स्वभाव. १
जड ते जड त्रण काळमा, चेतन चेतन तेम;
प्रगट अनुभवरूप छे, संशय तेमा केम? २
जो जड छे त्रण काळमा, चेतन चेतन होय,
बंध मोक्ष तो नहि घटे, निवृत्ति प्रवृत्ति न्होय. ३

बंध मोक्ष संयोगथी, ज्यां लग आत्म अभान,
पण नहि त्याग स्वभावना, भाखे जिन भगवान ४
वर्ते बंध प्रसंगमां, ते निजपद अज्ञान,
पण जडता नहि आत्मने, ए सिद्धांत प्रमाण ५
ग्रहे अरूपी रूपीने, ए अचरजनी वात,
जीव बंधन जाणे नहीं, केवो जिन सिद्धांत ६
प्रथम देहदृष्टि हती तेथी भास्यो देह,
हवे दृष्टि थई आत्ममां, गयो देहथी नेह ७
जड चेतन संयोग आ, खाण अनादि अनंत,
कोई न कर्त्ता तेहनो, भाखे जिन भगवंत ८
मूळ द्रव्य उत्पन्न नहि, नहीं नाश पण तेम,
अनुभवथी ते सिद्ध छे भाखे जिनवर एम ९
होय तेहनो नाश नहि, नहीं तेह नहि होय,
एक समय ते सौ समय भेद अवस्था जोय १०

(२) परम पुरुष प्रभु सद्गुरु, परम ज्ञान सुखधाम,
जेणे आप्युं भान निज, तेने सदा प्रणाम १

राळज, भा सुद ८, १९४७

(२८)

(हरिगीत)

जिनवर कहे छे ज्ञान तेने, सर्व भव्यो साभळो.
जो होय पूर्व भणेल नव पण, जीवने जाण्यो नही,
तो सर्व ते अज्ञान भाख्युं, साक्षी छे आगम अही;
ए पूर्व सर्व कह्या विशेषे, जीव करवा निर्मळो,
जिनवर कहे छे ज्ञान तेने, सर्व भव्यो साभळो. १

नहि ग्रंथमाही ज्ञान भाख्युं, ज्ञान नहि कविचातुरी,
नहि मंत्र तंत्रो ज्ञान दाख्या, ज्ञान नहि भाषा ठरी,
नहि अन्य स्थाने ज्ञान भाख्यु, ज्ञान ज्ञानीमा कळो,
जिनवर कहे छे ज्ञान तेने, सर्व भव्यो साभळो. २

आ जीव ने आ देह एवो, भेद जो भास्यो नही,
पचखाण कीधा त्या सुधी, मोक्षार्थ ते भाख्या नही;
ए पाचमे अंगे कह्यो, उपदेश केवळ निर्मळो,
जिनवर कहे छे ज्ञान तेने, सर्व भव्यो सांभळो ३

केवळ नही ब्रह्मचर्यथी,... ....
केवळ नही संयम थकी, पण ज्ञान केवळथी कळो,
जिनवर कहे छे ज्ञान तेने, सर्व भव्यो साभळो. ४

शास्त्रो विशेष सहित पण जो जाणियुं निज रूपने,
का तेहवो आश्रय करजो, भावथी साचा मने,
तो ज्ञान तेने भाखियु, जो सम्मति आदि स्थळो,
जिनवर कहे छे ज्ञान तने, सर्व भव्यो साभळो ५

आठ समिति जाणीए जो, ज्ञानीना परमार्थथी,
तो ज्ञान भाख्यु तहने, अनुसार ते मोक्षार्थथी,
निज कल्पनाथी कोटि शास्त्रो, मात्र मननो आमळो,
जिनवर कहे छे ज्ञान तेन, सर्व भव्यो साभळो ६

चार वेद पुराण आदि, शास्त्र सौ मिथ्यात्वना,
श्रीनदीसूत्र भाखिया छे, भेद ज्या सिद्धातना,
पण ज्ञानीने ते ज्ञान भास्या, ए ज ठकाणे ठरो,
जिनवर कहे छे ज्ञान तेन सर्व भव्यो साभळो ७

व्रत नहो पचखाण नहि नहि त्याग वस्तु कोइनो,
महापद्म तीर्थंकर थशे श्रेणिक ठाणग जोई ल्यो
छेद्यो अनता

.. ८

राळज, भा १९४७

(२१)

ॐ

१ अपूर्व अवसर एवो क्यारे आवशे ?
क्यारे थईशु बाह्यातर निर्ग्रंथ जो ?
सर्व सवंधनु वधन तीक्ष्ण छेदीने,
विचरशु कव महत्पुरुषने पंथ जो ? अपू०

२ सर्व भावथी औदासीन्य वृत्ति करी,
मात्र देह ते सयमहेतु होय जो;
अन्य कारणे अन्य कशु कल्पे नही,
देहे पण किंचित् मूर्छा नव जोय जो. अपूर्व०

३ दर्शनमोह व्यतीत थई ऊपज्यो बोघ जे,
देह भिन्न केवल चैतन्यनुं ज्ञान जो;
तेथी प्रक्षीण चारित्रमोह विलोकिये,
वर्त्ते एवुं शुद्धस्वरूपनुं ध्यान जो. अपूर्व०

४ आत्मस्थिरता त्रण सक्षिप्त योगनी,
मुख्यपणे तो वर्ते देहपर्यंत जो;
घोर परीषह के उपसर्ग भये करी,
आवी शके नही ते स्थिरतानो अंत जो. अपूर्व०

५ संयमना हेतुथी योगप्रवर्तना,
स्वरूपलक्षे जिनआज्ञा आधीन जो,
ते पण क्षण क्षण घटती जाती स्थितिमां,
अंते थाये निजस्वरूपमां लीन जो अपूर्व०

६ पंच विषयमां रागद्वेष विरहितता,
पंच प्रमादे न मळे मननो क्षोभ जो,
द्रव्य, क्षेत्र ने काळ, भाव प्रतिबंध वण,
विचरवुं उदयाधीन पण वीतलोभ जो अपूर्व०

७ क्रोध प्रत्ये तो वर्ते क्रोधस्वभावता,
मान प्रत्ये तो दीनपणानुं मान जो,
माया प्रत्ये माया साक्षीभावनी,
लोभ प्रत्ये नहीं लोभ समान जो अपूर्व०

८ बहु उपसर्गकर्ता प्रत्ये पण क्रोध नहीं,
वंदे चक्री तथापि न मळे मान जो,
देह जाय पण माया थाय न रोममां,
लोभ नहीं छो प्रबळ सिद्धिनिदान जो अपूर्व०

९ नग्नभाव, मुंडभाव सह अस्नानता
अदंतधोवन आदि परम प्रसिद्ध जो,

केश, रोम, नख के अगे श्रृंगार नही,
द्रव्यभाव सयममय निर्ग्रंथ सिद्ध जो. अपूर्व०

१० शत्रु मित्र प्रत्ये वर्ते समदर्शिता,
मान अमाने वर्ते ते ज स्वभाव जो;
जीवित के मरणे नही न्यूनाधिकता,
भव मोक्षे पण शुद्ध वर्ते समभाव जो अपूर्व०

११ एकाकी विचरतो वळी स्मशानमा,
वळी पर्वतमा वाघ सिंह सयोग जो;
अडोल आसन, ने मनमा नही क्षोभता,
परम मित्रनो जाणे पाम्या योग जो. अपूर्व०

१२ घोर तपश्चर्यामा पण मनने ताप नही,
सरस अन्ने नही मनने प्रसन्नभाव जो;
रजकण के रिद्धि वैमानिक देवनी,
सर्वे मान्या पुद्गल एक स्वभाव जो अपूर्व०

१३ एम पराजय करीने चारित्रमोहनो,
आवु त्या ज्या करण अपूर्व भाव जो,
श्रेणी क्षपकतणी करीने आरूढता,
अनन्य चिंतन अतिशय शुद्धस्वभाव जो अपूर्व०

१४ मोह स्वयंभूरमण समुद्र तरी करी,
स्थिति त्या ज्या क्षीणमोह गुणस्थान जो,
अंत समय त्यां पूर्णस्वरूप वीतराग थई,
प्रगटावुं निज केवलज्ञान निधान जो अपूर्व०

१५ चार कर्म घनघाती ते व्यवच्छेद ज्यां
भवना बीजतणो आत्यंतिक नाश जो,
सर्व भाव ज्ञाता द्रष्टा सह शुद्धता,
कृतकृत्य प्रभु वीर्य अनंत प्रकाश जो अपूर्व०

१६ वेदनीयादि चार कर्म वर्ते जहां,
बळी सींदरीवत् आकृति मात्र जो,
ते देहायुष आधीन जेनी स्थिति छे,
आयुष पूर्णे, मटिये दैहिक पात्र जो अपूर्व०

१७ मन, वचन, काया ने कर्मनी वर्गणा,
छूटे जहां सकळ पुद्गल संबंध जो,
एवुं अयोगी गुणस्थानक त्यां वर्ततुं,
महाभाग्य सुखदायक पूर्ण अबंध जो अपूर्व०

१८ एक परमाणुमात्रनो मळे न स्पर्शता,
पूर्ण कलंक रहित अडोल स्वरूप जो,

शुद्ध निरंजन चैतन्यमूर्ति अनन्यमय,
अगुरुलघु, अमूर्त्त सहजपदरूप जो. अपूर्व०

१९ पूर्वप्रयोगादि कारणना योगथी,
ऊर्ध्वगमन सिद्धालय प्राप्त सुस्थित जो;
सादि अनंत अनंत समाधिसुखमा,
अनंत दर्शन, ज्ञान अनंत सहित जो अपूर्व०

२० जे पद श्री सर्वज्ञे दीठुं ज्ञानमा,
कही शक्या नही पण ते श्री भगवान जो,
तेह स्वरूपने अन्य वाणी ते शुं कहे ?
अनुभवगोचर मात्र रह्यु ते ज्ञान जो. अपूर्व०

२१ एह परमपद प्राप्तिनुं कर्युं ध्यान मे,
गजा वगर ने हाल मनोरथरूप जो,
तोपण निश्चय राजचद्र मनने रह्यो,
प्रभुआज्ञाए थाशु ते ज स्वरूप जो. अपूर्व०

ववाणिया, १९५३

मूळ मारग साभळो जिननो रे,
करी वृत्ति अखड समुख, मूळ०
नो'य पूजादिनी जो कामना रे,
नो'य व्हालु अतर भवदु ख मूळ० १

करी जोजो वचननी तुलना र,
जोजो शोधीने जिनसिद्धात, मूळ०
मात्र कहेवु परमारथहेतुथी रे,
कोई पामे मुमुक्षु वात मूळ० २

ज्ञान, दर्शन, चारित्रनी शुद्धता रे
एकपण अने अविरुद्ध, मूळ०
जिनमारग ते परमारथी रे,
एम कह्यु सिद्धाते बुध मूळ० ३

लिंग अने भेदो जे व्रतना र,
द्रव्य देश काळादि भेद मूळ०
पण ज्ञानादिनी जे शुद्धता रे,
ते तो त्रणे काळे अभेद मूळ० ४

हवे ज्ञान दर्शनादि शब्दनो रे,
संक्षेपे सुणो परमार्थ, मूळ०
तेने जोता विचारी विशेपथी रे,
समजाशे उत्तम आत्मार्थ. मूळ० ५

छे देहादिथी भिन्न आतमा रे,
उपयोगी सदा अविनाश, मूळ०
एम जाणे सद्गुरु उपदेशथी रे,
कह्यु ज्ञान तेनु नाम खास. मूळ० ६

जे ज्ञाने करीने जाणियु रे,
तेनी वर्ते छे शुद्ध प्रतीत; मूळ०
कह्यु भगवते दर्शन तेहने रे,
जेनु बीजुं नाम समकित. मूळ० ७

जेम आवी प्रतीति जीवनी रे,
जाण्यो सर्वेथी भिन्न असग; मूळ०
तेवो स्थिर स्वभाव ते ऊपजे रे,
नाम चारित्र ते अणलिंग. मूळ० ८
ते त्रणे अभेद परिणामथी रे,
ज्यारे वर्ते ते आत्मारूप; मूळ०

सेह मारग जिननो पामियो रे,
किंवा पाम्यो ते निजस्वरूप मूळ० ९

एवा मूळ ज्ञानादि पामवा रे,
अने जवा अनादि बंध, मूळ०
उपदेश सद्गुरुनो पामवो रे,
टाळी स्वच्छंद ने प्रतिबंध मूळ० १०

एम देव जिनंदे भाखियुं रे,
मोक्षमारगनुं शुद्ध स्वरूप, मूळ०
भव्य जनोना हितने कारण रे,
संक्षेपे कह्युं स्वरूप मूळ० ११

आणंद, आसो सुद १, १९५२

---

(३१)

(गीति)

पंथ परमपद बांध्यो,
जेह प्रमाणे परम वीतरागे,
ते अनुसरी कहीशुं
प्रणमीने ते प्रभु भक्ति रागे १

मूळ परमपद कारण,
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण पूर्ण;
प्रणमे एक स्वभावे,
शुद्ध समाधि त्या परिपूर्ण. २

जे चेतन जड भावो,
अवलोक्या छे मुनीद्र सर्वज्ञे;
तेवी अन्तर आस्था,
प्रगट्ये दर्शन कह्यु छे तत्त्वज्ञे. ३

सम्यक् प्रमाण पूर्वक,
ते ते भावो ज्ञान विषे भासे;
सम्यग्ज्ञान कह्युं ते,
संशय, विभ्रम, मोह त्या नास्ये. ४

विषयारंभ - निवृत्ति,
राग-द्वेषनो अभाव ज्या थाय;
सहित सम्यक्दर्शन,
शुद्धचरण त्या समाधि सदुपाय. ५

त्रणे अभिन्न स्वभावे,
परिणमी आत्मस्वरूप ज्या थाय,

पूर्ण परमपद प्राप्ति,
निश्चयथी त्यां अनन्य सुखदाय ६
जीव, अजीव पदार्थो,
पुण्य, पाप, आस्रव तथा बंध,
संवर, निर्जरा, मोक्ष,
तत्त्व कह्यां नव पदार्थ संबंध ७
जीव, अजीव विषे ते,
सर्वे तत्त्वनो समावेश थाय,
वस्तु विचार विचारे,
भिन्न प्रकाश्या महान मुनिराय ८
ववाणिया, कार्तिक, १९५१

---

(१२)

धन्य रे दिवस आ अहो,
जागी रे शांति अपूर्व रे,
दश वर्षे रे धारा उलसी,
मट्यो उदयकर्मनो गर्व रे. धन्य० १
ओगणीससें ने एकत्रीस,
आव्यो अपूर्व अनुसार रे,

ओगणीसमें ने बेतालीसे,
अद्‌भुत वैराग्य धार रे धन्य० २
ओगणीससें ने सुडतालीसे,
समकित शुद्ध प्रकाश्यु रे,
श्रुत अनुभव वधती दशा,
निज स्वरूप अवभास्यु रे. धन्य० ३
त्या आव्यो रे उदय कारमो,
परिग्रह कार्य प्रपच रे;
जेम जेम ते हडसेलीए,
तेम वधे न घटे एक रंच रे. धन्य० ४
वधतु एम ज चालियुं,
हवे दीसे क्षीण काई रे,
क्रमे करीने रे ते जशे,
एम भासे मनमाही रे. धन्य० ५
यथाहेतु जे चित्तनो,
सत्य धर्मनो उद्धार रे,
थशे अवश्य आ देहथी,
एम थयो निरधार रे. धन्य० ६

आवी अपूर्व वृत्ति अहो,
थशे अप्रमत्त योग रे,
केवळ लगभग भूमिका,
स्पर्शीने देह वियोग रे घय० ७
अवश्य कर्मनो भोग छे,
भोगववो अवशेष रे,
तेथी देह एक ज धारीने,
जाशुं स्वरूप स्वदेश रे. घय० ८
हा नो १-३२

---

(३३)

जड ने चैतन्य बन्ने द्रव्यनो स्वभाव भिन्न,
सुप्रतीतपणे बन्ने जेने समजाय छे,
स्वरूप चेतन निज, जड छे संबंध मात्र
अथवा ते ज्ञेय पण परद्रव्यमाय छे
एवो अनुभवनो प्रकाश उल्लासित थयो,
जडथी उदासी तेने आत्मवृत्ति थाय छे,
कायानी विसारी माया, स्वरूपे समाया एवा,
निर्ग्रंथनो पंथ भवअन्तनो उपाय छे १

देह जीव एकरूपे भासे छे अज्ञान वडे,
क्रियानी प्रवृत्ति पण तेथी तेम थाय छे;
जीवनी उत्पत्ति अने रोग, शोक, दुःख, मृत्यु,
देहनो स्वभाव जीव पदमा जणाय छे,
एवो जे अनादि एकरूपनो मिथ्यात्वभाव,
ज्ञानीना वचन वडे दूर थई जाय छे;
भासे जड चैतन्यनो प्रगट स्वभाव भिन्न,
बन्ने द्रव्य निज निज रूपे स्थित थाय छे. २

मुं० का० वद ११, मंगळ, १९५६

---

(३४)

सद्गुरुना उपदेशथी, समजे जिननुं रूप;
तो ते पामे निजदशा, जिन छे आत्मस्वरूप. १

पाम्या शुद्ध स्वभावने, छे जिन तेथी पूज्य;
समजो जिनस्वभाव तो, आत्मभाननो गुज्य. २

स्वरूपस्थित इच्छारहित, विचरे पूर्वप्रयोग;
अपूर्व वाणी, परमश्रुत, सद्गुरु लक्षण योग्य. ३

नडियाद, आसो वद २, १९५२

---

(३५)

ॐ

श्री जिन परमात्मने नमः

(१) इच्छे छे जे जोगी जन, अनंत सुखस्वरूप,
मूळ शुद्ध ते आत्मपद, सयोगी जिनस्वरूप १

आत्मस्वभाव अगम्य ते, अवलंबन आधार,
जिनपदथी दर्शाविया, तेह स्वरूप प्रकार. २

जिनपद निजपद एकता, भेदभाव नहि कांई,
लक्ष थवाने तेहनो, कह्यां शास्त्र सुखदाई ३

जिन प्रवचन दुर्गम्यता थाके अति मतिमान,
अवलंबन श्री सद्गुरु, सुगम अने सुखखाण ४

उपासना जिनचरणनी, अतिशय भक्तिसहित,
मुनिजन संगति रति अति, संयम योग घटित ५

गुणप्रमोद अतिशय रहे, रहे अंतर्मुख योग
प्राप्ति श्री सद्गुरु वडे, जिन दर्शन अनुयोग ६

प्रवचन समुद्र बिंदुमां, ऊलटी आवे एम,
पूर्व चौदनी लब्धिनुं, उदाहरण पण तेम ७

विषय विकार सहित जे, रह्या मतिना योग;
परिणामनी विषमता, तेने योग अयोग. ८
मंद विषय ने सरळता, सह आज्ञा सुविचार,
करुणा कोमळतादि गुण, प्रथम भूमिका धार ९
रोक्या शब्दादिक विषय, संयम साधन राग;
जगत इष्ट नहि आत्मथी, मध्य पात्र महाभाग्य १०
नहि तृष्णा जीव्यातणी, मरण योग नहि क्षोभ,
महापात्र ते मार्गना, परम योग जितलोभ. ११

(२) आव्ये बहु समदेशमां, छाया जाय समाई,
आव्ये तेम स्वभावमां, मन स्वरूप पण जाई १
ऊपजे मोह विकल्पथी, समस्त आ संसार;
अंतर्मुख अवलोकतां, विलय थतां नहि वार. २

(३) सुखधाम अनंत सुसंत चही,
दिन रात्र रहे तद्ध्यान महीं;
परशान्ति अनंत सुधामय जे,
प्रणमुं पद ते वर ते जय ते. १

राजकोट, चैत्र सुद ९, १९५७

(३६)

ॐ

आत्मसिद्धि

जे स्वरूप समज्या विना, पाम्यो दुःख अनंत,
समजाव्यु ते पद नमु, श्री सद्गुरु भगवंत १

वर्तमान आ काळमा, मोक्षमार्ग बहु लोप,
विचारवा आत्मार्थीने, भाख्यो अत्र अगोप्य २

कोई क्रियाजड थई रह्या, शुष्कज्ञानमा कोई,
माने मारग मोक्षनो करुणा ऊपजे जोई ३

बाह्य क्रियामा राचता, अंतर्भेद न काई,
ज्ञानमार्ग निषेधता, तेह क्रियाजड आई ४

बंध मोक्ष छे कल्पना, भाखे वाणीमाही
वर्ते मोहावेशमा शुष्कज्ञानी ते आही ५

वैराग्यादि सफळ तो, जो सह आतमज्ञान
तेम ज आतमज्ञाननी प्राप्तितणा निदान ६

त्याग विराग न चित्तमा, थाय न तेने ज्ञान
अटके त्याग विरागमा, तो भूले निजभान ७

ज्यां ज्यां जे जे योग्य छे, तहां समजवुं तेह;
त्यां त्यां ते ते आचरे, आत्मार्थी जन एह. ८

सेवे सद्गुरुचरणने, त्यागी दई निजपक्ष;
पामे ते परमार्थने, निजपदनो ले लक्ष. ९

आत्मज्ञान समदर्शिता, विचरे उदयप्रयोग;
अपूर्व वाणी परमश्रुत, सद्गुरु लक्षण योग्य. १०

प्रत्यक्ष सद्गुरु सम नहीं, परोक्ष जिन उपकार;
एवो लक्ष थया विना, ऊगे न आत्मविचार. ११

सद्गुरुना उपदेश वण, समजाय न जिनरूप,
समज्या वण उपकार शो ? समज्ये जिनस्वरूप. १२

आत्मादि अस्तित्वनां, जेह निरूपक शास्त्र;
प्रत्यक्ष सद्गुरु योग नहि, त्यां आधार सुपात्र. १३

अथवा सद्गुरुए कह्यां, जे अवगाहन काज,
ते ते नित्य विचारवां, करी मतांतर त्याज १४

रोके जीव स्वच्छंद तो, पामे अवश्य मोक्ष;
पाम्या एम अनंत छे, भाख्युं जिन निर्दोष १५

प्रत्यक्ष सद्गुरु योगथी, स्वच्छंद ते रोकाय;
अन्य उपाय कर्या थकी, प्राये बमणो थाय. १६

स्वच्छंद मत आग्रह तजी वर्ते सद्गुरुलक्ष,
समकित तने भाखियु, कारण गणी प्रत्यक्ष १७

मानादिक शत्रु महा, निजछंदे न मराय,
जाता सद्गुरु शरणमा, अल्प प्रयासे जाय १८

जे सद्गुरु उपदेशथी, पाम्यो केवळज्ञान,
गुरु रह्या छद्मस्थ पण, विनय करे भगवान १९

एवो माग विनय तणा भाख्यो श्री वीतराग,
मूळ हेतु ए मार्गनो समजे कोई सुभाग्य २०

असद्गुरु ए विनयनो, लाभ लहे जो काई,
महामोहनीय कर्मथी, बूडे भवजळ माही २१

होय मुमुक्षु जीव ते, समजे एह विचार,
होय मतार्थी जीव ते, अवळो ले निर्धार २२

होय मतार्थी तहने, थाय न आतमलक्ष
तेह मतार्थी लक्षणा अहीं कह्या निपक्ष २३

मतार्थी-लक्षण

बाह्यत्याग पण ज्ञान नहि, ते माने गुरु सत्य,
अथवा निजकुळधर्मना, ते गुरुमा ज ममत्व २४

जे जिनदेह प्रमाण ने, समवसरणादि सिद्धि;
वर्णन समजे जिननु, रोकी रहे निज बुद्धि. २५
प्रत्यक्ष सद्‌गुरुयोगमा, वर्ते दृष्टि विमुख;
असद्‌गुरुने दृढ करे, निज मानार्थे मुख्य २६
देवादि गति भगमा, जे समजे श्रुतज्ञान;
माने निज मत वेषनो, आग्रह मुक्तिनिदान. २७
लह्यु स्वरूप न वृत्तिनु, ग्रह्यु व्रत अभिमान;
ग्रहे नही परमार्थने, लेवा लौकिक मान. २८
अथवा निश्चय नय ग्रहे, मात्र शब्दनी मांय;
लोपे सद्‌व्यवहारने, साधन रहित थाय. २९
ज्ञानदशा पामे नही, साधनदशा न कांई;
पामे तेनो संग जे, ते बूडे भवमाही ३०
ए पण जीव मतार्थमा, निजमानादि काज,
पामे नहि परमार्थने, अन्-अधिकारीमा ज ३१
नहि कषाय उपशांतता, नहि अंतर वैराग्य,
सरळपणु न मध्यस्थता, ए मतार्थी दुर्भाग्य ३२
लक्षण कह्या मतार्थीना, मतार्थ जावा काज,
हवे कहु आत्मार्थीना, आत्म-अर्थ सुखसाज. ३३

આત્માર્થી-લક્ષણ

આત્મજ્ઞાન ત્યાં મુનિપણું, તે સાચા ગુરુ હોય,
બાકી કુળગુરુ કલ્પના, આત્માર્થી નહિ જોય ૩૪

પ્રત્યક્ષ સદ્ગુરુ પ્રાપ્તિનો, ગણે પરમ ઉપકાર;
ત્રણે યોગ એકત્વથી, વર્તે આજ્ઞાધાર. ૩૫

એક હોય ત્રણ કાળમાં, પરમારથનો પંથ,
પ્રેરે તે પરમાર્થને, તે વ્યવહાર સમંત ૩૬

એમ વિચારી અંતરે, શોધે સદ્ગુરુ યોગ,
કામ એક આત્માર્થનું બીજો નહિ મનરોગ ૩૭

કષાયની ઉપશાંતતા માત્ર મોક્ષ અભિલાષ
ભવે ખેદ પ્રાણીદયા ત્યાં આત્માર્થ નિવાસ ૩૮

દશા ન એવી જ્યાં સુધી, જીવ લહે નહિ જોગ
મોક્ષમાર્ગ પામે નહીં મટે ન અંતર રોગ ૩૯

આવે જ્યાં એવી દશા, સદ્ગુરુબોધ સુહાય
તે બોધે સુવિચારણા ત્યાં પ્રગટે સુખદાય ૪૦

જ્યાં પ્રગટે સુવિચારણા ત્યાં પ્રગટે નિજ જ્ઞાન
જે જ્ઞાને ક્ષય મોહ થઈ, પામે પદ નિર્વાણ ૪૧

ऊपजे ते सुविचारणा, मोक्षमार्ग समजाय;
गुरुशिष्य संवादथी, भाखुं षट्पद आंही. ४२

षट्पदनामकथन

'आत्मा छे', 'ते नित्य छे', 'छे कर्त्ता निजकर्म',
'छे भोक्ता' वळी 'मोक्ष छे', 'मोक्ष उपाय सुधर्म.' ४३

षट्स्थानक संक्षेपमां, षट्दर्शन पण तेह;
समजावा परमार्थने, कह्या ज्ञानीए एह ४४

(१) शंका-शिष्य उवाच

नथी दृष्टिमां आवतो, नथी जणातुं रूप,
बीजो पण अनुभव नहीं, तेथी न जीवस्वरूप ४५

अथवा देह ज आतमा, अथवा इंद्रिय प्राण,
मिथ्या जुदो मानवो, नहीं जुदुं एंधाण. ४६

वळी जो आतमा होय तो, जणाय ते नहि केम ?
जणाय जो ते होय तो, घट पट आदि जेम. ४७

माटे छे नहि आतमा, मिथ्या मोक्ष उपाय;
ए अंतर शंका तणो, समजावो सदुपाय. ४८

(१) समाधान-सद्गुरु उवाच

भास्यो देहाध्यासथी, आत्मा देह समान,
पण ते बन्ने भिन्न छे प्रगट लक्षणे भान ४९

भास्यो देहाध्यासथी, आत्मा देह समान,
पण ते बन्ने भिन्न छे, जेम असि ने म्यान ५०

जे द्रष्टा छे दृष्टिनो, जे जाणे छे रूप,
अबाध्य अनुभव जे रहे, ते छे जीवस्वरूप ५१

छे इंद्रिय प्रत्येकने, निज निज विषयनुं ज्ञान,
पांच इंद्रीना विषयनुं पण आत्माने भान ५२

देह न जाणे तेहने, जाणे न इंद्री प्राण,
आत्मानी सत्ता वडे, तेह प्रवर्ते जाण ५३

सर्व अवस्थाने विषे, न्यारो सदा जणाय;
प्रगटरूप चैतन्यमय ए एंधाण सदाय ५४

घट, पट आदि जाण तुं, तेथी तेने मान;
जाणनार ते मान नहि, कहिए केवुं ज्ञान? ५५

परम बुद्धि कृश देहमां, स्थूळ देह मति अल्प,
देह होय जो आतमा, घटे न आम विकल्प ५६

जड चेतननो भिन्न छे, केवळ प्रगट स्वभाव;
एकपणुं पामे नही, त्रणे काळ द्वय भाव. ५७

आत्मानी शंका करे, आत्मा पोते आप;
शंकानो करनार ते, अचरज एह अमाप. ५८

(२) शंका-शिष्य उवाच

आत्माना अस्तित्वना, आपे कह्या प्रकार;
संभव तेनो थाय छे, अंतर कर्ये विचार. ५९

बीजी शंका थाय त्यां, आत्मा नहि अविनाश,
देहयोगथी ऊपजे, देहवियोगे नाश. ६०

अथवा वस्तु क्षणिक छे, क्षणे क्षणे पलटाय;
ए अनुभवथी पण नही, आत्मा नित्य जणाय. ६१

(२) समाधान-सद्गुरु उवाच

देह मात्र संयोग छे, वळी जड रूपी दृश्य,
चेतनना उत्पत्ति लय, कोना अनुभव वश्य ? ६२

जेना अनुभव वश्य ए, उत्पन्न लयनुं ज्ञान;
ते तेथी जुदा विना, थाय न केमे भान. ६३

जे सयोगो देखिये, ते ते अनुभव दश्य,
ऊपजे नहि सयोगथी, आत्मा नित्य प्रत्यक्ष ६४

जडथी चेतन ऊपजे, चेतनथी जड थाय,
एवो अनुभव कोईने, क्यारे क्दी न थाय ६५

कोई सयोगोथी नही, जेनी उत्पत्ति थाय,
नाश न तेनो काईमा, तथी नित्य सदाय ६६

क्रोधादि तरतम्यता, सर्पादिक्नी माय,
पूवजन्म सस्कार ते, जीवनित्यता त्याय ६७

आत्मा द्रव्ये नित्य छे, पर्याये पल्टाय,
बाळादि वय त्रण्यनु, ज्ञान एकने थाय ६८

अथवा ज्ञान क्षणिकनु जे जाणी वदनार,
वदनारो त क्षणिक नहि, कर अनुभव निर्धार ६९

क्यारे काई वस्तुनो, केवळ होय न नाश,
चेतन पामे नाश तो, केमा भळे तपास ७०

(३) शका-शिष्य उवाच

कर्त्ता जीव न कमनो, कम ज कर्त्ता कर्म,
अथवा सहज स्वभाव का, कम जीवनो धम ७१

आत्मा सदा असंग ने, करे प्रकृति बंध;
अथवा ईश्वर प्रेरणा, तेथी जीव अबंध. ७२

माटे मोक्ष उपायनो, कोई न हेतु जणाय,
कर्मतणु कर्त्तापणुं, का नहि, का नहि जाय. ७३

(२) समाधान—सद्गुरु उवाच

होय न चेतन प्रेरणा, कोण ग्रहे तो कर्म ?
जडस्वभाव नहि प्रेरणा, जुओ विचारी धर्म. ७४

जो चेतन करतु नथी, नथी थता तो कर्म,
तेथी सहज स्वभाव नहि, तेम ज नहि जीवधर्म. ७५

केवळ होत असग जो, भासत तने न केम ?
असग छे परमार्थथी, पण निज भाने तेम. ७६

कर्त्ता ईश्वर कोई नहि, ईश्वर शुद्ध स्वभाव;
अथवा प्रेरक ते गण्ये, ईश्वर दोषप्रभाव. ७७

चेतन जो निज भानमा, कर्त्ता आप स्वभाव;
वर्ते नहि निज भानमा, कर्त्ता कर्म-प्रभाव. ७८

(४) शंका—शिष्य उवाच

जीव कर्म कर्ता कहो, पण भोक्ता नहि सोय,
शुं समजे जड कर्म के, फळ परिणामी होय? ७९

फळदाता ईश्वर गण्ये, भोक्तापणुं सधाय,
एम कह्ये ईश्वरतणुं, ईश्वरपणुं ज जाय ८०

ईश्वर सिद्ध थया विना जगत नियम नहि होय,
पछी शुभाशुभ कर्मनां भोग्यस्थान नहि कोय ८१

(४) समाधान—सद्गुरु उवाच

भावकर्म निज कल्पना, माटे चेतनरूप,
जीववीर्यनी स्फुरणा ग्रहण करे जडधूप ८२

झेर सुधा समजे नहीं जीव खाय फळ थाय,
एम शुभाशुभ कर्मनुं भोक्तापणुं जणाय ८३

एक रांक ने एक नृप ए आदि जे भेद,
कारण विना न कार्य ते, ते ज शुभाशुभ वेद्य ८४

फळदाता ईश्वरतणी, एमां नथी जरूर;
कर्म स्वभावे परिणमे, थाय भोगथी दूर. ८५

ते ते भोग्य विशेषना, स्थानक द्रव्य स्वभाव,
गहन वात छे शिष्य आ, कही संक्षेपे साव ८६

(५) शंका—शिष्य उवाच

कर्त्ता भोक्ता जीव हो, पण तेनो नहि मोक्ष;
वीत्यो काळ अनंत पण, वर्तमान छे दोष ८७

शुभ करे फळ भोगवे, देवादि गतिमांय,
अशुभ करे नरकादि फळ, कर्म रहित न क्यांय ८८

(५) समाधान—सद्‌गुरु उवाच

जेम शुभाशुभ कर्मपद, जाण्यां सफळ प्रमाण,
तेम निवृत्ति सफळता, माटे मोक्ष सुजाण. ८९

वीत्यो काळ अनंत ते, कर्म शुभाशुभ भाव;
तेह शुभाशुभ छेदतां, ऊपजे मोक्ष स्वभाव. ९०

देहादिक संयोगनो, आत्यंतिक वियोग;
सिद्ध मोक्ष शाश्वत पदे, निज अनंत सुखभोग. ९१

(६) शंका—शिष्य उवाच

होय कदापि मोक्षपद, नहि अविरोध उपाय,
कर्मो काळ अनंतनां, शाथी छेद्यां जाय ? ९२

अथवा मत दर्शन घणा, कहे उपाय अनेक;
तेमा मत साचो कयो, बने न एह विवेक ९३

कई जातिमा मोक्ष छे कया वेषमा मोक्ष,
एनो निश्चय ना बने घणा भेद ए दोष ९४

तेथी एम जणाय छे, मळे न मोक्ष उपाय,
जीवादि जाण्या तणो शो उपकार ज थाय ? ९५

पाचे उत्तरथी थयु, समाधान सर्वांग,
समजु मोक्ष उपाय तो, उदय उदय सद्भाग्य ९६

(६) समाधान—सद्गुरु उवाच

पाचे उत्तरनी थई आत्मा विषे प्रतीत,
थाशे मोक्षोपायनी सहज प्रतीत ए रीत ९७

कर्मभाव अज्ञान छे मोक्षभाव निजवास,
अंधकार अज्ञान सम, नाशे ज्ञानप्रकाश ९८

जे जे कारण बंधनां तेह बंधनो पंथ
ते कारण छेदक दशा मोक्षपंथ भवअंत ९९

राग द्वेष अज्ञान ए मुख्य कर्मनी ग्रंथ,
थाय निवृत्ति जेहथी, ते ज मोक्षनो पंथ १००

मत दर्शन आग्रह तजी, वर्ते सद्गुरुलक्ष,
लहे शुद्ध समकित ते, जेमा भेद न पक्ष ११०
वर्ते निजस्वभावनो, अनुभव लक्ष प्रतीत,
वृत्ति वहे निजभावमा, परमार्थे समकित १११
वर्धमान समकित थई, टाळे मिथ्याभास,
उदय थाय चारित्रनो, वीतरागपद वास ११२
केवळ निजस्वभावनु, अखड वर्ते नान,
कहीए केवळनान ते, देह छता निर्वाण ११३
कोटि वर्षनु स्वप्न पण जाग्रत थता शमाय,
तेम विभाव अनादिनो, नान थता दूर थाय ११४
छूटे देहाध्यास तो, नहि कर्त्ता तु कर्म,
नहि भोक्ता तु तेहनो, ए ज धर्मनो मर्म ११५
ए ज धर्मथी मोक्ष छे, तु छो मोक्ष स्वरूप,
अनत दर्शन नान तु, अव्याबाध स्वरूप ११६
शुद्ध बुद्ध चैतन्यघन, स्वयज्योति सुखधाम,
बीजु कहीए केटलु ? कर विचार तो पाम ११७
निश्चय सर्वे ज्ञानीना आवी अत्र समाय,
धरी मौनता एम कही, सहजसमाधि माय ११८

पट स्थानक समजावीने भिन्न बताव्यो आप,
म्यान थकी तरवारवत्, ए उपकार अमाप १२७

उपसंहार

दर्शन षटे समाय छे, आ षट् स्थानक माही
विचारता विस्तारथी, संशय रहे न काई १२८

आत्मभ्रांति सम रोग नहि, सद्गुरु वैद्य सुजाण,
गुरुआज्ञा सम पथ्य नहि औषध विचार ध्यान १२९

जो इच्छो परमार्थ तो करो सत्य पुरुषार्थ,
भवस्थिति आदि नाम लई, छेदो नहि आत्मार्थ १३०

निश्चयवाणी साभळी, साधन तजवा नो'य,
निश्चय राखी लक्षमा, साधन करवा सोय १३१

नय निश्चय एकातथी, आमा नथी कहेल,
एकाते व्यवहार नहि, बन्ने साथ रहेल १३२

गच्छमतनी जे कल्पना, ते नहि सद्व्यवहार,
भान नही निजरूपनु ते निश्चय नहि सार १३३

आगळ ज्ञानी थई गया, वर्तमानमा होय,
थाशे काळ भविष्यमा, मार्गभेद नहि कोय १३४

(४९)

आत्मसिद्धि अर्थ

१ जे आत्मस्वरूप समज्या विना भूतकाळे हु अनत दु ख पाम्यो, त पद जेणे समजाय एटले भविष्यकाळे उत्पन्न थवा योग्य एवा अनत दु ख पामत ते मूळ जेणे छेद्यु एवा श्री सद्गुरु भगवानने नमस्कार करु छु

२ आ वर्तमान काळमा मोक्षमार्ग घणो लोप थई गयो छे ज मोक्षमार्ग आत्मार्थीने विचारवा माटे (गुरु शिष्यना सवादरूपे) अत्रे प्रगट कहीए छीए

३ काई क्रियाने ज वळगी रह्या छे अन कोई शुष्क ज्ञानने ज वळगी रह्या छे, एम मोक्षमार्ग माने छे, जे जोईने दया आवे छे

४ बाह्य क्रियामा ज मात्र राचा रह्या छे अतर कई भेदायु नथी, अने ज्ञानमार्गने निषेध्या करे छ, त अहो क्रियाजड कह्या छे

५ बध मोक्ष मात्र कल्पना छे, एवा निश्चयवाक्य मात्र वाणामां बोले छे अन तथारूप दशा थई नथी, मोहना प्रभावमा वर्ते छे, ए अहो शुष्कज्ञानी कह्या छे

६. वैराग्यत्यागादि जो साथे आत्मज्ञान होय तो सफळ छे, अर्थात् मोक्षनी प्राप्तिना हेतु छे, अने ज्या आत्मज्ञान न होय त्या पण जो ते आत्मज्ञानने अर्थे करवामा आवता होय, तो ते आत्मज्ञाननी प्राप्तिना हेतु छे.

७. जेना चित्तमा त्याग अने वैराग्यादि साधनो उत्पन्न थया न होय तेने ज्ञान न थाय, अने जे त्याग विरागमा ज अटकी रही, आत्मज्ञाननी आकांक्षा न राखे, ते पोतानु भान भूले, अर्थात् अज्ञानपूर्वक त्यागवैराग्यादि होवाथी ते पूजासत्कारादिथी पराभव पामे, अने आत्मार्थ चूकी जाय

८. ज्या ज्या जे जे योग्य छे, त्या त्या ते ते समजे, अने त्या त्या ते ते आचरे ए आत्मार्थी पुरुपना लक्षणो छे.

९. पोताना पक्षने छोडी दई, ते सद्गुरुना चरणने सेवे ते परमार्थने पामे, अने आत्मस्वरूपनो लक्ष तेने थाय.

१० आत्मज्ञानने विषे जेमनी स्थिति छे, एटले, परभावनी इच्छाथी जे रहित थया छे; तथा शत्रु, मित्र, हर्ष, शोक, नमस्कार, तिरस्कारादि भाव प्रत्ये जेने समता वर्त्ते

छे, मात्र पूर्वे उत्पन्न थयेला एवा कर्मोना उदयने लीधे जैमनो विचरवा आदि क्रिया छे, अज्ञानी करता जेनी वाणी प्रत्यक्ष जुदी पडे छे, अने षटदर्शनना तात्पर्यने जाणे छे ते सद्गुरुना उत्तम लक्षणो छे

११ ज्या सुधी जीवने पूर्वकाळे थई गयेला एवा जिननी वात पर ज लक्ष रह्या करे, अने तनो उपकार कह्या करे, अने जेथी प्रत्यक्ष आत्मभ्रांतिनु समाधान थाय एवा सद्गुरुनो समागम प्राप्त थयो होय तेमा परोक्ष जिनोना वचन करता माटो उपकार समायो छे तेम जे न जाणे तेन आत्मविचार उत्पन्न न थाय

१२ सद्गुरुना उपदेश विना जिननु स्वरूप समजाय नही, अने स्वरूप समजाया विना उपकार शो थाय ? जा सद्गुरुउपदेशे जिननु स्वरूप समज तो समजनारनो आत्मा परिणामे जिननी दशाने पामे

१३ जे जिनागमादि आत्माना होवापणानो तथा परलोकादिना होवापणाना उपदेश करवावाळा शास्त्रो छे, त पण ज्या प्रत्यक्ष सद्गुरुनो जोग न होय त्या सुपात्र जीवन आधाररूप छे पण सद्गुरु समान ते भ्रांतिना छेदक कह्या न थाय

१४. अथवा जो सद्गुरुए ते शास्त्रो विचारवानी आज्ञा दीधी होय, तो ते शास्त्रो मतातर एटले कुळधर्मने सार्थक करवानो हेतु आदि भ्राति छोडीने मात्र आत्मार्थे नित्य विचारवा

१५. जीव अनादि काळथी पोताना डहापणे अने पोतानी इच्छाए चाल्यो छे, एनुं नाम 'स्वच्छंद' छे. जो ते स्वच्छदने रोके तो जरुर ते मोक्षने पामे, अने ए रीते भूतकाळे अनत जीव मोक्ष पाम्या छे एम राग, द्वेष अने अज्ञान एमानो एक्के दोष जेने विषे नथी एवा दोषरहित वीतरागे कह्युं छे.

१६. प्रत्यक्ष सद्गुरुना योगथी ते स्वच्छद रोकाय छे, बाकी पोतानी इच्छाए बीजा घणा उपाय कर्या छता घणु करीने ते बमणो थाय छे

१७. स्वच्छदने तथा पोताना मतना आग्रहने तजीने जे सद्गुरुना लक्षे चाले तेने प्रत्यक्ष कारण गणीने वीतरागे 'समकित' कह्यु छे.

१८ मान अने पूजासत्कारादिनो लोभ ए आदि महाशत्रु छे, ते पोताना डहापणे चालतां नाश पामे नही, अने सद्गुरुना शरणमा जता सहज प्रयत्नमा जाय.

१९ जे सद्गुरुना उपदेशथी कोई केवळज्ञानने पाम्या ते सद्गुरु हजु छद्मस्थ रह्या होय, तो पण जे केवळज्ञानने पाम्या छे एवा ते केवळीभगवान छद्मस्थ एवा पोताना सद्गुरुनी वैयावच्च कर

२० एवो विनयनो मार्ग श्री जिने उपदेश्यो छे ए मार्गनो मूळ हेतु एटले तेथी आत्माने शो उपकार थाय छे ते कोईक सुभाग्य एटले सुलभबोधी अथवा आराधक जीव होय ते समज

२१ आ विनयमार्ग कह्यो तेनो लाभ एटले ते शिष्यादिनी पासे कराववानी इच्छा करीने जो कोई पण असद्गुरु पोताने विषे सद्गुरुपणु स्थापे तो ते महामोहनीय कर्म उपार्जन करीने भवसमुद्रमा बूडे

२२ जे मोक्षार्थी जीव होय ते आ विनयमार्गादिनो विचार समजे, अने जे मतार्थी होय ते तेनो अवळो निर्धार करे, एटले का पोते तेवो विनय शिष्यादि पासे करावे, अथवा असद्गुरुने विषे पोते सद्गुरुना भ्रांति राखी आ विनयमार्गनो उपयोग कर

२३. जे मतार्थी जीव होय तेने आत्मज्ञाननो लक्ष थाय नही, एवा मतार्थी जीवनां अहीं निष्पक्षपाते लक्षणो कह्या छे.

२४. जेने मात्र बाह्यथी त्याग देखाय छे पण आत्मज्ञान नथी, अने उपलक्षणथी अंतरंग त्याग नथी, तेवा गुरुने साचा गुरु माने, अथवा तो पोताना कुळधर्मना गमे तेवा गुरु होय तोपण तेमा ज ममत्व राखे

२५ जे जिनना देहादिनुं वर्णन छे तेने जिननु वर्णन समजे छे, अने मात्र पोताना कुळधर्मना देव छे माटे मारापणाना कल्पित रागे समवसरणादि माहात्म्य कह्या करे छे, अने तेमा पोतानी बुद्धिने रोकी रहे छे; एटले परमार्थ हेतुस्वरूप एवुं जिननु जे अंतरंगस्वरूप जाणवा योग्य छे ते जाणता नथी, तथा ते जाणवानुं प्रयत्न करता नथी, अने मात्र समवसरणादिमा ज जिननु स्वरूप कहीने मतार्थमा रहे छे.

२६. प्रत्यक्ष सद्गुरुनो क्यारेक योग मळे तो दुराग्रहादिछेदक तेनी वाणी साभळीने तेनाथी अवळी रीते चाले, अर्थात् ते हितकारी वाणीने ग्रहण करे नही, अने

पोते खरेखरो दृढ मुमुक्षु छे एवु मान मुख्यपणे मेळववाने अर्थे असद्‌गुरु समीपे जईने पोते तेना प्रत्ये पोतानु विशेष दृढपणु जणावे

२७ देव-नारकादि गतिना 'भागा' आदिना स्वरूप कोईक विशेष परमार्थहेतुथी कह्या छे ते हेतुने जाण्यो नथी, अने ते भगजाळने श्रुतज्ञान जे समजे छे, तथा पोताना मतनो वचनो आग्रह राखवामा ज मुक्तिनो हेतु माने छे

२८ वृत्तिनु स्वरूप शु ? ते पण ते जाणतो नथी, अने 'हु व्रतधारी छु' एवु अभिमान धारण कर्यु छे क्वचित परमार्थना उपदेशना योग बने तोपण लोकोमा पोतानु मान अने पूजासत्कारादि जता रहेशे, अथवा ते मानादि पछी प्राप्त नही थाय एम जाणीने ते परमार्थने ग्रहण करे नही

२९ अथवा 'समयसार' के 'योगवासिष्ठ' जेवा ग्रथो वाची ते मात्र निश्चयनयने ग्रहण करे केवी रीते ग्रहण करे ? मात्र कहेवारूपे, अतरगमा तथारूप गुणनी कशी स्पर्शना नही, अने सद्‌गुरु, सत्‌शास्त्र तथा वैराग्य,

विवेकादि साचा व्यवहारने लोपे, तेम ज पोताने ज्ञानी मानी लईने साधनरहित वर्त्ते

३० ते ज्ञानदशा पामे नही, तेम वैराग्यादि साधन-दशा पण तेने नथी, जेथी तेवा जीवनो मग वीजा जे जीवने थाय ते पण भवसागरमा डूवे.

३१ ए जीव पण मतार्थमा ज वर्त्ते छे, केमके उपर कह्या जीव, तेने जेम कुळधर्मादिथी मतार्थता छे, तेम आने ज्ञानी गणाववाना माननी इच्छाथी पोताना शुष्कमतनो आग्रह छे, माटे ते पण परमार्थने पामे नही, अने अन्-अधिकारी एटले जेने विषे ज्ञान परिणाम पामवा योग्य नही एवा जीवोमा ते पण गणाय.

३२ जेने क्रोध, मान, माया, लोभरूप कषाय पातळा पड्या नथी, तेम जेने अतरवैराग्य उत्पन्न थयो नथी, आत्मामा गुण ग्रहण करवारूप सरळपणु जेने रह्यु नथी, तेम सत्यासत्यतुलना करवाने जेने अपक्षपातदृष्टि नथी, ते मतार्थी जीव दुर्भाग्य एटले जन्म, जरा, मरणने छेदवावाळा मोक्षमार्गने पामवा योग्य एवं तेनुं भाग्य न समजवुं.

३३ एम मतार्थी जीवना लक्षण कह्या ते कहेवानो हेतु ए छे के कोई पण जीवनो ते जाणीने मताथ जाय हव आत्मार्थी जीवना लक्षण कहीए छीए—ते लक्षण केवां छ ? तो के आत्माने अव्याबाध सुखनी सामग्रीना हेतु छे

३४ ज्यां आत्मज्ञान होय त्यां मुनिपणु होय अर्थात् आत्मज्ञान न होय त्यां मुनिपणु न ज संभवे 'ज सम्मंति पासह त मोणंति पासह' —ज्यां समकित एटले आत्मज्ञान छे त्यां मुनिपणु जाणो एम 'आचारांग सूत्र' मां कह्यु छे एटले जेमां आत्मज्ञान होय ते साचा गुरु छे एम जाणे छे, अने आत्मज्ञानरहित होय तो पण पोताना कुळना गुरुने सद्गुरु मानवा ए मात्र कल्पना छ, तेथी कंई भवच्छेद न थाय एम आत्मार्थी जुए छे

३५ प्रत्यक्ष सद्गुरुनी प्राप्तिनो मोटो उपकार जाणे, अर्थात् शास्त्रादिथी जे समाधान थई शकवा योग्य नथी, अने जे दोषो सद्गुरुनी आज्ञा धारण कर्या विना जता नथी ते सद्गुरुयोगथी समाधान थाय, अने ते दोषो टळे, माटे प्रत्यक्ष सद्गुरुनो मोटो उपकार जाणे, अने ते सद्

गुरु प्रत्ये मन, वचन, कायानी एकतार्थी आज्ञाकितपणे वर्ते.

३६. त्रणे काळने विषे परमार्थनो पंथ एटले मोक्षनो मार्ग एक होवो जोईए अने जेथी ते परमार्थ सिद्ध थाय ते व्यवहार जीवे मान्य राखवो जोईए, बीजो नही.

३७. एम अंतरमा विचारीने जे सद्गुरुना योगनो शोध करे, मात्र एक आत्मार्थनी इच्छा राखे पण मान-पूजादिक, सिद्धिरिद्धिनी कशी इच्छा राखे नही— ए रोग जेना मनमा नथी.

३८. ज्या कषाय पातळा पड्या छे, मात्र एक मोक्षपद सिवाय बीजा कोई पदनी अभिलाषा नथी, ससार पर जेने वैराग्य वर्ते छे, अने प्राणीमात्र पर जेने दया छे, एवा जीवने विषे आत्मार्थनो निवास थाय

३९. ज्या सुधी एवी जोगदशा जीव पामे नही, त्या सुधी तेने मोक्षमार्गनी प्राप्ति न थाय, अने आत्म-भ्रातिरूप अनत दुःखनो हेतु एवो अतररोग न मटे.

४०. एवी दशा ज्या आवे त्या सद्गुरुनो बोध शोभे अर्थात् परिणाम पामे, अने ते बोधना परिणामथी सुख-दायक एवी सुविचारदशा प्रगटे.

४१ ज्या सुविचारदशा प्रगटे त्या आत्मज्ञान उत्पन्न थाय अने ते ज्ञानथी मोहनो क्षय करी निर्वाणपदने पामे

४२ जेथी ते सुविचारदशा उत्पन्न थाय अने मोक्ष मार्ग समजवामा आवे ते छ पदरूपे गुरुशिष्यना संवादथी करीने अही कहु छु

४३ 'आत्मा छे', 'ते आत्मा नित्य छे', 'ते आत्मा पोताना कर्मनो कर्ता छे', 'ते कर्मनो भोक्ता छे', तथी मोक्ष थाय छे', अने ते मोक्षनो उपाय एवो सतधर्म छे

४४ ए छ स्थानक अथवा छ पद अही संक्षेपमा कह्या छ अने विचार करवाथी षटदर्शन पण ते ज छे परमार्थ समजवाने माटे ज्ञानीपुरुषे ए छ पदो कह्या छे

४५ दृष्टिमा आवतो नथी, तेम जेनु कई रूप जणातु नथी, तेम स्पर्शादि बीजा अनुभवथी पण जणावापणु नथी, माटे जीवनु स्वरूप नथी, अर्थात् जीव नथी

४६ अथवा देह छे ते ज आत्मा छे, अथवा इंद्रियो छे ते आत्मा छे, अथवा श्वासोच्छ्वास छ ते आत्मा छे, अर्थात ए सौ एकना एक देहरूपे छे माटे आत्माने जुदो

मानवो ते मिथ्या छे, केमके तेनु कशु जुदु सँधाण एटले चिह्न नथी.

४७. अने जो आत्मा होय तो ते जणाय शा माटे नही ? जो घट, पट, आदि पदार्थो छे तो जेम जणाय छे, तेम आत्मा होय तो शा माटे न जणाय ?

४८ माटे आत्मा छे नही, अने आत्मा नथी एटले तेना मोक्षना अर्थे उपाय करवा ते फोकट छे, ए मारा अंतरनी शकानो कंई पण सदुपाय समजावो एटले समाधान होय तो कहो

४९ देहाध्यासथी एटले अनादिकाळथी अज्ञानने लीधे देहनो परिचय छे, तेथी आत्मा देह जेवो अर्थात् तने देह भास्यो छे; पण आत्मा अने देह 'बन्ने जुदा छे, केमके बेय जुदा जुदा लक्षणथी प्रगट भानमा आवे छे

५० अनादिकाळथी अज्ञानने लीधे देहना परिचयथी देह ज आत्मा भास्यो छे, अथवा देह जेवो आत्मा भास्यो छे; पण जेम तरवार ने म्यान, म्यानरूप लागता छता बन्ने जुदा जुदा छे, तेम आत्मा अने देह बन्ने जुदा जुदा छे.

५१ ते आत्मा दृष्टि एटले आम्वथी ययाथी देखाय ? बेमके ऊलटा तेनो ते जोनार छे स्यूल्सूक्ष्मादि रूपने जे जाणे छे, अने सवने बाघ करता करता कोई पण प्रकारे जेनो बाघ करी शकातो नथी एवी वाकी जे अनुभव रहे छे ते जीवन् स्वरुप छे

५२ कर्णेद्रियथी साभळ्यु ते त कर्णेद्रिय जाणे छे, पण चक्षु इद्रिय तेने जाणती नयी, अने चक्षु इद्रिये दीठलु ते कर्णेद्रिय जाणती नथी अर्थात सौ सौ इद्रियने पोतपोताना विषयनु ज्ञान छ, पण बीजी इद्रियोना विषयनु ज्ञान नथी, अने आत्माने तो पाचे इद्रियना विषयनु ज्ञान छे अर्थात जे त पाचे इद्रियाना ग्रहण करेला विषयने जाण छे त 'आत्मा' छे, अने आत्मा विना एवेक इद्रिय एकेक विषयन ग्रहण वर एम कह्य ते पण उपचारथी कह्यु छे

५३ देह तने जाणतो नथी इद्रियो तेने जाणती नथी, अने श्वासोच्छ्वासरूप प्राण पण तन जाणतो नथी, ते सौ एक आत्मानी सत्ता पामीने प्रवर्ते छ, नही तो जडपण पडचा रहे छ, एम जाण

५४. जाग्रत, स्वप्न अने निद्रा ए अवस्यामा वर्तती छतां ते ते अवस्याओथी जुदो जे रह्या करे छे, अने ते ते अवस्था व्यतीत थये पण जेनुं होवापणु छे, अने ते ते अवस्याने जे जाणे छे, एवो प्रगटस्वरूप चैतन्यमय छे, अर्थात् जाण्या ज करे छे एवो जेनो स्वभाव प्रगट छे, अने ए तेनी निशानी सदाय वर्ते छे; कोई दिवस ते निशानीनो भंग थतो नथी.

५५ घट, पट आदिने तुं पोते जाणे छे, 'ते छे' एम तुं माने छे, अने जे ते घट, पट आदिनो जाणनार छे तेने मानतो नथी; ए ज्ञान ते केवुं कहेवुं ?

५६ दुर्वळ देहने विषे परम वुद्धि जोवामा आवे छे, अने स्थूल देहने विषे थोडी वुद्धि पण जोवामां आवे छे, जो देह ज आत्मा होय तो एवो विकल्प एटले विरोध थवानो वखत न आवे.

५७ कोई काळे जेमां जाणवानो स्वभाव नथी ते जड, अने सदाय जे जाणवाना स्वभाववान छे ते चेतन, एवो वेयनो केवळ जुदो स्वभाव छे, अने ते कोई पण प्रकारे

એકપણું પામવા યોગ્ય નથી અને કાળ જડ જડભાવે, અને ચેતન ચેતનભાવે રહે એવો બયનો જુદો જુદો દ્વતભાવ પ્રસિદ્ધ જ અનુભવાય છે

૫૮ આત્માની શંકા આત્મા આપ પોતે કરે છે જે શંકાનો કરનાર છે તે જ આત્મા છે તે જણાતો નથી, એ માપ ન થઈ શકે એવું આશ્ચર્ય છે

૫૯ આત્માના હોવાપણા વિષે આપે જે જે પ્રકાર કહ્યા તેનો અંતરમાં વિચાર કરવાથી સમ્ભવ થાય છે

૬૦ પણ બીજી શંકા થાય છે, કે આત્મા છે તો પણ તે અવિનાશ એટલે નિત્ય નથી, ત્રણે કાળ હોય એવો પદાર્થ નથી, માત્ર દેહના સયોગથી ઉત્પન્ન થાય, અને વિયોગે વિનાશ પામે

૬૧ અથવા વસ્તુ ક્ષણે ક્ષણે બદલાતી જોવામાં આવે છે, તેથી સર્વ વસ્તુ ક્ષણિક છે, અને અનુભવથી જોતા પણ આત્મા નિત્ય જણાતો નથી

૬૨ દેહ માત્ર પરમાણુનો સયોગ છે, અથવા સયોગે કરી આત્માના સબધમાં છ વળી તે દેહ જડ છે, રૂપી છે,

अने दृश्य एटले बीजा कोई द्रष्टानो ते जाणवानो विषय छे, एटले ते पोते पोताने जाणतो नथी, तो चेतनना उत्पत्ति अने नाश ते क्याथी जाणे ? ते देहना परमाणुए परमाणुनो विचार करता पण ते जड ज छे, एम समजाय छे. तेथी तेमाथी चेतननी उत्पत्ति थवा योग्य नथी, अने उत्पत्ति थवा योग्य नथी तेथी चेतन तेमां नाश पण पामवा योग्य नथी. वळी ते देह रूपी एटले स्थूलादि परिणामवाळो छे; अने चेतन द्रष्टा छे, त्यारे तेना सयोगथी चेतननी उत्पत्ति शी रीते थाय ? अने तेमा लय पण केम थाय ? देहमाथी चेतन उत्पन्न थाय छे, अने तेमा ज नाश पामे छे, ए वात कोना अनुभवने वश रही ? अर्थात् एम केणे जाण्यु ? केमके जाणनार एवा चेतननी उत्पत्ति देहथी प्रथम छे नही, अने नाश तो तेथी पहेला छे, त्यारे ए अनुभव थयो कोने ?

६३ जेना अनुभवमा ए उत्पत्ति अने नाशनु ज्ञान वर्ते ते भान तेथी जुदा विना कोई प्रकारे पण सम्भवतु नथी, अर्थात् चेतनना उत्पत्ति, लय थाय छे एवो कोईने पण अनुभव थवा योग्य छे नही

६४ जे जे संयोगो ***संयोग*** छीए ते ते अनुभवस्वरूप एवा आत्माना दृश्य *** तने आत्मा जाणे छे, अने ते संयोगनुं स्वरूप विचारता एवो कोई पण संयोग समजातो नथी के जेथी आत्मा उत्प** थाय छे, माटे आत्मा संयोगथी नहीं उत्पन्न थयेल *वा छे, अर्थात् असंयोगी छे स्वाभाविक पदार्थ छे, माटे ते प्रत्यक्ष 'नित्य' समजाय छे

६५ जडथी चेतन ऊपजे अने चेतनथी जड उत्पन्न थाय एवो कोईने क्यारे कदी पण अनुभव थाय नही

६६ जेनी उत्पत्ति कोई पण संयोगोथी थाय नही, तेनो नाश पण कोईने विषे थाय नही माटे आत्मा त्रिकाळ 'नित्य छे

६७ क्रोधादि प्रकृतिओनु विशेषपणुं सर्प वगेरे प्राणीमां जन्मथी ज जोवामां आवे छे वर्तमान देहे तो ते अभ्यास कर्यो नथी, जन्मनी साथे ज ते छे, एटले ए पूर्वजन्मना ज संस्कार छे, जे पूर्वजन्म जीवनी नित्यता सिद्ध करे छे

६८ आत्मा वस्तुपणे नित्य छे समये समये ज्ञानादि परिणामना पलटवाथी तेना पर्यायनुं पलटवापणुं छे (कई

समुद्र पल्टातो नथी, मात्र मोजा पलटाय छे, तेनी पेठे.) जेम बाळ, युवान अने वृद्ध ए त्रण अवस्था छे, ते आत्माने विभावथी पर्याय छे, अने बाळ अवस्था वर्तता आत्मा बाळक जणातो, ते बाळ अवस्था छोडी त्यारे युवावस्था ग्रहण करी त्यारे युवान जणायो, अने युवावस्था तजी वृद्धावस्था ग्रहण करी त्यारे वृद्ध जणायो. ए त्रणे अवस्थानो भेद थयो ते पर्यायभेद छे, पण ते त्रणे अवस्थामा आत्मद्रव्यनो भेद थयो नही, अर्थात् अवस्थाओ बदलाई पण आत्मा बदलायो नथी आत्मा ए त्रणे अवस्थाने जाणे छे, अने ते त्रणे अवस्थानी तेने ज स्मृति छे त्रणे अवस्थामा आत्मा एक होय तो एम बने, पण जो आत्मा क्षणे क्षणे बदलातो होय तो तेवो अनुभव बने ज नही

६९ वळी अमुक पदार्थ क्षणिक छे एम जे जाणे छे, अने क्षणिकपणुं कहे छे ते कहेनार अर्थात् जाणनार क्षणिक होय नही; केमके प्रथम क्षणे अनुभव थयो तेने बीजे क्षणे ते अनुभव कह्यो शकाय, ते बीजे क्षणे पोते न होय तो क्याथी कहे ? माटे ए अनुभवथी पण आत्माना अक्षणिकपणानो निश्चय कर

७० वळी कोई पण वस्तुना नाश पण थाळे केवळ तो नाश थाय ज नहीं, मात्र अवस्थातर थाय, माटे चेतनना पण केवळ नाश थाय नहीं अने अवस्थांतररूप नाश थतो होय तो ते केवा मळे, अथवा क्या प्रकारनु अवस्थातर पामे ते तपास अमात घटादि पदार्थ फूटी जाय छे, एटले शब्दा एम तह छे के घडा नाश पाम्या छे, कई माटीपणु नाश पाम्यु नथी ते छिन्नभिन्न थई जई सूक्ष्ममा सूक्ष्म भूको थाय, तोपण परमाणुसमूहरूपे रहे, पण केवळ नाश न थाय अने तेमांनु एक परमाणु पण घटे नहीं, केमके अनुभववा जाता अवस्थांतर थई शके, पण पदार्थनो समूळगा नाश थाय एम भासी ज शकवा योग्य नथी एटले जो तु चेतननो नाश कहे, तो पण केवळ नाश तो कही ज शकाय नही, अवस्थातर रूप नाश कहेवाय जेम घट फूटी जई क्रमे करी परमाणु समूहरूपे स्थितिमा रहे, तेम चेतनना अवस्थातररूप नाश तारे कहेवा होय तो ते शी स्थितिमा रहे अथवा घटना परमाणुओ जेम परमाणुसमूहमा भळ्या तेम चेतन कई वस्तुमा भळवा योग्य छे ते तपास अर्थात् ए प्रकारे तु अनुभव करी जाईश तो कोईमा नही भळी शकवा योग्य

अथवा परस्वरूपे अवस्थातर नही पामवायोग्य एवुं चेतन एटले आत्मा तने भास्यमान थशे.

७१. जीव कर्मनो कर्त्ता नथी, कर्मना कर्त्ता कर्म छे अथवा अनायासे ते थया करे छे, एम नही, ने जीव ज तेनो कर्त्ता छे एम कहो तो पछी ते जीवनो धर्म ज छे, अर्थात् धर्म होवाथी क्यारेय निवृत्त न थाय.

७२ अथवा एम नही, तो आत्मा सदा असग छे, अने सत्त्वादि गुणवाळी प्रकृति कर्मनो बध करे छे, तेम नही, तो जीवने कर्म करवानी प्रेरणा ईश्वर करे छे, तेथी ईश्वरेच्छारूप होवाथी जीव ते कर्मथी 'अबध' छे

७३ माटे जीव कोई रीते कर्मनो कर्त्ता थई शकतो नथी, अने मोक्षनो उपाय करवानो कोई हेतु जणातो नथी, का जीवने कर्मनु कर्त्तापणु नथी अने जो कर्त्तापणु होय तो कोई रीते ते तेनो स्वभाव मटवा योग्य नथी.

७४ चेतन एटले आत्मानी प्रेरणारूप प्रवृत्ति न होय, तो कर्मने कोण ग्रहण करे ? जडनो स्वभाव प्रेरणा नथी, जड अने चेतन बेयना धर्म विचारी जुओ

७५. आत्मा जो कर्म करतो नथी, तो ते थता नथी;

तेथी सहज स्वभावे एटले अनायासे ते थाय एम कहेवु घटतु नथी, तेमज ते जीवनो धर्म पण नही केमके स्वभावनो नाश थाय नही, अने आत्मा न करे तो कर्म थाय नही एटले ए भाव टळी शके छे, माटे ते आत्मानो स्वाभाविक धर्म नहा

७६ केवळ जो असग होत अर्थात क्यारे पण तेने कर्मनु करवापणु न होत तो तने पोताने ते आत्मा प्रथमथी केम न भासत ? परमार्थथी त आत्मा असग छे, पण ते तो ज्यारे स्वरूपनु भान थाय त्यारे थाय

७७ जगतनो अथवा जीवाना कर्मनो ईश्वर कर्ता कोई छे नही, शुद्ध आत्मस्वभाव जेनो थयो छे ते ईश्वर छे, अने तने जो प्रेरक एटले कर्मकर्त्ता गणीए तो तेने दोषनो प्रभाव थयो गणावो जोईए, माटे ईश्वरनी प्रेरणा जीवना कर्म करवामा पण कहेवाय नही

७८ आत्मा जो पोताना शुद्ध चैतन्यादि स्वभावमा वर्ते छो त पाताना त ज स्वभावनो कर्त्ता छे, अर्थात् ते ज स्वरूपमा परिणमित छे, अने ते शुद्ध चैतन्यादि स्वभावना भानमां वर्ततो न होय त्यारे कर्मभावनो कर्त्ता छे

७९ जीवने कर्मनो कर्त्ता कहीए तोपण ते कर्मनो भोक्ता जीव नहीं ठरे, केमके जड एवां कर्म शुं समजे के ते फळ देवामा परिणामी थाय ? अर्थात् फळदाता थाय ?

८० फळदाता ईश्वर गणीए तो भोक्तापणुं साधी शकीए, अर्थात् जीवने ईश्वर कर्म भोगवावे तेथी जीव कर्मनो भोक्ता सिद्ध थाय, पण परने फळ देवा आदि प्रवृत्तिवाळो ईश्वर गणीए तो तेनुं ईश्वरपणुं ज रहेतुं नथी, एम पण पाछो विरोध आवे छे

८१ तेवो फळदाता ईश्वर सिद्ध थतो नथी एटले जगतनो नियम पण कोई रहे नही, अने शुभाशुभ कर्म भोगववाना कोई स्थानक पण ठरे नही, एटले जीवने कर्मनु भोक्तृत्व क्यां रह्यु ?

८२ भावकर्म जीवने पोतानी भ्रांति छे, माटे चेतनरूप छे, अने ते भ्रांतिने अनुयायी थई जीववीर्य स्फुरायमान थाय छे, तेथी जड एवां द्रव्यकर्मनी वर्गणा ते ग्रहण करे छे

८३ झेर अने अमृत पोते जाणता नथी के अमारे आ जीवने फळ आपवु छे, तोपण जे जीव खाय छे, तेने ते

फळ थाय छे, एम शुभाशुभ कर्म, आ जीवने आ फळ आपवुं छे एम जाणता नथी, तोपण ग्रहण करनार जीव झेर अमृतना परिणामनी रीते फळ पामे छे

८४ एक रांक छे अने एक राजा छे, ए आदि शब्दथी नीचपणुं ऊंचपणुं, कुरूपपणुं, सुरूपपणुं एम घणुं विचित्रपणुं छे, अने एवो जे भेद रहे छे ते, सर्व समानता नथी, ते ज शुभाशुभ कर्मनुं भोक्तापणुं छे एम सिद्ध करे छे केमके कारण विना कार्यनी उत्पत्ति थती नथी

८५ फळदाता ईश्वरनी एमां कंई जरूर नथी झेर अने अमृतनी रीते शुभाशुभ कर्म स्वभावे परिणमे छे, अने निःसत्त्व थयेथी झेर अने अमृत फळ देता जेम निवृत्त थाय छे, तेम शुभाशुभ कर्मने भोगववाथी ते निःसत्त्व थये निवृत्त थाय छे

८६ उत्कृष्ट शुभ अध्यवसाय ते उत्कृष्ट शुभगति छे, अने उत्कृष्ट अशुभ अध्यवसाय ते उत्कृष्ट अशुभगति छे, शुभाशुभ अध्यवसाय मिश्रगति छे अने ते जीवपरिणाम ते ज मुख्यपणे तो गति छे तथापि उत्कृष्ट शुभ द्रव्यनुं ऊर्ध्वगमन, उत्कृष्ट अशुभ द्रव्यनुं अधोगमन, शुभाशुभनी

मध्यस्थिति, एम द्रव्यनो विशेष स्वभाव छे. अने ते आदि हेतुथी ते ते भोग्यस्थानक होवा योग्य छे हे शिष्य ! जड चेतनना स्वभाव सयोगादि सूक्ष्मस्वरूपनो अत्रे घणो विचार समाय छे, माटे आ वात गहन छे, तोपण तेने साव संक्षेपमा कही छे

८७ कर्त्ता भोक्ता जीव हो, पण तेथी तेनो मोक्ष थवा योग्य नथी, केमके अनत काळ थयो तोपण कर्म करवारूपी दोष हजु तेने विषे वर्तमान ज छे

८८. शुभ कर्म करे तो तेथी देवादि गतिमा तेनुं शुभ फळ भोगवे, अने अशुभ कर्म करे तो नरकादि गतिने विषे तेनु अशुभ फळ भोगवे, पण जीव कर्मरहित कोई स्थळे होय नही

८९. जेम शुभाशुभ कर्मपद ते जीवना करवाथी तें थता जाण्या, अने तेथी तेनु भोक्तापणु जाण्यु, तेम नही करवाथी अथवा ते कर्मनिवृत्ति करवाथी ते निवृत्ति पण थवा योग्य छे, माटे ते निवृत्तिनु पण सफळपणु छे, अर्थात् जेम ते शुभाशुभ कर्म अफळ जता नथी, तेम तेनी निवृत्ति पण अफळ जवा योग्य नथी, माटे ते निवृत्तिरूप मोक्ष छे एम हे विचक्षण ! तु विचार.

९० कमसहित अनन्तकाळ वीत्यो, ते ते शुभाशुभ कर्म प्रत्येना जीवना आसक्तिने लीधे वीत्यो, पण तेना पर उदासीन थवाथी ते कर्मफळ छेदाय, अने तेथी मोक्षस्वभाव प्रगट थाय

९१ देहादि संयोगनो अनुक्रमे वियोग तो थया करे छे पण ते पाछो ग्रहण न थाय ते रीते वियोग करवामा आवे तो सिद्धस्वरूप मोक्षस्वभाव प्रगटे, अने शाश्वत पद अनंत आत्मानंद भोगवाय

९२ मोक्षपद कदापि होय तोपण ते प्राप्त थवानो कोई अविरोध एटले यथातथ्य प्रतीत थाय एवो उपाय जणातो नथी, केमके अनंत काळना कर्मो छे, ते आवा अल्पायुष्यवाळा मनुष्यदेहथी केम छेद्या जाय ?

९३ अथवा कदापि मनुष्यदेहना अल्पायुष्य वगेरेनी शंका छोडी दईए, तोपण मत अने दर्शन घणां छे, अने ते मोक्षना अनेक उपायो कहे छे, अर्थात् कोई कंई कहे छे अने कोई कंई कहे छे, तेमां कयो मत साचो ए विवेक बनी शके एवो नथी

१४. ब्राह्मणादि कई जातिमां मोक्ष छे, अथवा क्या वेषमा मोक्ष छे, एनो निश्चय पण न बनी शके एवो छे, केमके तेवा घणा भेदो छे, अने ए दोषे पण मोक्षनो उपाय प्राप्त थवा योग्य देखातो नथी

१५ तेथी एम जणाय छे के मोक्षनो उपाय प्राप्त थई शके एवु नथी, माटे जीवादिनु स्वरूप जाणवाथी पण शु उपकार थाय ? अर्थात् जे पदने अर्थे जाणवा जोईए ते पदनो उपाय प्राप्त थवो अशक्य देखाय छे.

१६. आपे पाचे उत्तर कह्या तेथी सर्वांग एटले बधी रीते मारी शकानुं समाधान थयु छे, पण जो मोक्षनो उपाय समजु तो सद्भाग्यनो उदय-उदय थाय। अत्रे 'उदय' 'उदय' बे वार शब्द छे, ते पाच उत्तरना समाधानथी थयेली मोक्षपदनी जिज्ञासानु तीव्रपणुं दर्शावे छे

१७. पाचे उत्तरनी तारा आत्माने विषे प्रतीति थई छे, तो मोक्षना उपायनी पण ए ज रीते तने सहजमा प्रतीति थशे अत्रे 'थशे' अने 'सहज' ए बे शब्द सद्गुरुए कह्या छे ते जेने पाचे पदनी शका निवृत्त थई छे तेने मोक्षोपाय समजावो कई कठण ज नथी एम दर्शाववा, तथा शिष्यनु

विशेष जिज्ञासुए जाणी अवश्य तने मोक्षोपाय परिणमशे एम ज्ञानवाणी (ते वचन) कह्यां छे, एम सद्गुरुनां वचननो आशय छे

९८ कर्मभाव छे ते जीवनुं अज्ञान छे अने मोक्षभाव छे ते जीवना पोताना स्वरूपने विषे स्थिति थवी ते छे अज्ञाननो स्वभाव अंधकार जेवो छे तेथी जेम प्रकाश थतां घणा काळनो अंधकार नाश पामे छे तेम ज्ञानप्रकाश थतां अज्ञान पण नाश पामे छे

९९ जे जे कारणो कर्मबंधनां छे, ते ते कर्मबंधनो मार्ग छे, अने ते ते कारणोने छेदे एवी जे दशा छे ते मोक्षनो मार्ग छे भवनो अंत छे

१०० राग, द्वेष अने अज्ञान एनुं एकत्व ए कर्मनी मुख्य गांठ छे अर्थात् ए विना कर्मनो बंध न थाय तेनी जेथी निवृत्ति थाय ते ज मोक्षनो मार्ग छे

१०१ 'सत्' एटले 'अविनाशी', अने 'चैतन्यमय' एटले 'सर्व भावने प्रकाशवारूप स्वभावमय' अन्य सर्व विभाव अने देहादि संयोगना आभासथी रहित एवो',

'केवळ' एटले 'शुद्ध आत्मा' पामीए तेम प्रवर्ताय ते मोक्षमार्ग छे

१०२ कर्म अनत प्रकारना छे, पण तेना मुख्य ज्ञानावरणादि आठ प्रकार थाय छे तेमा पण मुख्य मोहनीयकर्म छे ते मोहनीयकर्म हणाय तेनो पाठ कहुं छु

१०३. ते मोहनीयकर्म बे भेदे छे — एक 'दर्शनमोहनीय' एटले 'परमार्थने विषे अपरमार्थबुद्धि अने अपरमार्थने विषे परमार्थबुद्धिरूप'; बीजी 'चारित्रमोहनीय', 'तथारूप परमार्थने परमार्थ जाणीने आत्मस्वभावमा जे स्थिरता थाय, ते स्थिरताने रोधक एवा पूर्वसस्काररूप कषाय अने नोकषाय' ते चारित्रमोहनीय

दर्शनमोहनीयने आत्मबोध, अने चारित्रमोहनीयने वीतरागपणु नाश करे छे आम तेना अचूक उपाय छे केमके मिथ्याबोध ते दर्शनमोहनीय छे, तेनो प्रतिपक्ष सत्यात्मबोध छे अने चारित्रमोहनीय रागादिक परिणामरूप छे, तेनो प्रतिपक्ष वीतरागभाव छे एटले अधकार जेम प्रकाश थवाथी नाश पामे छे—ते तेनो अचूक उपाय छे,—तेम बोध अने वीतरागता दर्शनमोहनीय अने

चारित्रमोहनीयरूप अधकार टाळवामा प्रकाशस्वरूप छे, माटे ते तेना अचूक उपाय छे

१०४ क्रोधादि भावयो कमवध थाय छ, अने क्षमा दिक भावथी त हणाय छ, अर्थात क्षमा राखवाथी क्रोध रोकी शकाय छ, सरळताथी माया रोका शकाय छे, सतोपथी लोभ रोकी शकाय छ, एम रति, अरति आदिना प्रतिपक्षथी त त दोषो रोकी शकाय छे, त ज कमबधनो निरोध छ अने ते ज तेनी निवत्ति छे वळी सवने आ वातना प्रत्यक्ष अनुभव छे, अथवा सवने प्रत्यक्ष अनुभव थई शके एवु छ क्रोधादि रोक्या रोकाय छे अने जे कर्मबधन रोके छे, त अकर्मदशानो माग छे ए माग परलोक नही, पण अहीं अनुभवमा आव छ, तो एमा सदेह शो करवो ?

१०५ आ मारो मत छ, माटे मार वळगी ज रहेवु' अथवा आ मारु दशन छे, माटे गमे तेम मारे ते सिद्ध करवु एवो आग्रह अथवा एवा विकल्पन छाडाने आ जे मार्ग कह्यो छे, त साधने, तना अल्प जन्म जाणवा

अहो 'जन्म' शब्द बहुवचनमा वापर्यो छ, ते एटलु ज

दर्शाववाने के क्वचित् ते साधन अधूरा रह्यां तेथी, अथवा जघन्य के मध्यम परिणामनी धाराथी आराधन थया होय, तेथी सर्व कर्म क्षय थई न शकवाथी बीजो जन्म थवानो संभव छे; पण ते बहु नही; बहु ज अल्प. 'समकित आव्या पछी जो वमे नही, तो घणामा घणा पंदर भव थाय,' एम जिने कह्यु छे, अने 'जे उत्कृष्टपणे आराधे तेनो ते भवे पण मोक्ष थाय'; अत्रे ते वातनो विरोध नथी

१०६ हे शिष्य ! तें छ पदना छ प्रश्नो विचार करीने पूछया छे, अने ते पदनी सर्वांगतामा मोक्षमार्ग छे, एम निश्चय कर अर्थात् एमानु कोई पण पद एकाते के अविचारथी उत्थापता मोक्षमार्ग सिद्ध थतो नथी

१०७ जे मोक्षनो मार्ग कह्यो ते होय तो गमे ते जाति के वेषथी मोक्ष थाय, एमा कई भेद नथी. जे साधे ते मुक्तिपद पामे, अने ते मोक्षमा पण बीजा कशा प्रकारनो ऊंचनीचत्वादि भेद नथी, अथवा आ वचन कह्या तेमा बीजो कई भेद एटले फेर नथी

१०८. क्रोधादि कषाय जेना पातळा पड्या छे, मात्र आत्माने विषे मोक्ष थवा सिवाय बीजी कोई इच्छा

नथी, अने ससारना भोग प्रत्ये उदासीनता वर्ते छे, तेम ज प्राणी पर अतरथी दया वर्ते छे, ते जीवने मोक्ष मार्गनो जिज्ञासु कहीए अर्थात ते मार्ग पामवा योग्य कहीए

१०९ ते जिज्ञासु जीवने जो सद्गुरुनो उपदेश प्राप्त थाय तो ते समकित पामे, अने अतरनी शोधमा वर्ते

११० मत अने दर्शननो आग्रह छोडी दई जे सद्गुरु न लक्षे वर्ते, ते शुद्ध समकितने पामे के जेमा भेद तथा पक्ष नथी

१११ आत्मस्वभावनो ज्या अनुभव लक्ष अने प्रतीत वर्ते छे तथा वृत्ति आत्माना स्वभावमा वहे छे, त्या परमार्थे समकित छे

११२ ते समकित वधती जती धाराथी हास्य शोकादि थी जे कई आत्माने विषे मिथ्याभास भास्या छे तेने टाळे, अने स्वभाव समाधिरूप चारित्रनो उदय थाय, जेथी सर्व रागद्वेषना क्षयरूप वीतरागपदमा स्थिति थाय

११३ सर्व आभासरहित आत्मस्वभावनु ज्या अखड पटले क्यारे पण खडित न थाय, मद न थाय, नाश न

पामे एवु ज्ञान वर्ते तेने केवळज्ञान कहीए छीए जे केवळ-ज्ञान पाम्याथी उत्कृष्ट जीवन्मुक्तदशारूप निर्वाण, देह छता ज अत्रे अनुभवाय छे

११४. करोडो वर्षनुं स्वप्न होय तो पण जाग्रत थता तरत शमाय छे, तेम अनादिनो विभाव छे ते आत्मज्ञान थता दूर थाय छे

११५ हे शिष्य ! देहमा जे आत्मता मनाई छे, अने तेने लीधे स्त्री पुत्रादि सर्वमा अहममत्वपणु वर्ते छे, ते आत्मता जो आत्मामा ज मनाय, अने ते देहाध्यास एटले देहमा आत्मबुद्धि तथा आत्मामा देहबुद्धि छे ते छूटे, तो तुं कर्मनो कर्त्ता पण नथी, अने भोक्ता पण नथी; अने ए ज धर्मनो मर्म छे.

११६. ए ज धर्मथी मोक्ष छे, अने तु ज मोक्षस्वरूप छो; अर्थात् शुद्ध आत्मपद ए ज मोक्ष छे तुं अनंत ज्ञान दर्शन तथा अव्याबाध सुखस्वरूप छो.

११७. तुं देहादिक सर्व पदार्थथी जुदो छे कोईमा आत्मद्रव्य भळतु नथी, कोई तेमा भळतुं नथी, द्रव्ये द्रव्य परमार्थथी सदाय भिन्न छे, माटे तुं शुद्ध छो, बोधस्वरूप

छो, शुद्धचैतन्यात्मक छो, स्वयंज्योति एटले कोई पण तने प्रकाशतुं नथी, स्वभाव ज तुं प्रकाशस्वरूप छो, अने अव्याबाध सुखनुं धाम छो. बीजुं केटलुं कहीए? अथवा घणुं शुं कहेवुं? टूंकामां एटलुं ज कहीए छीए जो विचार करशो तो ते पदने पामशो.

११८ सर्व ज्ञानीओनो निश्चय अत्र आवीने समाय छे, एम कहीने सद्गुरु मौनता धरीने सहजसमाधिमां स्थित थया, अर्थात् वाणीयोगनी अप्रवृत्ति करी.

११९ शिष्यने सद्गुरुना उपदेशथी अपूर्व एटले पूर्वे कोई दिवस नहीं आवेलुं एवुं भान आव्युं, अने तेने पोतानुं स्वरूप पोताने विषे यथातथ्य भास्युं, अने देहात्मबुद्धिरूप अज्ञान दूर थयुं.

१२० पोतानुं स्वरूप शुद्ध चैतन्यस्वरूप, अजर अमर अविनाशी अने देहथी स्पष्ट जुदुं भास्युं.

१२१ ज्यां विभाव एटले मिथ्यात्व वर्ते छे त्यां मुख्य नयथी कर्मनुं कर्तापणुं अने भोक्तापणुं छे, आत्मस्वभावमां वृत्ति वही तेथी अकर्ता थयो.

१२२. अथवा आत्मपरिणाम जे शुद्ध चैतन्यस्वरूप छे, तेनो निर्विकल्पस्वरूपे कर्ताभोक्ता थयो.

१२३ आत्मानु शुद्ध पद छे ते मोक्ष छे, अने जेथी ते पमाय ते तेनो मार्ग छे, श्री सद्गुरुए कृपा करीने निर्ग्रंथनो सर्व मार्ग समजाव्यो

१२४ अहो ! अहो ! करुणाना अपार समुद्रस्वरूप आत्मलक्ष्मीए युक्त सद्गुरु, आप प्रभुए आ पामर जीव पर आश्चर्यकारक एवो उपकार कर्यो

१२५ हुं प्रभुना चरण आगळ शुं धरुं ? (सद्गुरु तो परम निष्काम छे, एक निष्काम करुणाथी मात्र उपदेशना दाता छे, पण शिष्यधर्मे शिष्ये आ वचन कह्युं छे) जे जे जगतमा पदार्थ छे, ते सौ आत्मानी अपेक्षाए निर्मूल्य जेवा छे, ते आत्मा तो जेणे आप्यो तेना चरण समीपे हु बीजुं शुं धरु ? एक प्रभुना चरणने आधीन वर्तु एटलु मात्र उपचारथी करवाने हु समर्थ छु.

१२६ आ देह, 'आदि' शब्दथी जे कई मारु गणाय छे ते, आजथी करीने सद्गुरु प्रभुने आधीन वर्तो, हुं तेह प्रभुनो दास छुं, दास छुं, दीन दास छुं

૧૨૭ છયે સ્થાનક સમજાવીને હે સદ્ગુરુ દેવ ! આપે દેહાદિથી આત્માને જેમ મ્યાનથી તરવાર જુદી કાઢીને બતાવીએ તેમ સ્પષ્ટ જુદો બતાવ્યો, આપે મપાઈ શકે નહીં એવો ઉપકાર કર્યો !

૧૨૮ છયે દર્શન આ છ સ્થાનકમાં સમાય છે વિશેષ કરીને વિચારવાથી કોઈ પણ પ્રકારનો સંશય રહે નહીં

૧૨૯ આત્માને પોતાના સ્વરૂપનું ભાન નહીં એવો મોટો કોઈ રોગ નથી સદ્ગુરુ જેવા સાચા કોઈ સાચા અથવા નિપુણ વૈદ્ય નથી, સદ્ગુરુઆજ્ઞાએ ચાલવા સમાન કોઈ પથ્ય નથી, અને વિચાર તથા નિદિધ્યાસન જેવું કોઈ તેનું ઔષધ નથી

૧૩૦ જો પરમાર્થની ઇચ્છા હો, તો સાચો પુરુષાર્થ કરો અને ભવસ્થિતિ આદિનું નામ લઈને આત્માર્થને છેદો નહીં

૧૩૧ આત્મા અબંધ છે અસંગ છે સિદ્ધ છે એવી નિશ્ચયમુખ્ય વાણી સાંભળીને સાધન તજવાં યોગ્ય નથી

पण तयारूप निश्चय लक्षमा राखी साघन करीने ते निश्चयस्वरूप प्राप्त करवु

१३२ अत्रे एकाते निश्चयनय कह्यो नथी, अथवा एकाते व्यवहारनय कह्यो नथी, वेय ज्या ज्या जेम घटे तेम साथे रह्या छे.

१३३ गच्छ मतनी कल्पना छे ते सद्व्यवहार नथी, पण आत्मार्थीना लक्षणमा कही ते दशा अने मोक्षोपायमा जिज्ञासुना लक्षण आदि कह्या ते सद्व्यवहार छे, जे अत्रे तो सक्षेपमा कहेल छे पोताना स्वरूपनु भान नथी, अर्थात् जेम देह अनुभवमा आवे छे, तेवो आत्मानो अनुभव थयो नथी, देहाध्यास वर्ते छे, अने जे वैराग्यादि साघन पाम्या विना निश्चय पोकार्या करे छे, ते निश्चय सारभूत नथी.

१३४. भूतकाळमा जे ज्ञानीपुरुषो थई गया छे, वर्तमानकाळमा जे छे, अने भविष्यकाळमा थशे, तेने कोईने मार्गनो भेद नथी, अर्थात् परमार्थे ते सौनो एक मार्ग छे, अने तेने प्राप्त करवा योग्य व्यवहार पण ते ज परमार्थसाघकरूपे देशकाळादिने लीघे भेद कह्यो होय छता एक फळ उत्पन्न करनार होवाथी तेमा पण परमार्थे भेद नथी.

१३५ सव जीवने विषे सिद्ध समान सत्ता छे, पण ते तो ज समजे तेने प्रगट थाय ते प्रगट थवामा सद्गुरुनी आज्ञाथी प्रवतवु तथा सद्गुरुए उपदेशेलो एवी जिनदशानो विचार करवो, ते वेय निमित्त कारण छ

१३६ सद्गुरुआज्ञा आदि ते आत्मसाधनना निमित्त कारण छे, अने आत्माना ज्ञान दर्शनादि उपादान कारण छे एम शास्त्रमा कह्यु छ, तेथी उपादाननु नाम लई जे कोई ते निमित्तने तजशे ते सिद्धपणाने नही पामे, अने भ्रातिमा वर्त्या करशे केमके साचा निमित्तना निषेधार्थे ते उपादाननी व्याख्या शास्त्रमा कही नथी, पण उपादान अजागृत राखवाथी तारु साचा निमित्त मळ्या छता काम नही थाय, माटे साचा निमित्त मळये ते निमित्तने अव लबीने उपादान सन्मुख करवु अने पुरुषार्थरहित न थवु, एवो शास्त्रकार कहेली ते व्याख्यानो परमार्थ छे

१३७ मुखथी निश्चयमुख्य वचनो कहे छे, पण अतरथी पोताने ज मोह छूटयो नथी, एवा पामर प्राणी मात्र ज्ञानी कहेवरावबानी कामनाए साचा ज्ञानी पुरुषनो द्रोह करे छे

१३८ दया, शांति, समता, क्षमा, सत्य, त्याग अने वैराग्य ए गुणो मुमुक्षुना घटमां सदाय सुजाग्य एटले जागृत होय, अर्थात् ए गुणो विना मुमुक्षुपणुं पण न होय

१३९ मोहभावनो ज्यां क्षय थयो होय, अथवा ज्यां मोहदशा बहु क्षीण थई होय, त्यां ज्ञानीनी दशा कहीए, अने बाकी तो जेणे पोताना ज्ञान मानी लीधुं छे, तेने भ्रांति कहीए.

१४०. समस्त जगत जेणे एंठ जेवुं जाण्युं छे, अथवा स्वप्न जेवुं जगत जेने ज्ञानमां वर्ते छे ते ज्ञानीनी दशा छे, बाकी मात्र वाचाज्ञान एटले कहेवा मात्र ज्ञान छे

१४१. पांचे स्थानकने विचारीने जे छट्ठे स्थानके वर्ते, एटले ते मोक्षना जे उपाय कह्या छे तेमां प्रवर्ते, ते पांचमुं स्थानक एटले मोक्षपद, तेने पामे

१४२ पूर्वप्रारब्धयोगथी जेने देह वर्ते छे, पण ते देहथी अतीत एटले देहादिनी कल्पनारहित, आत्मामय जेनी दशा वर्ते छे, ते ज्ञानीपुरुषना चरणकमळमां अगणित वार वंदन हो !

श्री सद्गुरुचरणार्पणमस्तु

---

(५०)

मोहमयीथी जेनी अमोहपणे स्थिति छे, एवा श्री ना यथा०

'मनने लईने आ बधु छे एवा जे अत्यार सुधीनो थयेलो निणय लख्यो, ते सामाय प्रकारे तो यथातथ्य छे तथापि 'मन , 'तेने लईने' अने 'आ बधु', अने तेनो निर्णय' एवा जे चार भाग ए वाक्यना थाय छे, ते घणा काळना बोधे जेम छे तम समजाय एम जाणीए छीए जेने ते समजाय छे, तेने मन वश वर्ते छे, वर्ते छ, ए वात निश्चयरूप छे, तथापि म वततु होय तोपण ते आत्म स्वरूपने विषे ज वर्ते छे ए मन वश थवानो उत्तर उपर लख्यो छे, ते सवथी मुख्य एवो लख्यो छे जे वाक्य लखवामा आव्या छे ते घणा प्रकारे विचारवाने योग्य छे

महात्मानो देह बे कारणने लईने विद्यमानपणे वर्ते छे प्रार ध कम भोगववाने अर्थे जीवोना कल्याणने अर्थे, तथापि ए बनेमा ते उदासपणे उदय आवेली वतनाए वर्ते छे, एम जाणीए छीए

ध्यान, जप, तप, क्रिया मात्र ए सर्व थकी, अमे जणावेलु कोई वाक्य जो परम फळनु कारण धारता हो तो, निश्चयपणे धारता हो तो, पाछळथी वुद्धि लोकसज्ञा, शास्त्रसंज्ञा पर न जती होय तो, जाय तो ते भ्रातिवडे गई छे एम धारता हो ता, ते वाक्यने घणा प्रकारनी धीरजवडे विचारवा धारता हो तो, लखवाने इच्छा थाय छे हजी आथी विशेषपणे निश्चयने विषे धारणा करवाने लखवु अगत्य जेवु लागे छे, तथापि चित्त अवकाशरूपे वर्तंतु नथी, एटले जे लख्यु छे ते प्रबळपणे मानशो

सर्व प्रकारे उपाधियोग तो निवृत्त करवा योग्य छे, तथापि जो ते उपाधियोग सत्सगादिकने अर्थे ज इच्छवामा आवतो होय, तेम ज पाछी चित्तस्थिति सभवपणे रहेती होय तो ते उपाधियोगमा प्रवर्तवुं श्रेयस्कर छे.

मुवई, वैशाख वद १४, बुध, १९४८

---

(५१)

चित्तमा तमे परमार्थनी इच्छा राखो छो एम छे, तथापि ते परमार्थनी प्राप्तिने अत्यतपणे बाध करवावाळा एवा जे

दोष ते प्रत्ये अज्ञान, क्रोध, मानादिना कारणथी उदास थइ शकता नथी अथवा तेनी अमुक मळगणामा रुचि रहे छे ते परमार्थने बाध करवाना कारण जाणी अवश्य सपना विपनी पठे त्यागवा योग्य छे पोईनो दोष जोवो घटतो नथी सव प्रकारे जीवना दोषनो ज विचार करवो घटे छे, एवी भावना अत्यतपणे दढ करवा योग्य छे जगतदृष्टिए कल्याण असभवित जाणी आ कहेली वात ध्यानमा लेवा जोग छे ए विचार राखवो

मुबई, चैत्र वद ७, १९४९

---

(५२)

श्री सद्गुरुदेवना अनुग्रहथी अत्र समाधि छे

एकातमा अवगाहवाने अर्थे 'आत्मसिद्धि' आ जोडे मोकल्यु छे ते हाल श्री लल्लुजीए अवगाहवा योग्य छे

जिनागम विचारवानी श्री लल्लुजी अथवा श्री देव करणजीने इच्छा होय तो 'आचाराग', 'सूयगडाग', 'दशवकालिक', 'उत्तराध्ययन' अने 'प्रश्नव्याकरण'

विचारवा योग्य छे

'आत्मसिद्धिशास्त्र' श्री देवकरणजीए आगळ पर अवगाहवु वधारे हितकारी जाणी हाल श्री लल्लुजीने मात्र अवगाहवानु लख्यु छे; तो पण जो श्री देवकरणजीनी विशेष आकांक्षा हाल रहे तो प्रत्यक्ष सत्पुरुष जेवो मारा प्रत्ये कोईए परमोपकार कर्यो नथी एवो अखंड निश्चय आत्मामा लावी, अने आ देहना भविष्य जीवनमा पण ते अखंड निश्चय छोडु तो मे आत्मार्थ ज त्याग्यो अने खरा उपकारीना उपकारने ओळववानो दोष कर्यो एम ज जाणीश, अने आत्माने सत्पुरुषनो नित्य आज्ञांकित रहेवामा ज कल्याण छे एवो, भिन्नभाव रहित, लोक संबंधी बीजा प्रकारनी सर्व कल्पना छोडीने, निश्चय वर्तावीने, श्री लल्लुजी मुनिना सहचारीपणामा ए ग्रन्थ अवगाहवामा हाल पण अडचण नथी घणी शंकाओनु समाधान थवा योग्य छे

सत्पुरुषनी आज्ञामा वर्तवानो जेनो दृढ निश्चय वर्ते छे अने जे ते निश्चयने आराधे छे, तेने ज ज्ञान सम्यक्‌परिणामी थाय छे, ए वात आत्मार्थी जीवे अवश्य

लक्ष्मा राखवा योग्य छ अमे जे आ वचन लख्या छे, तेना सर्वे ज्ञानीपुरुषो साक्षी छे

बीजा मुनिओने पण जे जे प्रकारे वैराग्य, उपशम अने विवेकनी वृद्धि थाय ते ते प्रकारे श्री लल्लुजी तथा श्री देवकरणजीए यथाशक्ति समळाववु तथा प्रवर्ताववु घट छ, तेमज अन्य जीवो पण आत्मार्थसन्मुख थाय अने ज्ञानीपुरुषनी आज्ञाना निश्चयने पामे तथा विरक्त परिणामने पामे, रसादिनी लुब्धता मोळी पाडे ए आदि प्रकार एक आत्मार्थे उपदेश कर्तव्य छे

अनंतवार देहने अर्थे आत्मा गाळ्यो छ जे देह आत्माने अर्थे गळाशे ते देहे आत्मविचार जन्म पामवा योग्य जाणी, सर्व देहार्थनी कल्पना छाडी दइ, एक मात्र आत्मार्थमा ज तेनो उपयोग करवो, एवो मुमुक्षु जीवने अवश्य निश्चय जोईए

श्री सहजात्मस्वरूप

नडियाद, आसो वद १०, शनि, १९५२

(५३)

क्षमापना

हे भगवान ! हु वहु भूली गयो, मे तमारा अमूल्य वचनने लक्षमा लीधा नही तमारा कहेला अनुपम तत्त्वनो मे विचार कर्यो नही तमारा प्रणीत करेला उत्तम शीलने सेव्यु नही तमारा कहेला दया, शाति, क्षमा अने पवित्रता मे ओळख्या नही हे भगवन् ! हु भूल्यो, आथड्यो, रझळयो अने अनत ससारनी विटम्बनामा पड्यो छुं हु पापी छु हुं वहु मदोन्मत्त अने कर्मरजथी करीने मलिन छु. हे परमात्मा ! तमारा कहेला तत्त्व विना मारो मोक्ष नथी. हुं निरतर प्रपचमां पड्यो छु अज्ञानथी अघ थयो छुं, मारामा विवेकशक्ति नथी अने हु मूढ छु, हु निराश्रित छुं, अनाथ छु. नीरागी परमात्मा ! हु हवे तमारुं, तमारा धर्मनुं अने तमारा मुनिनु शरण ग्रहु छु मारा अपराध क्षय थई हु ते सर्व पापथी मुक्त थउं ए मारी अभिलाषा छे आगळ करेला पापोनो हु हवे पश्चात्ताप करु छु. जेम जेम हुं सूक्ष्म विचारथी ऊडो ऊतरुं छुं तेम तेम तमारा तत्त्वना चमत्कारो मारा स्वरूपनो प्रकाश करे छे. तमे नीरागी,

निर्विकारी, सच्चिदानदस्वरूप, सहजानदी, अनतज्ञानी, अनतदर्शी अने त्रैलोक्यप्रकाशक छो हु मात्र मारा हितने अर्थे तमारी साक्षीए क्षमा चाहु छु एक पळ पण तमारा कहेला तत्त्वनी शका न थाय, तमारा कहेला रस्तामा अहोरात्र हु रहु ए ज मारी आकाक्षा अने वृत्ति थाओ ! हे सर्वज्ञ भगवान ! तमने हु विशेष शु कहु ? तमाराथी कई अजाण्यु नथी मात्र पश्चात्तापथी हु कर्मजन्य पापनी क्षमा इच्छु छु

ॐ शाति शाति शाति

